लाजार लागिन

समकालीन सोवियत कथाकारों में जो महत्त्वपूर्ण नाम पाँचवें दशक में उभर-कर सामने आये, लाजार लागिन उन्हीं में से एक हैं। उन्होंने वैज्ञानिक और तकनीकी उपलब्धियों को अपनी रचनाओं का विषय बनाते हुए जो लिखा, वह न सिर्फ विषयवस्तु, बल्कि भाषा-शैली के नाते भी बेहद नया है। अपनी रचनाओं के माध्यम से वे व्यक्ति और समाज के मानसिक अहंकार को रोचक ढंग से तोड़ते हैं। लाजार की, इसी विशेषता ने उन्हें विश्व की विभिन्न भाषाओं तक पहुँचाया। हिन्दी में इस कृति का यह अनुवाद कमलेश्वर ने किया है। कमलेश्वर नयी कहानी के प्रतिष्ठापकों में से हैं। निश्चय ही यह अनुवादकीय रिश्ता इस उपन्यास के लेखक की विशिष्टता को रेखांकित करता है और इस कृति की प्रामाणिकता तथा साहित्यिक महत्त्व को भी बढ़ा देता है।

आवरणचित्र

शोभा बस्टा की चित्रकृति। दिल्ली में रहती हैं। सुपरिचित चित्रकार रामेश्वर बस्टा से विवाहित। दिल्ली के त्रिवेणी कला संगम में कई प्रदर्शनियाँ आयोजित हुई हैं। अन्य नगरों में भी काम दिखाया गया है। कई समूह प्रदर्शनियों में भागीदारी।

संवेदनशील कलाकार। अमूर्त रूपाकारों में काम करती हैं। रूपाकारों के आवर्तन में लिपटे रंग, मानो एक-एक कर कई मन स्थितियों को प्रकट करते हैं। काम में आत्मीयता और सहजता।

न बहुत प्रगाढ़, न बहुत मद्धिम आभाओंवाले उनके रंग, अपना ही एक वातावरण बनाते हैं। इस 'वातावरण' में एक आन्तरिक संवेदना व्याप्त रहती है। रूपाकारों को किन्हीं वस्तु-रूपों से तो आसानी से जोड़कर नहीं देख सकते लेकिन ऐसा लगता है जैसे धूप के टुकड़ों, छायाओं, घरों के कोनों-अन्तरों से इनका एक सम्बन्ध हो।

लाज़ार लागिन

बीसवीं सदी का जिन्न

अनुवाद
कमलेश्वर

बीसवीं सदी का जिन्न

एक अनोखी सुबह

सुबह सात बजकर बत्तीस मिनट पर, धूप का एक गोला पर्दे के छेद से निकला और वोल्का की नाक पर बैठ गया। उसे बड़ी ज़ोर से छींक आयी और वह जाग गया।

तभी पासवाले कमरे में उसने माँ को कहते हुए सुना, 'अरे अल्योशा, जल्दी क्यों कर रहे हो, बच्चे को कुछ देर और सो लेने दो। आज ही उसका इम्तहान है।'

वोल्का कुढ़ गया, वह छठे दर्जे में आ गया है लेकिन पता नहीं कब माँ उसे बच्चा कहना बन्द करेंगी ?

तभी उसने सुना, बाबूजी माँ को जवाब दे रहे थे, 'हूँ, बेकार की बात है'''अरे, अब लड़का तेरह बरस का हुआ, उसे उठकर सामान-आमान बाँधने में मदद देनी चाहिए। मैं कहता हूँ कि तुम्हें पता भी नहीं चलेगा और देखते-देखते तुम्हारा यह बच्चा ही दाढ़ी-मूँछवाला हो जायेगा।'

'''और वोल्का को याद आया—सामान बाँधने की बात वह भला कैसे भूल सकता था !

वोल्का ने फौरन चादर एक तरफ फेंकी और कपड़े पहन लिये। आज का दिन ऐसा तो नहीं था जिसे वह भूल जाये !

बात असल में यह थी कि कोस्तिलकोव परिवार मकान बदल रहा था, यानी वोल्का अपने घरवालों के साथ एक नये मकान में जा रहा था। जिसमें वे जा रहे थे, वह मकान छह मंजिला था, उसी का एक हिस्सा उन्हें मिला था। बहुत सारा सामान पिछली रात ही बाँधा जा चुका था।

फिर काफी देर तक इस बात पर बहस होती रही कि आखिर सारा सामान कहाँ पर जमा किया जाये ताकि सुबह ट्रक आने पर चढ़ाने में आसानी हो ! सारा सामान बटोरा जा चुका था, इसलिए सबने उस मेज़ पर ही चाय पी जिस पर मेजपोश भी नहीं था। लगता ऐसा था कि वे सब किसी पैदल सफर पर निकले हों। खैर' 'फिर किसी तरह यह तय हुआ

कि अब दिमाग काम नहीं कर रहे हैं इसलिए रात-भर अच्छी तरह सो लिया जाये, ताकि सुबह सब ठीक-ठाक हो जाये। और यह तय करके सब सोने चले गये थे।

यह सब कहने का मतलब यही है कि इस हंगामे के बाद भला यह कैसे भूला जा सकता था कि सुबह मकान बदलना है।

सुबह का नाश्ता निपटने से पहले ही सामान उठानेवाले आ गये। आते ही उन्होंने दरवाजा फट्टे की तरह खोलकर ऊँची आवाज में पूछना शुरू किया, "हम काम शुरू करें ?"

"हाँ-हाँ, जरूर ?" माँ और दादी बोलीं और वे दोनों खुद भी हड़बड़ाकर इधर-उधर दौड़-भाग करने लगीं।

...वोल्का सोफे की गद्दियाँ उठाये हुए जीने से नीचे ट्रक के पास पहुँचा।

"तो तुम जा रहे हो ?" पड़ोस के दरवान लड़के ने पूछा।

"हाँ।" वोल्का ने इतनी आसानी से 'हाँ' कहा था जैसे वह हर हफ्ते ही मकान बदलने का आदी हो और उसके लिए यह कोई खास बात नहीं थी।

वह दरवान लड़का, स्टेपनिच, सिगरेट बनाता हुआ और पास आ गया और वे दोनों बड़ों की तरह आहिस्ता-आहिस्ता बात करने लगे। वोल्का का मन खुशी और गर्व से भर आया था। हिम्मत के साथ बड़ों की तरह उसने स्टेपनिच से कहा कि वह नये मकान में मिलने जरूर आये।

"भई जरूर आऊँगा!" उस साथी ने कहा। बड़े आदमियों की तरह गम्भीरता से अभी दोनों में बात शुरू ही हुई थी कि खिड़की से माँ की आवाज सुनायी पड़ी, "अरे वोल्का! वोल्का! उफ्, यह बच्चा कहाँ चला गया ?"

वोल्का दौड़कर खाली कमरे में पहुँचा। जैसे ही वह पहुँचा तो माँ बोलीं, "आ गये...अच्छा, तुम अपनी वह मछलियोंवाली पेटी उठाओ और सीधे ट्रक में पहुँचो। और देखो, सोफे पर बैठकर इस पेटी को अपनी गोद में रखना...इसके लिए और कोई जगह ही नहीं है...लेकिन खयाल रखना, न तो यह टूटने पाये, इतनी कीमती चीज है, और न इसका पानी सोफे पर गिरने पाये।"

सचमुच यह अजीब ही है कि घरवाले मकान बदलते समय इस तरह परेशान होते हैं!

हाँ, तो ठसाठस भरा हुआ ट्रक आखिर वोल्का के नये मकान के खूबसूरत दरवाजे पर रुका। सामान लादनेवालों ने ऊपर के हिस्से में जल्दी-जल्दी सामान पटका और चलते बने।

बाबूजी ने एकाध पेटी खोली और कहा, 'बाकी शाम को कर लेंगे!' और वे कारखाने चले गये।

माँ और दादी ने बर्तन वगैरह निकालना शुरू किया। तभी वोल्का को पासवाली नदी पर जाने की बात सूझी। बाबूजी ने उसे आगाह किया था कि वह नदी में तैरने के लिए अकेला न जाय, क्योंकि नदी बहुत गहरी है। लेकिन वोल्का ने फौरन एक वजह निकाल ली, 'नदी में डुबकी लगाकर दिमाग शान्त हो जायेगा, भला भन्नाते हुए दिमाग से इम्तहान कैसे दिया जा सकता है!'

जब भी उसे कोई काम करने से मना किया जाता था तो मजे की बात यह थी कि वोल्का उसे करने से पहले हमेशा कोई-न-कोई वजह ढूंढ लेता था!

सचमुच यह कितनी अच्छी बात है कि घर के पास ही नदी हो! वोल्का ने माँ से कहा कि वह नदी किनारे बैठकर भूगोल पढ़ेगा। और सचमुच उसका इरादा किताब के पन्ने उलट-पलटकर दस-पाँच मिनट पढ़ने का भी था। लेकिन जैसे ही वह नदी पर पहुँचा, कपड़े उतारकर पानी में कूद पड़ा। अभी सुबह ही थी, नदी पर कोई नहीं था। यह एक तरह से अच्छा भी था और बुरा भी। अच्छा इसलिए कि जी-भर तैरने से उसे कोई रोकनेवाला नहीं था। बुरा इसलिए था कि उस जैसे चतुर डुबकीमार और अच्छे तैराक की तारीफ करनेवाला भी कोई नहीं था।

तैरते और डुबकी लगाते वह बुरी तरह ठिठुरने लगा और उसने सोचा कि बस अब काफी हो गया। लेकिन बाहर निकलने से पहले एक बार फिर उसका मन बदला और उसने साफ पानी में आखिरी डुबकी लगायी…

जैसे ही वह साँस लेने के लिए ऊपर आनेवाला था कि उसका हाथ तल में पड़ी किसी कठोर चीज से टकराया। उसने उस चीज को कसकर पकड़ लिया और किनारे के पास पहुँचकर पानी से ऊपर निकाला तो देखा—वह एक अजीब-सी चिकनी और काई से ढकी हुई मिट्टी की सुराही थी। वह यूनान की उस पुरानी सुराही की शक्ल की थी जिसमें दो मुँह होती हैं और जिसे अम्फोरा कहते हैं। सुराही का मुँह किसी

से अच्छी तरह बन्द था और ऊपर सीलवन्द होने की मुहर-सी लगी हुई थी।

वोल्का ने सुराही के वजन को परखा। वह बहुत भारी थी। सोच-कर उसकी साँस-सी रुक गयी।

खजाना! वैज्ञानिक महत्त्व का एक पुराना खजाना! एक करिश्मा!

उसने फौरन कपड़े पहने और घर की ओर लपका—यह सोचकर कि अपने कमरे के एकान्त में उसे खोलेगा।

भागते हुए भी उसे वह खबर साफ-साफ नजरों के सामने दिखायी पड़ रही थी जो कल सुबह के अखबारों में जरूर होगी, बल्कि उसका शीर्षक भी उसके दिमाग में घूम रहा था—

"विद्यार्थी की विज्ञान को देन

कल एक विद्यार्थी, जिसका नाम वोल्का कोस्तलकोव है, अपने जिले के अधिकारी के पास पहुँचा और उसने वह करामाती सुराही उन्हें दी जिसमें प्राचीन काल की सोने की मुहरें भरी हुई थीं। यह सुराही उस विद्यार्थी को नदी के तल में मिली थी, ऐसी भयानक जगह जहाँ पानी बहुत गहरा था। यह खजाना ऐतिहासिक पुरातत्त्व संग्रहालय को सौंप दिया गया है। विश्वस्त सूत्रों से पता चला है कि वोल्का एक अद्‌भुत गोता-खोर है।"

वोल्का रसोईघर के पास से आँख बचाकर निकला, वहाँ माँ खाना बना रही थीं। वह लपककर तेजी से कमरे में पहुँचा···इतनी फुर्ती से कि फर्श पर रखे हुए फानूस से वह टकराते-टकराते बचा, नहीं तो टाँग टूट जाती।

वोल्का ने जेब से पेन्सिल बनानेवाला चाकू निकाला और धड़कते दिल और काँपते हाथों से सुराही की मुहर काटकर निकाल दी।

मुहर का खुलना था कि सारा कमरा दमघोंट काले-काले धुएँ से भर गया। विस्फोट भी हुआ पर किसी तरह का धड़ाका नहीं हुआ था···उस विस्फोट ने उसे ऊपर उछाल दिया और वोल्का छत से जा लगा। उसका नेकर छत के लगे कुण्डे में फँस गया और वह वहीं लटक गया।

बूढ़ा जिन्न !

वोल्का हुक में लटका हुआ झूल रहा था और समझने की कोशिश कर रहा था कि यह आखिर हुआ क्या? तभी धुआँ धीरे-धीरे साफ होने लगा।

एकाएक उसे लगा कि कमरे में उसके अलावा [illegible] है। वह एक दुबला-पतला झुलसा हुआ-सा बूढ़ा आदमी था। [illegible] दाढ़ी कमर तक फहरा रही थी। सिर पर शानदार [illegible] था। वह [illegible] का कामदार कोट पहने था जिस पर कीमती मोती और चाँदी के तारों का काम था। वह चमकदार फूला हुआ रेशमी पैजामा पहने था। मोरक्को के गुलाबी जूते उसके पैरों में थे जिनका लम्बा सिरा ऊपर को मुड़ा हुआ था।

'आकछी !' बूढ़े आदमी ने जोर से छींका और घुटने टेककर बोला—"ऐ बुद्धिमान और अद्भुत नौजवान ! मैं नमस्कार करता हूँ !"

वोल्का ने आँखें जोर से मीचकर फिर खोलीं। सचमुच, उसे और कोई चीज नहीं दिखायी दे रही थी। वह जादुई बूढ़ा ही वहाँ था।

"तुम कहाँ से आये हो ?" वोल्का ने झिझकते हुए पूछा। वह अब भी घड़ी के पेंडुलम की तरह कुण्डे से झूल रहा था, "क्या तुम किसी कौतुक मण्डली से आये हो ?"

"नहीं ! नौजवान मालिक, नहीं !" उस बूढ़े ने बड़े अदब से कहा, "मैं इस भयंकर सुराही से निकला हूँ !"

यह कहकर वह बेढंगेपन से खड़ा हुआ और सुराही पर कूदने लगा। सुराही से धुएँ की हलकी-सी लकीर बन खाती हुई ऊपर को अब भी उठ रही थी। आखिर उसके कूदने से वह धुआँ भी खत्म हो गया, सिर्फ मिट्टी के खपरों का छोटा-सा ढेर बाकी रह गया। और तब उसने अपनी दाढ़ी से एक बाल झटके से तोड़ा। बाल तोड़ते समय ऐसी आवाज हुई जैसे शीशे के टूटने पर मधुर-सी आवाज होती है। बाल तोड़ते ही खपरों का ढेर जलने लगा'''हरी-हरी लपटें उसमें से निकलने लगीं' और कुछ [illegible] में खपरों का नामोनिशान तक फर्श से मिट गया।

वोल्का का मन अब भी शंकित था। खुद सोचो [illegible] आसान नहीं है कि एक नन्ही-सी सुराही में [illegible] निकल सकता है।

"मैं समझ नहीं पा रहा हूँ'' " वोल्का ने [illegible] इतनी छोटी-सी थी और उसकी बनिस्बत तुम [illegible]

"तुम मेरी बात का यकीन नहीं [illegible] क्रोध से गुर्राया, पर फौरन ही शान्त हो [illegible] गया'

वल्कि शक्तिशाली जिन्न हसन अब्दुर्रखमान इब्न होताभ हूँ···यानी होताभ का पुत्र···उस होताभ का जिसका डंका दुनिया के कोने-कोने में वजता है !"

यह सवकुछ इतना मजेदार और जादूभरा था कि वोल्का यह भी भूल गया कि वह छत से लगे हुए कुण्डे से अब भी झूल रहा है।

"ओह, जिन ! यह तो कोई पीने की चीज होती है न !" वोल्का ने पूछा।

"ऐ जिज्ञासु नौजवान ! मैं शराब नहीं हूँ।" बूढ़ा फिर विगड़ पड़ा था, फिर उसने अपने को सँभाला और शान्त हो गया, "मैं कोई पेय नहीं हूँ वल्कि एक शक्तिशाली प्रेत हूँ ! दुनिया में कोई भी करिश्मा ऐसा नहीं है जो मैं नहीं कर सकता, और मेरा नाम—जैसा कि अभी मैंने आपके हुजूर में अर्ज किया था—हसन अब्दुर्रखमान इब्न होताभ है ! अगर यह नाम तुम किसी भी पहले-पहल मिलनेवाले जिन्न के सामने ले दो तो वह काँपने लगेगा। डर के मारे उसका हलक सूख जायेगा।" बूढ़ा बढ़-चढ़कर बात करता जा रहा था। "मेरी कहानी···आकछीं···सचमुच बड़ी अजीब है। जो विद्या प्राप्त करना चाहते हैं उनकी आँखों में सुइयों से अगर मेरी कहानी लिख दी जाये तो बहुत अच्छा सबक सावित होगी। मैं, जोकि शायद सबसे अभागा जिन्न हूँ, मैंने डेविड के पुत्र सुलेमान का हुक्म नहीं माना (परमात्मा दोनों की आत्मा को शान्ति दे !) साथ में मेरा भाई उमर आसफ होताभ भी था। तब सुलेमान ने अपने वजीर आसफ को, जोकि वाराखिया का लड़का था, हमें गिरफ्तार करने को भेजा। और वह हमें हमारी मर्जी के खिलाफ पकड़ लाया। तब डेविड के लड़के सुलेमान ने (परमात्मा दोनों की आत्मा को शान्ति दे !) हुक्म दिया कि दो सुराहियाँ लायी जायें—एक ताँबे की और एक मिट्टी की। उसने मुझे मिट्टी की सुराही में और मेरे भाई उमर होताभ को ताँबे की सुराही में वन्द कर दिया। उसने दोनों सुराहियों पर मुहरें लगा दीं और सर्वशक्तिमान अल्लाह का नाम खोद दिया। फिर उसने अपने जिन्नों को हुक्म दिया कि हम दोनों को ले जाकर—मेरे भाई को समुद्र में और मुझे नदी में—फेंक दे—उसी नदी में जिसमें से ऐ मेरे मुक्तिदाता···आकछीं···आकछीं···तुमने मुझे निकाला है···तुम्हारी उम्र दराज हो···ओ···माफ करना, तुम्हारा नाम जानकर मुझे इतनी खुशी होगी जो वयान नहीं की जा सकती···ओ सबसे सुन्दर नौजवान !"

"मेरा नाम वोल्का है !" छत से धीरे-धीरे झूलते हुए उस वहादुर ने जवाब दिया।

"और तुम्हारे भाग्यशाली पिता का नाम क्या है, परमात्मा उन्हें प्रलय तक जीवित रखे ? उस खुशनसीब का नाम मुझे बताओ क्योंकि वह निश्चय ही असीम प्यार और सम्मान के हकदार हैं क्योंकि उन्होंने तुम जैसा पुत्र दुनिया को प्रदान किया है !"

"उनका नाम अलेक्सी है···और उनका बहुत प्यारा-सा···प्यारा-सा घर का नाम अल्योशा है !"

"तो ऐ नौजवानों में सबसे योग्य···और मेरी आंखों के तारे वोल्का इब्न अल्योशा, सुनो ! इसी क्षण से मैं तुम्हारी सब इच्छाएँ पूरी करूँगा···क्योंकि तुमने मुझे उस भयंकर कैद से मुक्त किया है···आकछीं !"

"तुम इतना छींकते क्यों हो ?" वोल्का ने ऐसे पूछा जैसे और सब बातें उसकी समझ में आ गयी हों।

"तुम्हारे इस अयोग्य सेवक ने हजारों बरस पानी की नदी में गुजारे हैं। जीवन देनेवाली सूरज की किरणों से दूर मैं उस ठण्डी सुराही में बन्द होकर नदी के तल में पड़ा रहा हूँ···इसी से मेरी नाक बहने लगी है···आकछीं ! आकछीं ! लेकिन यह इतनी महत्त्वहीन बात है जिसके लिए तुम्हें अपना कीमती दिमाग उलझन में नहीं डालना चाहिए। ऐ नौजवान मालिक ! जो भी चाहो मुझे हुक्म दो !" हसन अब्दुर्रहमान इब्न होताब ने बड़े जोश से कहा पर घुटने तब भी टेके हुए था।

"सबसे पहले···तुम खड़े हो जाओ !" वोल्का ने कहा।

"तुम्हारा हर शब्द मेरे लिये एक हुक्म है !" बूढ़े ने आदर से कहा और उठते हुए आगे बोला, "मैं तुम्हारे अगले हुक्म का इन्तजार कर रहा हूँ !"

"और अब···" वोल्का ने कुछ सकपकाते हुए कहा, "अगर तुम्हें बहुत तकलीफ न हो···अगर तुम मेहरबानी करके···सचमुच अगर बहुत दिक्कत न हो···मेरे कहने का मतलब है कि मैं फर्श पर उतरना चाहता हूँ !"

और उसी क्षण उसने अपने को जिन्न होताब के साथ खड़ा पाया। सबसे पहले वोल्का ने नेकर के पीछे हाथ से टटोला···नेकर में कोई छेद नहीं था···

और अब करिश्मे शुरू हो रहे थे···

भूगोल का इम्तहान

"जो तुम चाहते हो, मुझे हुक्म दो !" जिन्न होताब ने वोल्का को आदर से देखते हुए कहा, "कोई ऐसी बात है जो तुम्हें परेशान करती है ? मुझे

वताओ, मैं तुम्हारी मदद करूँगा !"

"गजब हो गया !" मेज पर टिकटिक करती घड़ी को देखकर वोल्का चीखा, "मुझे देर हो गयी···मुझे इम्तहान के लिए देर हो गयी !"

"ऐ वोल्का इब्न अल्योशा ! किस चीज के लिए देर हो गयी ?" जिन्न होताभ ने सीधे-सीधे पूछा, "इस अजीव-से शब्द 'इम्तहान' के क्या अर्थ हैं ?"

"इम्तहान का मतलव है परीक्षा···स्कूल की परीक्षा के लिए मुझे देर हो गयी है ?"

"सुनो वोल्का ! इसका मतलव है कि तुम मेरी ताकतों की कतई कद्र नहीं करते !" बूढ़े ने टूटे हुए दिल से कहा, "मैं कहता हूँ नहीं, नहीं, नहीं··· तुम्हें इम्तहान के लिए देरी नहीं होगी ! मुझे एकदम वताओ कि तुम क्या चाहते हो ? इम्तहान रोक दिया जाये। तुम्हें फौरन स्कूल के फाटक पर पहुँचाया जाये ?"

"मैं फाटक पर पहुँचना चाहता हूँ !" वोल्का ने कहा।

"अरे, यह तो वड़ा आसान है ! तुम्हारा मन जहाँ पहुँचना चाहता है तुम वहीं पर अपने को पाओगे···तुम्हारे अपार ज्ञान से तुम्हारे अध्यापक और साथी दंग रह जायेंगे !"

जिन्न होताभ ने अपनी दाढ़ी का एक वाल जैसे ही तोड़ा तो वड़ी मधुर-सी आवाज हुई···फिर उसने एक वाल और तोड़ा।

"लोग दंग भला क्या रह जायेंगे, उल्टा मुझे डर लग रहा है !" स्कूल की वर्दी पहनते हुए वोल्का ने अफसोस से कहा, "मैं सच-सच वताऊँ, भूगोल में अच्छे नम्बर पा सकने की मुझे ज़रा भी उम्मीद नहीं है।"

"भूगोल में !" अपनी सींक-सी वाँहें गर्व से फैलाते हुए वूढ़ा चीखा, "तो तुम्हें भूगोल का इम्तहान देना है ! तो ऐ वोल्का इब्न अल्योशा, सुनो ! तुम सचमुच भाग्यवान हो···क्योंकि मैं भूगोल के वारे में सब जिन्नों से ज्यादा जानता हूँ···मैं यानी तुम्हारा सेवक हसन अब्दुर्रखमान होताभ ! हम साथ-साथ स्कूल चलेंगे ! स्कूल की इमारत की नींव और छतों का भला हो···मैं अदृश्य रहकर तुम्हें सव सवालों के जवाव वताता जाऊँगा ! वस तुम अपने स्कूल के सबसे नामी विद्यार्थी हो जाओगे ! इतना ही क्यों, इस खूबसूरत शहर के सभी स्कूलों के सबसे मशहूर विद्यार्थी वन जाओगे। अगर तुम्हारा कोई भी अध्यापक तुम्हारी सबसे ज्यादा तारीफ नहीं करता तो उसे मुझसे निपटना पड़ेगा···और तब वे वहुत पछतायेंगे !" जिन्न होताभ जोश में कहता जा रहा था, "मैं उन्हें पानी ढोनेवाला खच्चर वना दूंगा, उनके शरीर को खुजली से भर दूंगा या उन्हें घृणित मेढक या मूर्ख

बना दूँगा। समझे, मैं यह सब कर सकता हूँ!" जितनी जल्दी उसे जोश आया था उतनी ही जल्दी वह ठण्डा भी पड़ गया, "वैसे यह सब करने की जरूरत नहीं पड़ेगी, ऐ वोल्का इब्न अल्योशा...सब तुम्हारे जवाबों से चकित रह जायेंगे।"

"इसके लिए धन्यवाद!" वोल्का ने गहरी साँस लेकर परेशानी से कहा, "तुम मुझे पीछे से छिपकर बताओ, यह मैं नहीं चाहता। हम विद्यार्थी लोग इस बात के खिलाफ हैं। इन अनुचित तरीकों के खिलाफ हम लोग संगठित तरीके से लड़ रहे हैं।"

अब सोचिए भला, वह जिन्न जिसने हजारों बरस कैद में काटे हों यह विद्वत्तापूर्ण बात कैसे समझ सकता है। लेकिन उसके नौजवान मुक्तिदाता ने गहरी साँस लेकर जो शब्द कहे थे उनसे जिन्न होताब ने समझा कि वोल्का को उसकी मदद की अब और भी ज्यादा जरूरत है।

"तुम्हारे इन्कार करने से मुझे दुःख होता है!" जिन्न होताब ने कहा, "कोई भी नहीं जान पायेगा कि मैं छिपकर तुम्हें बता रहा हूँ!"

"ओह, तुम नहीं जानते!" वोल्का ने चिढ़ते हुए कहा, "हमारी अध्यापिका वारवारा के कान बहुत तेज हैं!"

"अब तुम सिर्फ मेरी बात ही नहीं कर रहे हो बल्कि मुझे गुस्सा दिला रहे हो! ऐ वोल्का इब्न अल्योशा, जब होताब ने यह कह दिया है कि कोई नहीं सुन पायेगा तो यह तय है कि कोई भी नहीं सुन पायेगा!"

"कोई भी नहीं!" वोल्का ने बात पक्की करने के लिए फिर पूछा।

"हाँ, कोई भी नहीं! जो बात मैं तुम्हें बताना चाहूँगा वह मेरे ओठों से सीधी तुम्हारे कान में पहुँचेगी, समझे!"

"मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि क्या करूँ।" वोल्का ने फिर गहरी साँस ली, "इन्कार करके तुम्हें भी मैं नाराज नहीं करना चाहता...खैर, ठीक है, तुम चलो। भूगोल कोई गणित या व्याकरण तो है नहीं...गणित और व्याकरण में इस अनुचित तरीके का इस्तेमाल मैं कतई नहीं करूँगा लेकिन भूगोल इतना महत्त्वपूर्ण विषय है भी नहीं...अच्छा ठीक है, अब जल्दी करो!" कहते हुए उसने बूढ़े के अजीबोगरीब कपड़ों पर निगाह डाली, "हूँ...होताब...अपनी पोशाक बदल सकते हो?"

"तुम्हें यह कपड़े अच्छे नहीं लगते?" जिन्न होताब ने कुछ उदासी से पूछा।

"अरे अच्छे तो बहुत लगते हैं...सचमुच अच्छे लगते हैं..." वोल्का ने चालाकी से कहा, "लेकिन तुम्हारे इस पहनावे...मेरे कहने का मतलब है कि...असल में हम लोग दूसरी तरह के कपड़े पहनते हैं न...इस पोशाक

से सब लोगों का ध्यान तुम्हारी ओर ही खिंच आयेगा !"

"लेकिन आजकल इज्जतदार बुजुर्ग लोग किस तरह के कपड़े पहनते हैं ?"

वोल्का ने हर तरह से पैंजामा, कुर्त्ता और टोपी के बारे में उसे बताने की कोशिश की लेकिन उसे समझा पाने में बहुत सफल नहीं हुआ। आखिर वह परेशानी से झुंझलानेवाला ही था कि दीवार पर टंगी अपने बाबा की तस्वीर पर उसकी नजर पड़ी। पुरानी होने के कारण धुंधलायी हुई उस तस्वीर के पास वह जिन्न होताभ को ले गया। जिन्न होताभ बाबा की पोशाक की ओर आश्चर्य से आँखें फाड़-फाड़कर ताकता रहा, क्योंकि उसकी अपनी पोशाक बिल्कुल दूसरी तरह की थी।

एक क्षण बाद ही जिन्न होताभ की बाँह पकड़े हुए वोल्का घर से बाहर निकला। जिन्न होताभ के कपड़े एकदम बदले हुए थे, हाँ वह सिर्फ जूते बदलने के लिए राजी नहीं हुआ था···वे गुलाबी जूते जो सामने से मुड़े हुए थे और तीन हजार साल पहले के डंठलों से बने हुए थे। बहुत बरस पहले अगर शानदार जूते पहनकर कोई युवक खलीफा हारून-उल-रशीद के दरबार में पहुँचता तो खलीफा भी उससे ईर्ष्या करने लगता।

जब वोल्का और जिन्न होताभ स्कूल के फाटक पर पहुँचे तो जिन्न होताभ ने दरवाजे के शीशे में एक बार अपने को देखा और खुशी से भर गया।

सीढ़ियों पर छलांग लगाते हुए वोल्का ऊपर पहुँचा। बरामदे खाली थे और वहाँ खामोशी छायी थी···इसका मतलब था कि इम्तहान शुरू हो चुका है और वोल्का को देर हो गयी है।

वोल्का के पीछे लपकते हुए जिन्न होताभ को दरबान ने रोका, "अरेरे···तुम कहाँ जा रहे हो ?"

"ये प्रिन्सिपल साहब से मिलने आये हैं !" वोल्का ऊपर से चीखा।

"नहीं-नहीं, अभी प्रिन्सिपल साहब से मुलाकात नहीं हो सकती। वे इम्तहान ले रहे हैं···दिन में किसी और वक्त नहीं आ सकते आप ?"

जिन्न होताभ ने गुस्से से नाक-भौंह सिकोड़ी।

"अगर इजाजत हो तो मैं यहीं रुककर उनका इन्तजार कर लूं, क्यों दरबानजी ?" कहकर जिन्न होताभ वोल्का से बोला, "तुम जल्दी से दर्जे में जाओ ! अरे, आज तुम्हारे अध्यापक और साथी तुम्हारे ज्ञान का लोहा मान जायेंगे !"

तो उ... शुरू करने के लिए दरबान ने पूछा, "आप इनके बाबा हैं या
होताभ जो... रिश्तेदार ?" सवाल सुनकर भी जिन्न होताभ खामोश रहा।
दूंगा, उनके श...

एक दरबान से बात करना वह अपनी शान के खिलाफ़ समझता था।

"आज बड़ी गर्मी है…आप चाय पीजिएगा?" दरबान ने फिर बात करनी चाही। और जैसे ही प्याला भरकर उसने बात न करनेवाले अजनबी बूढ़े की ओर नज़र डाली तो सन्न रह गया—जिन्न होताब हवा में गायब हो गया था। इस असम्भव घटना से घबराकर उस चाय को दरबान एक ही घूँट में पी गया फिर वह एक-के-बाद एक प्याला पीता चला गया, और तभी तक जब एक बूँद भी चाय बाकी नहीं रही। और कुर्सी में धँस कर वह अखबार से ज़ोर-ज़ोर से हवा करने लगा।

और उधर दरबान के ठीक ऊपर दूसरी मंज़िल पर दर्जा छः में कुछ अद्भुत घटनाएँ शुरू हुईं। दर्जे के अध्यापकों के साथ डिंडिराम पाठक भी बैठे हुए थे। सामने कोने पर इस्तेमाल किये जानेवाला भारी मेजपोश मेज पर बिछा हुआ था। पीछे ब्लैक बोर्ड था, उस पर कई नक्शे टँगे हुए थे। उनके सामने विद्यार्थी गम्भीर बने बैठे थे। कमरे में इतनी खामोशी थी कि खिड़की के पास भिनभिनाती हुई अकेली मक्खी का शोर तक सुनायी पड़ रहा था। आज की तरह ही अगर दर्जा छठी में हमेशा खामोशी रहती होती तो निश्चय ही इस दर्जे को नगर भी सबसे अधिक अनुशासित दर्जा माना जाता।

दर्जे की यह खामोशी सिर्फ़ इम्तहान के कारण ही नहीं थी बल्कि इसलिए भी थी कि वोल्का को परीक्षा के लिए पुकारा गया था पर वह दर्जे में मौजूद नहीं था।

"वोल्का कोस्तिलकोव!" डिंडिराम ने दुबारा पुकारा और खामोश बैठे विद्यार्थियों को ज़रा ताज्जुब से देखा।

खामोशी और बढ़ गयी।

तभी एकाएक बाहर से भागकर आते हुए कदमों की आहट सुनायी पड़ी और जैसे ही डिंडिराम ने तीसरी और आखिरी बार पुकारा—"वोल्का कोस्तिलकोव!" कि फाटक से दरवाज़ा खुला और हाँफते हुए वोल्का ने प्रवेश किया।

"आ गया!" यह शब्द सुनायी पड़े।

"ब्लैक बोर्ड के पास आओ?" डिंडिराम ने क्रोध से कहा, "देर से आने की बात बाद में होगी…"

"मैं…मेरी तबीयत ठीक नहीं है!" कहता हुआ वोल्का परीक्षकों की ओर बढ़ा, उसके दिमाग में यही कहना आता था।

अभी वह उत्तर के लिए तैयार भी नहीं हो पाया था कि जिन्न होताब दीवार में होता हुआ कमरे में विलय गया और सामनेवाली दीवार से

गायब होकर साथवाले कमरे में पहुँच गया। उसका चेहरा बहुत गम्भीर दिखायी दे रहा था।

वोल्का की किस्मत में क्या वदा था, पर जो भी होना था सो अच्छा ही होना था क्योंकि पहला प्रश्न हिन्दुस्तान के वारे में था। ताज्जुब के साथ-साथ उसे खुशी भी हुई क्योंकि हिन्दुस्तान के विषय में वह काफी-कुछ जानता था। हिन्दुस्तान के प्रति उसकी खासी दिलचस्पी थी।

"हाँ वताओ ?" प्रिन्सिपल ने कहा।

हिन्दुस्तान के बारे में पुस्तक के पाठ में जो कुछ भी लिखा हुआ था उसे पूरा-पूरा याद था। वह कहने ही वाला था कि भारत प्रायद्वीप एक त्रिकोण की शक्ल का देश है जिसकी दक्षिणी सीमा पर भारत महासागर है, पश्चिम में अरव सागर है और पूरव में वंगाल की खाड़ी है। दो वड़े देश--भारत और पाकिस्तान—इसी प्रायद्वीप में हैं। दोनों देशों में शान्ति-प्रिय और दयावान जनता रहती है। उनकी संस्कृति वहुत पुरानी और महान् है आदि-आदि···कि तभी साथवाले कमरे में खड़ा जिन्न होताभ दीवार में से झुका और मुंह पर हाथ की फुंकनी-सी वनाकर वड़ी चतुराई से फुसफुसाया—

'आदरणीय अध्यापको ! भारत···'

और न चाहते हुए भी वोल्का ने निहायत बेहूदी और गलत-सलत वातें वकनी शुरू कर दीं—

"आदरणीय अध्यापको ! भारत धरती की तश्तरी की किनारी के पास वसा हुआ है। वीरान और अछूते रेगिस्तान भारत को इस किनारी से अलग करते हैं। इसीलिए पूर्वी भागों में न जानवर मिलते हैं और न चिड़ियाँ। भारत एक वहुत धनवान देश है। वहाँ सोना ही सोना है। और देशों की तरह भारत में यह सोना धरती से खोदकर नहीं निकाला जाता वल्कि वहाँ सोना पैदा होता है। वहाँ एक तरह की चींटी होती है जो थकने का नाम नहीं जानती और इन्हीं चींटियों से सोना पैदा होता है। ये चींटियाँ कद में कुत्ते के वरावर होती हैं। ये चींटियाँ सुरंगें-सी खोदती जाती हैं और दिन-भर में तीन वार सोने की रेत और कच्चा सोना उगलती हैं, जिसका ढेर लगता जाता है। लेकिन धिक्कार है उन हिन्दुस्तानियों की आदत को जो उस सोने को चुराते हैं और वह भी वगैर हिकमत के ! चींटियाँ उनका पीछा करती हैं और पकड़ते ही मार डालती हैं। भारत की उत्तरी और पश्चिमी सीमाओं पर जो देश हैं वहाँ के लोग, क्या आदमी और क्या औरतें, यहाँ तक कि वच्चे भी, गंजे हैं। ये अजीव निवासी कच्ची मछली और चीड़ के फल खाते हैं। उसी के पास एक और देश है। उस

देश में न कुछ दिखायी पड़ता है और न उसे पार किया जा सकता है। धरती और वायुमण्डल पक्षियों के परों से भरा रहता है···इस वजह से कुछ भी दिखायी नहीं पड़ता !"

"वोल्का, एक मिनट रुको !" भूगोल के अध्यापक ने तनिक मुस्कराते हुए कहा, "एशिया के भूगोल के सम्बन्ध मे पुराने दकियानूसी विचारों के बारे में तुमसे सवाल नहीं पूछा गया। हम आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भारत के बारे मे जानना चाहते हैं !"

सचमुच यह मौका था जब वोल्का भूगोल के विषय में अपने ज्ञान का सिक्का जमा सकता था ! लेकिन मजबूरी तो यह थी कि अपनी जबान और भावों पर उसका वश हो नहीं रह गया था। जिन्न होताब की बात मानकर कि पीछे से वह बताता जायेगा, वोल्का उसके हाथ की कठपुतली बन गया था। हाँ, जिन्न होताब करना तो भलाई ही चाहता था पर उसका अज्ञान आड़े आ रहा था। वह अपने अध्यापकों से कहना चाहता था कि अभी तक जो कुछ भी उसने बताया है उसका कोई भी सम्बन्ध आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से नहीं है। पर दीवार के उस पार खड़े जिन्न होताब ने कुछ निराशा और कुछ क्रोध से कन्धे सिकोड़कर और सिर हिलाकर अपनी नाराजी प्रकट की···और दर्जे के सामने खड़े वोल्का को मजबूरी में सबकुछ स्वीकार करना पड़ा।

"आदरणीय अध्यापको ! जो कुछ मैंने अभी बयान किया है वह विश्वस्त सूत्रों पर आधारित है और भारतवर्ष के बारे में इससे अधिक सही वैज्ञानिक बातें और कहीं नहीं मिल सकतीं !"

"विषय से सम्बन्धित बात करो···यह इम्तहान लिया जा रहा है, कोई तमाशा नहीं हो रहा है। अगर तुम्हें कुछ नहीं आता तो सीधे-सीधे कह दो कि नहीं मालूम है। यह धरती क्या तश्तरी-सी बनी है ? तुम्हें इतना भी नहीं मालूम कि धरती गेंद की तरह गोल है ?"

धरती गोल है ! यह तो दर्जा एक का भी बच्चा जानता है। पर दीवार के पीछे खड़ा जिन्न होताब हँसने लगा। बेचारे वोल्का ने अपने ओंठ भींचकर न बोलने की पूरी कोशिश की पर उसके ओंठो पर फिर भी ढीठ हँसी आ ही गयी और वह बोला—

"मुझे लगता है कि आप लोग मुझ जैसे गम्भीर विद्यार्थी को हँसी में उड़ा देना चाहते हैं। अगर दुनिया गोल होती तो पानी भला कैसे ठहरता। और दुनिया में पानी न होता तो लोग प्यासे मर जाते और सब पेड़-पौधे सूख जाते। विद्वान् अध्यापको, दुनिया हमेशा से चपटी तश्तरी की तरह थी और आज भी है। इस चपटी तश्तरी के चारों ओर एक विशाल···ी है

जिसे महासागर कहते हैं। यह धरती छह हाथियों पर टिकी हुई है और ये हाथी एक बहुत बड़े समुद्री कछुए पर खड़े हैं···दुनिया इस तरह बनी है जनाब !"

परीक्षकों की आँखों में आश्चर्य की भावना बढ़ती जा रही थी। उन्होंने वोल्का को गौर से देखा···घबराहट और असहाय स्थिति के कारण वोल्का का शरीर पसीने से भीग गया। दर्जे के विद्यार्थी समझ ही नहीं पा रहे थे कि वोल्का को क्या हो गया है लेकिन कुछ चुपके-चुपके हंस रहे थे। वोल्का का सबसे अच्छा दोस्त ज़ेन्या यह सब सुनकर निश्चय ही परेशान था, क्योंकि वोल्का नक्षत्र क्लब का अध्यक्ष था और कम-से-कम उसे यह तो मालूम ही था कि दुनिया गोल है। और तेज चलनेवाले विद्यार्थियों में वोल्का भी एक था, इसलिए यह और सभी के लिए भी बुरा था। अब तक वे लोग हर परीक्षा में प्रथम आते रहे थे पर आज के बेहूदे और बेसिर-पैर के जवाब तो सब बिगाड़कर रख देंगे···और फिर वोल्का तो बड़ा ही अच्छा और अनुशासन को माननेवाला विद्यार्थी था।

ज़ेन्या के पास ही गोगा पिलिकुन बैठा हुआ था। गोगा सबसे लद्धड़ विद्यार्थी था। (उसके चिढ़ाने का नाम सबने 'पिल' रख छोड़ा था।) उसने ज़ेन्या के इस हरे घाव पर और नमक छिड़क दिया, "ज़ेन्या ! पढ़ाकू लड़कों का नाम रोशन कर रहा है वोल्का !" कहते हुए वह कुटिल हँसी हँसा, "अब नैया डूबी तुम लोगों की !"

ज़ेन्या ने गुस्से से उसे मुक्का दिखाया।

"अध्यापकजी ! यह ज़ेन्या मुझे मुक्का दिखा रहा है !" गोगा चीखा।

"चुपचाप सीधी तरह बैठो !" वारवारा ने कहा और वोल्का की तरफ मुँह किया—उसके सामने खड़ा वोल्का जिन्दा कम, मुर्दा ज्यादा लग रहा था।

"यह हाथियों और कछुएवाली बात तुमने योंही कही है या गम्भीरता से उसे मानते हो ?"

"बिलकुल गम्भीरता से उसे मानता हूँ···बल्कि पहले से भी ज्यादा···" जिन्न होताभ ने ही यही पीछे से कहा था और वोल्का को दोहरा देना पड़ा था पर यह कहते हुए वह शर्म से गड़ा जा रहा था।

"तुम्हें और कुछ कहना है ? क्या तुम समझ-बूझकर सवालों का जवाब दे रहे हो ?"

"मुझे और कुछ नहीं कहना है !" जिन्न होताभ ने दीवार के पीछे से सिर हिलाते हुए कहा···और जो ताकत उसे असफलता की ओर खींच रही

थी, उसके सामने अपने को असमर्थ पाकर उसने भी सिर हिलाया और कह दिया, "मुझे और कुछ नहीं कहना है—बस···इतना तथ्य और बता दूँ कि सोने की चिड़िया हिन्दुस्तान में, अन्तरिक्ष में सोना जगमगाता है और मोती जड़े हुए हैं !"

"यह सब गलत है···अविश्वसनीय !" अध्यापिका ने कहा।

"मुझे लगता है, यह अस्वस्थ है !" वारवारा ने प्रिन्सिपल से कहा।

सामने पश्चाताप में गूँगे खड़े वोल्का को सहानुभूति से देखते हुए अध्यापकों ने धीरे-धीरे कुछ मशवरा किया, तो वारवारा ने सुझाया, "यह तो बहुत ही अच्छा विद्यार्थी रहा है, पिछले साल भूगोल में यह प्रथम था··· हम कोई और सवाल पूछें तो शायद यह समझकर जवाब दे सके···पिछले साल की किताब से कोई सवाल पूछूँ ?"

अन्य अध्यापक सहमत हो गये तो वारवारा ने एक बार फिर रुआँसे खड़े वोल्का से कहा, "वोल्का, घबराओ मत, आँसू पोंछ लो और यह बताओ कि अन्तरिक्ष क्या है ?"

"अन्तरिक्ष !" वोल्का को आशा बँधी, "यह सरल बात है। अन्तरिक्ष यह कल्पित रेखा है जो···"

पर तभी दीवार के पीछे खड़े जिन्न होताब ने हरकत की और वोल्का फिर उसके चंगुल में फँस गया और जैसे अपने को सही करते हुए उसने दोहराया, "आदरणीय अध्यापको ! अन्तरिक्ष एक ऐसी किनारी है जहाँ स्वर्ग का चमकदार गुम्बद धरती की सरहद को छूता है !"

"आखिर इसका मतलब क्या है ?" वारवारा अभी भी अपने कानों पर विश्वास नहीं कर पा रही थी, "क्या तुम समझते हो कि आकाश एक ठोस गुम्बद की तरह है ?"

"जी हाँ !"

"और कोई ऐसी जगह भी है जहाँ धरती समाप्त होती है ?"

"जी हाँ, है !"

दीवार के पीछे खड़े जिन्न होताब ने स्वीकृति में सिर हिलाया और खुशी से हाथ मलने लगा।

दर्जे में अजीब-सी खामोशी छा गयी। वे लड़के भी जो हमेशा चुल-बुलाते और बात-बात पर हँसते थे, चुप बैठे थे। निश्चय ही वोल्का के साथ कुछ गड़बड़ हुआ है, यह सोचकर वारवारा ने उठकर चिन्ता से वोल्का के माथे पर हाथ रखा, पर बुखार वगैरह नहीं था।

जिन्न होताब यह देखकर बहुत खुश हुआ। उसने ईरानी तरीके से नीचे झुककर माथे और छाती पर आदर से हाथ लगाते हुए लम्बा सलाम

किया और कुछ फुसफुसाया···

उसी ताकत से चालित होते हुए वोल्का ने उसकी तरह ही अध्यापको को लम्बा सलाम किया और बोला, "ऐ मेरी आदरणीय अध्यापिका ! स्टीपन की पुत्री ! मैं तकलीफ के लिए आपका शुक्रिया अदा करता हूँ ! पर उस अल्लाह का लाख-लाख शुक्र···क्योंकि उसका रहम मुझ पर है !'

वोल्का की यह हरकत बहुत ही अजीब और विचित्र लग रही थी और सब विद्यार्थी वोल्का की इस हालत से इतने चिन्तित हो गये थे कि किसी के चेहरे पर मुस्कराहट की एक हल्की-सी लकीर तक नहीं थी। वार वारा वोल्का का हाथ पकड़कर दर्जे से बाहर आ गयीं···वह सर झुकाये खड़ा था। उन्होंने प्यार से थपथपाते हुए कहा, "परेशान मत हो वोल्का ! तुम शायद बहुत थके हुए हो···जाओ अच्छी तरह आराम करो, खूब आराम करके आना, ठीक है···जाओ···"

"अच्छा", वोल्का ने कहा, "सचमुच मेरी कोई गलती नहीं थी··· आप विश्वास कीजिये···यह मेरी गलती नहीं थी···"

"मैं कब कह रही हूँ कि तुम्हारी गलती थी !" अध्यापिका ने प्यार से कहा, "मैं तुम्हें बाद में बताऊँगी···चलो पहले तुम्हें स्कूल के डॉक्टर को दिखा दूँ।"

स्कूल के डॉक्टर ने पूरे दस मिनट तक उसकी जाँच की। तरह-तरह से जांच की, आँखें बन्द करवायीं···बाँहें खोलकर अंगुलियाँ फैलाकर खड़े होने को कहा, घुटनों पर हल्की चोट भी मारकर देखी और स्टैथिसकोप से भी जाँच की—यह होते-होते वोल्का के शरीर में एक बार फिर ताजगी लौट आयी और वह बहुत अच्छा महसूस करने लगा।

"इस लड़के को कोई शिकायत नहीं है !" डॉक्टर बोला, "मेरे खयाल से यह खास तौर से स्वस्थ है जैसा कि ज्यादातर विद्यार्थी नहीं होते। शायद इसने इम्तहान के लिए बहुत घोटा लगाया है, गड़बड़ी की बस यही बात हो सकती है, वैसे यह बिलकुल ठीक है।"

और बिलकुल ठीक होते हुए भी डॉक्टर ने एक खास दवा गिलास में डाली और खास तौर से स्वस्थ वोल्का को जबरदस्ती पिला दी।

एकाएक वोल्का के दिमाग में एक विचार आया—'इस समय जिन्न होताभ नहीं है···इसका फायदा उठाकर क्यों न वह अभी ही दुबारा भूगोल की परीक्षा दे ले···डॉक्टर के दवाखाने में ही।'

"कतई नहीं, बिलकुल नहीं !" डॉक्टर ने जोर देकर बात काट दी, "तुम्हें कुछ दिन आराम करना चाहिए। भूगोल इन्तजार कर सकता है।"

"यह सही है !" अध्यापिका ने राहत की साँस लेते हुए कहा क्योंकि

अब कोई परेशानी की बात नहीं थी। वह बोली, "वोल्का ! अब तुम सीधे घर भाग जाओ और खूब अच्छी तरह आराम करो। जब अपने को बिलकुल ठीक महसूस करो तब आना और परीक्षा दे देना। तुम जरूर प्रथम आओगे···क्यों डॉक्टर, आपका क्या खयाल है !"

"अरे इस जैसा गामा ! मैं कहता हूँ प्रथम से भी ऊपर···"

"आपके खयाल से घर पहुँचाने के लिए इसके साथ किसी को करना जरूरी है ?" वारवारा ने डॉक्टर से पूछा।

"नहीं, कोई जरूरत नहीं है, मैं एकदम ठीक हूँ और जा सकता हूँ !" वोल्का ने कहा।

वोल्का स्वस्थ दिखायी पड़ रहा था। वारवारा का दिल भी हलका हो गया था, इसलिए वोल्का को अकेले जाने की इजाजत मिल गयी।

जैसे ही वह बाहरवाले फाटक पर पहुँचा कि दरवान लपककर आ पहुँचा और बोला, "वोल्का ! वह जो तुम्हारे बाबा थे न···खैर कोई भी रहे हो, वही जो तुम्हारे साथ आये थे···"

वह कह ही रहा था कि उसी क्षण जिन्न होताब दीवार से निकल पड़ा। वह बहुत खुश था, अपने कारनामे के कारण वह और भी प्रसन्न दिखायी दे रहा था···और कोई धुन गुनगुना रहा था।

"हाँ, नौजवान मालिक ! अब बताओ कि अध्यापक और सब साथी तुम्हारी विद्वता से चकित रहे या नहीं ?" लम्बी खामोशी तोड़ते हुए जिन्न होताब ने गर्व से पूछा। दोनों सड़क के मोड़ पर आ गये थे।

"हाँ, मैंने उन्हें चकित तो कर ही दिया !" वोल्का ने हिकारत और परेशानी-भरी नजर से उसे देखते हुए कहा।

जिन्न होताब की आँखों में चमक आ गयी, "मैं तो जानता था। हाँ एक पल को मुझे वहाँ लगा कि तुम्हारे ज्ञान के विस्तार को देखकर अध्यापिका वारवारा कुछ नाखुश थी !"

"अरे नहीं···" वोल्का ने कुछ डरकर कहा, क्योंकि उसे जिन्न होताब की भयंकर धमकियों की याद आ गयी थी कि जो तुम्हारे ज्ञान को नहीं मानेगा उसे मैं सच्चर बना दूँगा आदि आदि इसीलिए वह एकदम बोला, "यह तुम्हारा खयाल-भर है।"

जिन्न होताब बड़े नृशंस तरीके से बोला, "मैं उस अध्यापिका को काठ का टुकड़ा बना देता···वह टुकड़ा जिस पर कसाई गोश्त काटते हैं ! समझे !" (यह सुनकर वारवारा के बारे में वोल्का सचमुच घबरा गया था।) जिन्न होताब ने तभी कहा, "वह तो यह कहो कि वह तुम्हारी बड़ी इज्जत कर रही थी। तुम्हें दर्जे के बाहर दरवाजे तक छोड़ने आयी, बल्कि

सीढ़ियों के नीचे तक पहुंचा गयी। जब मैंने यह देखा तब मैं समझ गया उसने तुम्हारे जवाबों को जरूर सराहा है !···उसका जीवन शान्तिमय हो !"

"हां, शान्ति उसके जीवन में रहे !" वोल्का ने फौरन बात जोड़ दी। उसके दिल पर जमा हुआ खौफ का बोझ उतर गया था।

इन पिछले हजारों सालों में जिन्न होताभ का ऐसे लोगों से वास्ता पड़ा था जो दुखी और उदास रहते थे। इसलिए वह उन्हें खुश रखने के तरीके जानता था, खैर सचाई जो भी हो, पर वह मानता यही था। खुश रखने का तरीका यही है कि जिस आदमी को जिस चीज की जरूरत हो, वह उसे दे दी जाये। लेकिन सवाल यह था कि वह वोल्का को उपहार में ऐसी कौन-सी चीज दे ? यह मसला भी तब अचानक हल हो गया जब एक राहगीर से वोल्का ने पूछा, "कितना बजा है ?"

आदमी ने अपनी घड़ी देखी और कहा, "दो बजने में पांच मिनट।"

"धन्यवाद !" इतना कहकर वोल्का फिर चुप हो गया।

आखिर जिन्न होताभ ही बोला, "क्यों वोल्का ! इस आदमी ने दिन का बिलकुल ठीक-ठीक समय कैसे बताया ?"

"तुमने नहीं देखा, उसने घड़ी से बताया था।"

जिन्न होताभ ने भौंहें चढ़ाकर ताज्जुब से कहा, "घड़ी से ?"

"हां-हां, घड़ी से !" वोल्का उसे समझाने लगा, "उसकी कलाई पर घड़ी बंधी थी न ! अरे वही चीज जो सुनहली-सी थी !"

"जिन्नों के मुक्तिदाता ! तुम वैसी ही घड़ी क्यों नहीं ले लेते ?"

"अरे अभी वैसी घड़ी रखने लायक मेरी उम्र नहीं है !" वोल्का ने बहुत सीधेपन से कहा।

तभी एक और आदमी पास से गुजरा। जिन्न होताभ उसे रोककर उसकी घड़ी देखने लगा और बोला, "ऐ सम्माननीय राहगीर ! क्या मैं समय जानने की गुस्ताखी कर सकता हूं ?"

"दो बजने में दो मिनट !" उस आदमी ने उसकी आलंकारिक भाषा पर थोड़ा चौंकते हुए कहा।

राहगीर को फिर उसी तरह लम्बा-चौड़ा धन्यवाद देकर जिन्न होताभ ने वोल्का से कहा, "ऐ सुन्दर नौजवान वोल्का, क्या मैं समय जान सकने की गुस्ताखी कर सकता हूं !"

और वोल्का की बायीं कलाई पर एक घड़ी चमचमाने लगी। बिलकुल वैसी घड़ी जैसी रोके हुए राहगीर की थी। लेकिन इस पर सुनहला पानी नहीं बल्कि यह घड़ी शुद्ध सोने की थी।

"तुम जैसे दयालु नौजवान के हाथ के लिए यह तुच्छ घड़ी ठीक साबित हो !" होताम ने वोल्का की खुशी और हैरत से गर्वित होते हुए धीरे से कहा ।

घड़ी पाकर जैसा कि हर लड़का और लड़की पहली बार करता, वही वोल्का ने भी किया । घड़ी को कान से लगाकर उसने टिक-टिक सुनने की कोशिश की ।

"अरे···" वह धीमे से बोला, "इसमें चाबी नहीं है···भरनी पड़ेगी !"

[illegible]

चीजें उपहार में देते हैं !"

"क्या इसके भीतर कुछ भी नहीं है ?" वोल्का ने निराशा से पूछा ।

"क्यों, भीतर कोई चीज होनी चाहिए ?" होताब ने पूछा । वोल्का ने फीता खोलकर होताब को घड़ी वापस कर दी ।

"अच्छा तो अब मैं तुम्हें ऐसी घड़ी दूंगा, जिसमें भीतर किसी चीज के होने की जरूरत ही नहीं होगी !"

एक बार फिर सोने की घड़ी वोल्का की कलाई पर आ गयी । लेकिन यह घड़ी बहुत छोटी और चपटी थी । उस पर शीशा भी नहीं था और सुइयों की जगह एक छोटी-सी सोने की कमानी बीच में सीधी-सीधी लगी हुई थी । जहां अंक होते हैं वहां पर अनोखे और बेशकीमती हीरे जड़े हुए थे ।

"आज तक दुनिया में किसी के पास ऐसी कलाई की धूप-घड़ी नहीं थी···धनवान से धनवान सुलतानों के पास भी नहीं !" होताब ने फिर शान झाड़ी, "सिर्फ शहरों के चौराहों पर या बाजारों में या बागों में धूप-घड़ियों के चौखटे बने रहते थे । वे भी पत्थर के होते थे । लेकिन इस कलाई की धूप-घड़ी को मैंने अभी बनाया है । क्यों, बुरी तो नहीं है ?"

वोल्का की बाछें खिल गयीं, होताब मुस्कराने लगा ।

"इससे वक्त का कैसे पता चलता है ?" वोल्का ने पूछा ।

"ऐसे ।" वोल्का की कलाई हल्के-से पकड़ते हुए होताब ने बताया, "अपनी बांह ऐसे सीधी रखो और इस सोने की कमानी की छाया सही अंक पर पड़ने लगेगी ।"

लेकिन इसके लिए तो धूप का होना जरूरी है । वोल्का ने सूरज पर छाये बादल के टुकड़े को देखते हुए कहा ।

"वादल अभी एक मिनट में हट जायेगा", होताभ ने आश्वासन दिया। एक मिनट वाद ही सूरज फिर चमकने लगा। वह वोला, "देखो, पानी की छाया दो और तीन के वीच में संकेत कर रही है। इसका मतलव है कि करीव ढाई वजा है।" अभी वह वोल ही रहा था कि वादल का एक और टुकड़ा सूरज पर छा गया। "उसका खयाल मत करो!" होताभ ने कहा, "जव भी तुम समय जानना चाहोगे, मैं वादलों को हटा दिया करूँगा।"

"लेकिन पतझड़ के दिनों में क्या होगा?" वोल्का ने पूछा।

"क्या मतलव?"

"यही कि पतझड़ और जाड़े के मौसम में जव लगातार महीनों तक आसमान वादलों से ढका रहेगा, तव क्या होगा?"

"मैंने अभी कहा तो, अरे वोल्का! जव तुम चाहोगे तभी सूरज चमकने लगेगा। वस, तुम्हें मुझसे कहना पड़ेगा और हर चीज तुम्हारी मर्जी के मुताविक हो जायेगी।"

"लेकिन शाम को और रात को कैसे काम चलेगा?" वोल्का ने जिरह करते हुए कहा, "रात में क्या होगा जव सूरज होता ही नहीं?"

"रात में लोगों को घड़ी देखने के वजाय सोना चाहिए। समझे!" होताभ ने गुस्से से भड़ककर कहा। ढीठ नौजवान को सवक सिखाने की वात होताभ के मन में आयी पर उसने अपने को वश में ही रखा, "ठीक है, तुम्हें उस आदमी की घड़ी पसन्द है, अगर है, तो तुम्हें वही मिल जायेगी।"

"क्या कह रहे हो···अरे वह घडी उस आदमी की है···क्या तुम उसे चुरा···"

"तुम चिन्ता मत करो! मैं उसकी वाल-वरावर चीज तक नहीं छुऊँगा। वह खुद तुम्हें घड़ी देगा। क्योंकि तुम जैसा व्यक्ति इस लायक है कि दुनिया की कीमती-से-कीमती चीज तक दी जा सकती है।"

"तुम उस पर जोर डालोगे···और तव वह खुद···"

"ओह, इस वात से वह आदमी वेहद खुश होगा क्योंकि मैं उसे दुनिया में जिन्दा रहने दूँगा। यूँ अगर मैं चाहूँ तो उसे गन्दा चूहा वना सकता हूँ, दीवार की सन्धों में रहनेवाला पटसा कीड़ा वना सकता हूँ, सवसे गरीव भिखारी भी वना सकता हूँ! समझे!"

"यह तो वेईमानी है!" वोल्का ने गुस्से से कहा, "इस तरह की हरकत करनेवाले जेल में वन्द कर दिये जाते हैं···तुम्हारी यही सजा होगी!"

"जेल! वह मुझे जेल भेजेगा!" होताभ भड़क उठा, "मुझे! अब्दुर्रहमान इब्न होताभ को! वह दो कौड़ी का राहगीर···उसे म

नहीं होगा कि मैं कौन हूँ !···हाँ ! किसी भी जिन्न से पूछ लो, इफ़रत से पता कर लो, या शैतान से मालूम करो···डर से काँपते हुए वे बतायेंगे कि हसन अब्दुर्रहमान इब्न होताब तमाम अंगरक्षक जिन्नों का सरदार है ! मेरी फौज में बहत्तर कबीले हैं और एक-एक कबीले में 72000 सिपाही हैं। हर सिपाही एक हजार खौफनाक जिन्नों पर राज करता है। और हर खौफनाक जिन्न एक हजार खबरें पहुँचानेवाले जिन्नों का राजा है। और हर खबर पहुँचानेवाला जिन्न एक हजार शैतानों पर राज करता है, और हर शैतान के नीचे एक हजार जिन्न होते हैं। और मैं ! इन सबका सबसे बड़ा सरदार हूँ ! कोई भी मेरा हुक्म न मानने की जुर्रत नहीं कर सकता··· समझे !" होताब कह ही रहा था कि वही राहगीर सड़क पर घूमता हुआ, दूकानों की सजी हुई अलमारियाँ देखता हुआ उधर ही निकल आया। उसकी कलाई पर चमकती एक साधारण-सी घड़ी के कारण जो भयंकर खतरा उसके सिर पर मँडरा रहा था, उसका कोई अहसास उस बेचारे को नहीं था।

"क्यों···मैं अभी···", होताब ने शान और गुस्से से अकड़कर वोल्का से कहा, "अगर तुम्हें यही घड़ी चाहिए तो मैं अभी इसे छूहा···"

हर क्षण खतरनाक था। वोल्का चीखा, "नहीं बिलकुल नहीं !"

"नहीं, लेकिन क्यों ?"

"नहीं, उस आदमी को मत छूना। मुझे घड़ी नहीं चाहिए। मुझे कुछ भी नहीं चाहिए।"

"कुछ भी नहीं चाहिए ?" होताब ने सन्देह से पूछा और फौरन शान्त हो गया। दुनिया की वह अकेली धूप-घड़ी उसी क्षण गायब हो गयी··· जैसे आयी थी वैसे ही चली गयी।

"मुझे कुछ भी···नहीं···चाहिए !" वोल्का ने कहते हुए राहत की गहरी साँस ली। और तब होताब को लगा कि वोल्का बहुत उदास हो गया है। अपने नौजवान मुक्तिदाता का मन खुश करने के लिए वह और तरकीब सोचने लगा।



जिन्न होताब की दूसरी सेवा

वोल्का बहुत परेशान था। होताब ने समझ लिया कि कुछ गड़बड़ जरूर है। उसने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि इम्तहान में उसने सबकुछ चौपट करा दिया है, लेकिन यह साफ था कि वोल्का बहुत क्षुब्ध है। इसका सारा

दोष और किसी पर नहीं बल्कि खुद हसन अब्दुर्रखमान इब्न होताभ पर ही था।

"ऐ चाँद से वोल्का! क्या तुम कुछ बहुत ही मजेदार और अजीबो-गरीब साहस की कहानियाँ सुनना चाहोगे?" उसने पूछा, "जैसी कि शायद तुमने नहीं सुनी होंगी···वह कहानी···बगदाद के हज्जाम के तीन पालतू काले मुर्गों और लँगड़े वेर की कहानी! या उस ऊँट की कहानी जो ताँबे का था और जिसका कूबड़ चाँदी का था। या जैसे भिश्ती अहमद और उसके जादुई घड़े की कहानी!" कहते हुए उसने वोल्का की ओर देखा और बोला, "हम लोग इस बैंच पर बैठ जायें तो अच्छा रहे। क्योंकि इस शिक्षा-प्रद और लम्बी कहानी को खड़े-खड़े सुनते हुए तुम्हारे पैर न थक जायें!"

वोल्का ने 'हाँ' कहा और दोनों एक नीबू के पेड़ की छाया तले बैठ गये।

लगातार तीन घण्टे तक वह मजेदार कहानी चलती रही। अन्त में उसने इन शब्दों के साथ उस कहानी को खत्म किया--"लेकिन इससे भी ज्यादा मजेदार कहानी उस ताँबे के ऊँट की है जिसका कूबड़ चाँदी का था!" और वह ऊँट की कहानी सुनाने लगा—"और तब उसने लुहार की दूकान से एक कोयला उठाया और दीवार पर ऊँट का चित्र बना दिया। तस्वीर का बनाना था कि उसकी पूँछ हिलने लगी और सिर भी हरकत करने लगा। इतना ही नहीं वह ऊँट दीवार से निकलकर पत्थर के फर्श पर चलने लगा!" इतना कहकर वह देखने के लिए चुप हो गया कि वोल्का पर इस बात का क्या असर हो रहा है कि तस्वीर जानदार हो गयी!

होताभ थोड़ा-सा हताश ही हुआ क्योंकि वोल्का ने पहले भी बहुत-से व्यंग्यचित्र देखे थे। लेकिन उसकी कहानी सुनते हुए उसके मन में एक विचार उठा और वह बोला, "सुनो, एक बात है···चलो हम लोग सिनेमा देख आयें। तुम कहानी बाद में सुनाना।"

"तुम्हारा हर शब्द मेरे लिए हुक्म है!" होताभ ने सादर कहा, "लेकिन एक बात बताओ, सिनेमा से तुम्हारा क्या मतलब है? क्या यह हमाम की तरह की कोई जगह है? या शायद वह···वह···उसे तुम क्या कहते हो··· वह बाजार! जहाँ लोग चहलकदमी करते हुए जान-पहचानवालों और दोस्तों से गप लड़ाते हैं···वहीं चलने के लिए कह रहे हो?"

"अरे कोई भी बच्चा बता सकता है कि सिनेमा क्या होता है? वह एक···" यह कहते हुए उसने हाथ से चलने का इशारा किया और बोला, "अब तो तुम चल ही रहे हो, वहाँ अपने आप सब मालूम हो जायेगा।"

सिनेमा के टिकटघर पर एक सूचना लगी हुई थी—शाम के शो में

18 वर्ष से कम उम्र के लड़कों को जाने की इजाजत नहीं है।

यह पढ़कर वोल्का उदास हो गया। उसकी उदासी को देखते ही होताभ ने पूछा, "क्या बात है वोल्का ?"

"कुछ नहीं, हमें देर हो गयी। हमें दिनवाला शो देखने आना चाहिए था। इस शो में 18 से कम उम्र के लड़कों को जाने की इजाजत नहीं है। अब क्या किया जा सकता है ? असल में मैं अभी घर भी नहीं जाना चाहता !"

तभी एकाएक उसने महसूस किया कि उसके दायें हाथ में दो टिकट आ गये हैं।

"आओ···" होताभ ने कहा, "अब तुम्हें कोई नहीं रोकेगा !"

"सचमुच !"

"हाँ-हाँ बिलकुल ! यह उतना ही सही है जितना कि तुम्हारा उज्ज्वल भविष्य !" यह कहते हुए उसने वोल्का को पास लगे हुए बड़े शीशे की ओर ठेल दिया। शीशे में घनी दाढ़ीवाला उसका ही एक और चेहरा उसे ताक रहा था। अपने को इस रूप में देखकर वोल्का दंग रह गया और सहसा विश्वास नहीं कर पाया।

सिनेमा में अजीबोगरीब घटना

अपने करतब से बेहद खुश होताभ वोल्का को सीढ़ियों से ऊपर चलने के लिए खींचने लगा, जहाँ लोग सिनेमाघर में घुसने से पहले इन्तजार में खड़े होते हैं। भीतर जानेवाले दरवाजे पर जेन्या खड़ा हुआ था, वही अपने दर्जे का तेज विद्यार्थी जेन्या, जिससे सब लड़के ईर्ष्या करते हैं। जेन्या सिनेमा के मैनेजर का भतीजा था, इसीलिए उसे शाम का शो देखने की इजाजत मिल गयी थी। लेकिन खुश होने के बजाय वह बड़ा परेशान-सा था। वह बिल्कुल अकेला खड़ा था। वह किसी ऐसे साथी की खोज में था जिससे वह यह बात कर सके कि वोल्का ने आज सुबह भूगोल की परीक्षा में क्या तमाशा किया। लेकिन जान-पहचानवाला कोई चेहरा नजर नहीं आ रहा था।

यह सोचकर कि शायद नीचे कोई मिल ही जाये, वह जीने से नीचे चल दिया। आखिरी सीढ़ी से उतरते ही उसकी टक्कर एक बूढ़े आदमी से हो गयी, जिसने उसका पैर कुचल दिया था—बूढ़े की पोशाक सफेद थी और वह तिल्ले का काम किये हुए मोरक्को के जूते पहने हुए था और किसी को लगभग खींचते हुए ऊपर जाने की जल्दी में था। वह किसे खींच रहा था ?

वोल्का को ! और पता नहीं क्यों वोल्का अपना चेहरा दोनों हाथों से छिपाये हुए था ।

"वोल्का !" ज़ेन्या खुशी से चिल्लाया, "वोल्का !"

इस वक्त की मुलाकात से ज़ेन्या की तरह वोल्का कतई खुश नहीं हुआ था । यहाँ तक कि उसने यही जाहिर किया कि अपने सबसे अच्छे दोस्त ज़ेन्या को पहचान ही नहीं पाया है । सिनेमा शुरू होने से पहले कुछ संगीत का कार्यक्रम चल रहा था, लोगों की भीड़ उसे सुन रही थी । ज़ेन्या से बचने के लिए वोल्का एकदम तेजी से उस भीड़ में घुस गया ।

"हुँ ! मैं भी परवाह नहीं करता ।" ज़ेन्या ने गुस्से से कहा और आइसक्रीम खरीदने चला गया ।

वोल्का और उस अजीब बूढ़े आदमी के चारों तरफ भीड़ जमा हो गयी थी, ज़ेन्या उस वक्त आइसक्रीम खरीद रहा था । लौटकर उसने भीड़ में घुसकर उन लोगों को देखने की कोशिश की जिनके चारों ओर लोग जमा होते जा रहे थे । उन दोनों को लोग बड़ी हैरत से देख रहे थे । वोल्का भीड़ में घिरा हुआ था इसलिए ज़ेन्या उसे देख नहीं पाया । मजमा बढ़ता ही जा रहा था। लोग हॉल में से उठ-उठकर आ रहे थे, खाली होती कुर्सियों की फट-फट आवाज बढ़ती जा रही थी क्योंकि जो लोग बैठे हुए संगीत सुन रहे थे वे भी बाहर की ओर लपकते हुए चले आ रहे थे । और संगीत खाली कुर्सियों के सामने चलता रहा ।

इधर-उधर कोहनी मारकर रास्ता बनाने की कोशिश करते हुए ज़ेन्या ने किसी से पूछा, "हुआ क्या है ? अगर कोई दुर्घटना हुई है तो फोन करके मदद माँगी जा सकती है···अरे भई, मेरे चाचाजी यहाँ के मैनेजर हैं···आखिर बात क्या है ?"

लेकिन ऐसा लग रहा था कि बात का पता किसी को भी नहीं है । सब उचक-उचककर देखने की कोशिश कर रहे थे पर कोई भी नहीं देख पा रहा था । हर आदमी दूसरे से पूछता था, "क्या बात है भाई !" और सही बात का पता पाना चाहता था···खासा हंगामा मच गया । हुरदंगा इतना बढ़ गया कि जोर-जोर से बजते संगीत की आवाज भी डूब गयी, हालाँकि बजानेवाले पूरी ताकत से बाजे बजा रहे थे ।

आखिर ज़ेन्या के चाचाजी आये, लपककर एक कुर्सी पर चढ़े और चीखे—"हटिए···यहाँ से हटिए ! ऐसी खास बात क्या है ? क्या आप लोगों ने पहले कभी दाढ़ीवाला बच्चा नहीं देखा ?"

और उधर, जहाँ लोग चाय वगैरह पीते हैं, जैसे ही यह आवाज पहुँची तो लोग दाढ़ीवाले बच्चे को देखने के लिए टूट पड़े ।

"वोल्का !" झेन्या पूरी ताकत से चीखा क्योंकि भीड़ को चीरकर वहाँ पहुँच पाना सम्भव नहीं था" फिर हड़बड़ाकर उसने किसी से कहा, "अरे मैं देख नहीं पा रहा हूँ। आप देख रहे हैं? क्या उसके बहुत बड़ी दाढ़ी है?"

परेशान वोल्का उत्तेजना से चीख पड़ा, "उफ्...क्या हुआ अगर..."

"बेचारा लड़का!" तमाशबीनों ने आह भरी।

"कितने दुख की बात है!"

"इसका इलाज नहीं हो सकता?"

वोल्का की तरफ लोगों के आकर्षण को पहले तो होताब ने गलत समझा। वह समझा था कि लोग वोल्का के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए जमा हो रहे हैं। फिर समझकर उसे गुस्सा आने लगा।

"भले आदमियो! हट जाओ यहाँ से!" भीड़ और संगीत के शोर को दबाते हुए होताब की आवाज गूँजी, "हट जाओ नहीं तो बहुत बुरा होगा" मैं सबको मजा चखा दूंगा!"

किसी ने भी उसकी धमकियों पर कान नहीं दिया। इतने में हॉल के दरवाजे खुले और लोग फौरन अपनी जगहों पर बैठने के लिए भीतर की ओर भागे। झेन्या को अब मौका मिला था—वह उस विलक्षण लड़के को देखना चाहता था। लेकिन वही भीड़ जो अभी तक उसे कुछ भी देखने नहीं दे रही थी, उसे अपने रेले में भीतर खींच ले गयी।

पहली कतार में जैसे ही झेन्या को सीट मिली कि रोशनी बुझ गयी। "खैर..." झेन्या ने राहत की साँस लेते हुए सोचा, "वक्त पर आ गया। अब बाहर निकलते वक्त दाढ़ीवाले लड़के को देखूंगा!" लेकिन वह अपनी सीट पर बराबर कुलबुलाता रहा। वह उस सनकी को एक झलक-भर देखना चाहता था जो शायद उसके पीछे कहीं बैठा था।

"क्या कुलबुला रहे हो! परेशानी होती है?" बगल में बैठे हुए आदमी ने कहा, "सीधे बैठो न!"

वोल्का और होताब सबसे आखिर में भीतर घुसे। सच बात तो यह थी कि वोल्का इतना परेशान हो गया था कि सिनेमा देखे बगैर ही वापस जाना चाहता था।

तब होताब ने समझाया—"तुम दाढ़ी से नाराज हो! मैं समझता था कि तुम खुश होगे" खैर अगर यह बात है तो मैं सब ठीक कर दूंगा, बस पहले जरा अपनी सीटें खोज लें। इसमें क्या रखा है। लोगों के साथ-साथ हम भी चले चलें, क्योंकि यह 'सिनेमा' नाम की चीज को जानने के लिए मैं उतावला हो रहा हूँ। इतने गरम दिन में भी बड़े-बड़े लोग जब इसे देखने आये हैं तो यह जरूर कोई आश्चर्यजनक चीज होगी।"

शब्द भी समझ में नहीं आता।"

"ऐ नौजवान मुक्तिदाता! मुझ पर गुस्सा मत करना। मैं तुम्हारी दाढ़ी अब गायब नहीं कर सकता···मैं तरकीब भूल गया हूँ।"

"अरे भई, यहाँ तो तसल्ली करो!" कोई बड़बड़ाया, "अपनी बातें घर पर करना। ख्वामखाह सबको परेशान कर रहे हो। चुप नहीं बैठ सकते तो मैं मैनेजर को बुलाऊँ?"

"इस बुढ़ापे में यह बेइज्जती भी बदी थी," होताभ ने कहा, "कि सीधा-सादा जादू भी भूल गया।"

"यह बड़बड़ाना बन्द करो!" वोल्का ने चिढ़ छिपाते हुए कहा, "इस दाढ़ी को मैं कब तक लिये घूमता रहूँगा?"

"ओहो, मैं कहता हूँ डर से परेशान क्यों हो, ऐ नौजवान मालिक! अभी तो मैंने छोटा-मोटा जादू चलाया था। दो दिन में ही बच्चे की तरह तुम्हारा चेहरा चिकना और साफ हो जायेगा। शायद तब तक मुझे याद भी आ जाये कि जादू की इन छोटी-छोटी बातों का काट क्या है?"

तभी खेल शुरू हुआ और अभिनेताओं की बोलती-चालती तस्वीरें आने लगीं। होताभ बुदबुदाया—

"हुँ! यह तो बिलकुल सीधी-सी बात है, बड़ी सरल। ये सब लोग दीवार से बाहर आये हैं। इस तरह की चीजें मुझे आश्चर्य में नहीं डाल सकतीं। मैं खुद कर सकता हूँ यह सब!"

"तुम रत्ती-भर नहीं समझे।" वोल्का ने उसकी बेहूदी बातें सुनीं और मुस्कराकर बोला, "तुम जानना ही चाहते हो तो सुनो, फिल्मों के अपने सिद्धान्त···"

चारों तरफ से हिसहिसाहट सुनायी दी। वोल्का का बोलना बीच में ही रह गया। एक क्षण के लिए होताभ बेहोश-सा दिखायी पड़ा, उसके बाद वह शरीर को ऐसे करने लगा जैसे कि ऐंठन हो रही हो। वह मुड़-मुड़कर नवीं कतार की ओर कभी-कभी देखता जहाँ दोनों अभिनेता बैठे हुए थे। होताभ इस बारे में निश्चित मत था कि वे दोनों अभिनेता सचमुच में कहीं उसके पीछे चुपचाप बैठे हुए हैं। वहीं से वे दौड़ते हुए बहुत तेजी से उसके सामने से निकल जाते हैं और रहस्यमय हॉल की उस रोशन दीवार पर पहुँच जाते हैं।

वह भय से पीला पड़ गया। भौंहें चढ़ाते हुए वह भुनभुनाया, "ऐ निडर वोल्का, पीछे देखो!"

"हाँ-हाँ! वे अभिनेता ही हैं, वही अभिनेता जो इस फिल्म में काम कर रहे हैं। वे यह देखने आये हैं कि दर्शक उनके अभिनय को पसन्द कर रहे हैं

या नहीं !"

"मुझे यह सब अच्छा नहीं लगता।" वह बोला, "यही कि आदमी दो हिस्सों में बँट जाये। यह बात समझ में नहीं आती कि अपनी दोनों बाँहें मोड़कर इस कुर्सी में बैठे-बैठे हवा की तेजी से कैसे भागा जा सकता है ! और यह भी एक उसी क्षण में दोनों जगह कैसे मौजूद रहा जा सकता है।"

"इसमें परेशान होने की बात ही नहीं है !" वोल्का ने उसे सँभालते हुए कहा, "औरों को देखो ! कोई भी डर नहीं रहा है। यह सब कैसे होता है, मैं तुम्हें बाद में बताऊँगा।"

तभी फिल्म में एक रेलगाड़ी धड़धड़ाती हुई निकल गयी। होताब ने वोल्का की बाँह पकड़ ली ! वह डर के मारे पसीने में लथपथ हो गया। घबराकर धीरे-से बोला, "इस आवाज को मैं पहचानता हूँ। यह जिन्नों के शहंशाह जिरजिस की आवाज है। जल्दी से भागो···वोल्का जल्दी से भागो !"

"क्या बकते हो। सीधे बैठे रहो। यहाँ कोई डर नहीं है।"

"जो कुछ तुम कह रहे हो, सुन रहा हूँ···मान लेता हूँ !" होताब ने अदब से कहा पर वह अब भी काँप रहा था।

और जब एक रेलगाड़ी सामने से धड़धड़ाती हुई आती दिखायी दी और यह लगने लगा कि यह पर्दे से सीधे दर्शकों पर चढ़ आयेगी तो हॉल भयातुर चीखों से भर गया।

"भाग चलो···भाग चलो !" होताब चीखकर बाहर भाग रहा था। बाहर जानेवाले दरवाजे पर उसे वोल्का का ध्यान आया तो लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ आया, वोल्का को बाँह से पकड़ा और बाहर खींच ले गया।

"खतरे से पहले ही भाग चलना चाहिए वोल्का ! खतरे से पहले।"

"तुम काहे को चीख रहे थे ? किस बात से घबरा रहे थे ?" सड़क पर पहुँचकर वोल्का ने गुस्से में पूछा।

"इकरास की चाची के पोते रेजमुस का वह खौफनाक लड़का शहंशाह जिरजिस मौत का पैगाम लिये आग उगलता हुआ ठीक हमारी तरफ आ रहा था ! मैं चीखता न तो क्या करता ? सबसे खौफनाक खतरा तुम्हारी जान के लिए मौजूद था ! और मैं क्या करता ?"

"अरे कौन जिरजिस···कैसी चाची ! वह तो मामूली रेलगाड़ी थी।"

"तुम मुझ बूढ़े जिन्न हसन अब्दुर्रहमान इब्न होताब को यह बताना चाहते हो कि शैतान क्या होता है ?" उसने तल्खी से पूछा।

वोल्का ने सोचा—सर खपाना बेकार है क्योंकि होताब को यह

में कि सिनेमा क्या है और रेलगाड़ी क्या है, घण्टा-डेढ़ घण्टा बेकार ही लगेगा।

धीरे-धीरे होताभ जब कुछ ठीक हुआ तो उसने पूछा, "अब बताओ, तुम क्या चाहते हो ?"

"तुम ऐसे पूछ रहे हो जैसे तुम्हें मेरी इच्छा का पता न हो ! मैं इस दाढ़ी से पिण्ड छुड़ाना चाहता हूँ !"

"मुझे अफसोस है कि तुम्हारी यह इच्छा मैं अभी पूर्ण नहीं कर सकता। कोई और इच्छा बताओ, बस बता-भर दो, चुटकी बजाते इच्छा पूरी हो जायेगी।"

"मैं दाढ़ी बनवाना चाहता हूँ, जल्दी-से-जल्दी। तुम मुझे हज्जाम की दुकान पर ले चलो।"

वे दोनों बात-की-बात में हज्जाम की दुकान पर पहुँच गये।

"बाल बनवाना है ?" हज्जाम ने पूछा।

"नहीं, दाढ़ी बनाओ !" उस लड़के ने खोखली आवाज में जवाब दिया और वह रूमाल हटा लिया जिससे उसके चेहरे का ज्यादा हिस्सा अब तक छिपा हुआ था।

परेशानियों की शाम

अच्छी बात यह थी कि वोल्का के बाल काले नहीं थे। ज़ेन्या अगर कहीं दाढ़ी बनवाता तो निश्चय ही उसके गालों पर नीलापन-सा दिखायी पड़ता, लेकिन हज्जाम की दूकान से निकलने पर वोल्का के गाल वैसे ही थे जैसे कि उसके दोस्तों के।

सात के बाद का वक्त था, बाहर अभी रोशनी बाकी थी। गर्मी बहुत थी।

"तुम्हारे इस शहर में कोई ऐसी जगह है जहाँ शरबत बिकता हो या पीने की कोई ठण्डी चीज...शराब की तरह की, जहाँ मैं प्यास बुझा सकूँ ?" होताभ ने पूछा।

"अच्छी याद दिलायी, एक गिलास लेमनेड से मजा आ जायेगा।"

रसों और ठण्डे पेय पदार्थों की जो पहली दूकान उन्हें दिखायी दी, उसी में वे घुसे और एक मेज पर जम गये।

"दो गिलास लेमनेड चाहिए !" वोल्का ने कहा। बैरे ने सिर हिलाया और लेने चल दिया। होताभ ने तभी उसे गुस्से से पुकारा, "ऐ बेकार के

आदमी ! फौरन वापस आओ। हमारे नौजवान दोस्त और मालिक की आज्ञा लेने का क्या यही तरीका है ?"

"होताभ, चुप बैठो, सुनते हो, चुप !" वोल्का फुसफुसाया। लेकिन होताभ ने उसके मुँह पर हलके से अपना हाथ रख दिया, "जिस वक्त मैं तुम्हारे सम्मान की रक्षा के लिए कुछ किया करूँ उस वक्त टाँग मत अड़ाया करो···मैं जानता हूँ तुम सीधे आदमी हो इसीलिए बैरे को फटकारना नहीं चाहते।"

"तुम नहीं समझते," वोल्का ने भीतर-भीतर घबराते हुए प्रतिवाद किया, "होताभ···तुम देख नहीं रहे हो कि···"

कहते-कहते वह एकदम ठण्डा पड़ गया, उसे लगा कि बोल सकने की ताकत बिलकुल जाती रही है। वाणी खो गयी है। वह होताभ और असमंजस में पड़े बैरे के बीच में कूदकर खड़ा हो जाना चाहता था। लेकिन उसने पाया कि वह एक अँगुली तक नहीं हिला सकता।

यह सब होताभ की कारस्तानी थी। उसके खयाल से यह जो सम्मान का झगड़ा था, उसमें वोल्का दखल दे, वह यह नहीं चाहता था। उसे रोकने के लिए ही होताभ ने कान की लब दबाया और वोल्का को एक तरह से गूँगा और अपाहिज बना दिया।

"हमारे नौजवान मालिक ने जो आज्ञा दी, उसका जवाब तुमने कैसे दिया ?" होताभ ने बैरे से दुबारा पूछा।

"मैं आपकी बात नहीं समझा।" बैरे ने कोमलता से कहा, "पहली बात तो यह कि वह आज्ञा नहीं अनुरोध था और मैं उसे पूरा करने जा रहा था। दूसरे, अजनबियों से आदर से बोलना हमारी रीति है। मुझे ताज्जुब है कि एक सभ्य आदमी को जो जानना चाहिए, आप उतना भी नहीं जानते !"

"तुम मुझे सलीका सिखाने की जुर्रत कर रहे हो ?" होताभ बिगड़ा, "माफी माँगो, नहीं तो अभी धूल हो जाओगे !"

"आपको शर्म आनी चाहिए !" हिसाब रखनेवाली औरत ने कहा। इस लज्जाजनक घटना को देखनेवाली वही अकेली गवाह थी, क्योंकि कैफे में वोल्का और होताभ के अलावा और कोई नहीं था। वह बोली, "आप इतने उजड्डपने से पेश आते हैं ! और अपनी उम्र के आदमी के साथ।"

"घुटने टेककर माफी माँगो !" होताभ दहाड़ा, "और तुम भी !" उसने हिसाब रखनेवाली औरत से कहा। तभी एक और बैरा दौड़कर मदद के लिए आया। उसे देखते ही होताभ चीखा, "और तुम भी ! तुम तीनों घुटने टेककर मेरे नौजवान दोस्त से माफी माँगो !" कहते-कहते होताभ का शरीर बढ़ने लगा···वह इतना लम्बा हो गया कि सिर छत को छूने लगा।

बहुत ही आश्चर्यजनक और खौफनाक दृश्य था। हिसाब रखनेवाली औरत और दूसरा बैरा—दोनों ही बेहोश हो गये। पहला बैरा डर से पीला पड़ गया लेकिन उसने शान्ति से कहा, "बड़ी गलत बात है यह। सार्वजनिक जगहों में आपको ठीक से पेश आना चाहिए। और अगर आप वशीकरण जाननेवाले एक भले जादूगर हैं तब तो आपको और भी अच्छी तरह पेश आना चाहिए!"

"ओह! घुटने टेको!" होताभ चिल्लाया, "तुमने सुना नहीं···घुटने टेको!"

तीन हजार सात सौ बत्तीस साल की उसकी उम्र में यह पहला मौका था जबकि एक साधारण नश्वर व्यक्ति ने उसके हुक्म को मानने से इनकार किया था। होताभ को लगा कि अगर उसकी बात न मानी गयी तो वोल्का की नजरों में वह गिर जायेगा। वोल्का उसकी दोस्ती की कद्र करे और इज्जत से उसे देखे, इस बात के लिए वह बुरी तरह चिन्तित था।

"ऐ हकीर आदमी! अगर जान की परवाह है तो घुटने टेक दे!"

"इस बात का सवाल ही कहाँ उठता है!" उस बहादुर बैरे ने काँपती हुई आवाज में कहा, "मैं समझ ही नहीं पा रहा हूँ कि आप इतना गुस्सा क्यों होते जा रहे हैं। अगर आपके खयाल से कोई गलती हुई है तो 'शिकायत और सुझाव' की कापी में आप दर्ज कर सकते हैं। कोई भी उसमें लिख सकता है। एक बात और बता दूँ—बहुत बड़े-बड़े और मशहूर जादूगर और वशीकरण जाननेवाले इस कैफे में आते रहते हैं। लेकिन किसी ने भी ऐसा व्यवहार नहीं किया जैसा आप कर रहे हैं, क्यों कात्या, ठीक है न?" पास आकर खड़ी मित्र से बैरे ने कहा।

कात्या ने नाक सिकोड़ते हुए कहा, "ये घुटने टेकने को कह रहे हैं! यह तो सरासर जंगलीपन है!"

"जंगलीपन!" होताभ बिगड़ पड़ा। वह आपे से बाहर हो गया था, "इतने मगरूर हो तुम लोग! अपनी हरकतों के लिए तुम लोग खुद ही पछताओगे!" कहते हुए उसने हवा में हाथ से कुछ बनाया और दाढ़ी में से तीन बाल तोड़े। वोल्का के कान के पास लाकर उसने बालों के टुकड़े किये। बालों के टुकड़े करना था कि बूढ़ा खुद ही जैसे नाखुश हो उठा क्योंकि वोल्का बोलने लगा और चलने-फिरने भी लगा। ऐसा होते ही उसने सबसे पहले होताभ का हाथ पकड़ लिया और चीखा, "ये तुम क्या कर रहे हो, होताभ?"

"मैं इन्हें मजा चखाना चाहता हूँ! मैं अब क्या बताऊँ···मैं इन्हें बिजली की आवाज-भर से मार डालता! वैसे इतना तो कोई भी गया-

बोता इफरित भी कर सकता है।"

स्थिति की गम्भीरता समझते हुए भी वोल्का को लगा कि होताभ को वैज्ञानिक सचाई बतानी ही पड़ेगी। वह बोला, "बिजली की गरज से कोई भी नहीं मर सकता···," यह कहते हुए भी भीतर-भीतर वह बेहद परेशान था कि बैरे के सिर पर झूलती हुई मौत को कैसे टाला जाये, इसलिए वह आगे बोला, "हाँ, बिजली अगर गिर पड़े तो आदमी को मार सकती है··· गरजन तो सिर्फ एक आवाज-भर है। कोई नुकसान नहीं होता उससे।"

"मैं इस बात से सहमत नहीं हूँ।" होताभ ने रुखेपन से कहा, क्योंकि वह एक नौजवान के अनुभवहीन तर्क के सामने झुकना नहीं चाहता था, "मेरे खयाल से तुम्हारी बात गलत है। लेकिन अब मेरा इरादा बदल गया है। मैं इन्हें बिजली की गरजन से नहीं मारूँगा बल्कि गौरैया बनाकर छोड़ दूँगा। यही सबसे अच्छा होगा।"

"लेकिन क्यों ?"

"इन्हें सजा देना जरूरी है! बदमाशों को जरूर सजा मिलनी चाहिए।"

"अरे तो इन्हें सजा देने की कोई वजह भी हो! सुन रहे हो कि नहीं।" वोल्का ने होताभ का हाथ कसकर पकड़ लिया, क्योंकि वह बाल तोड़ने ही वाला था।

"अच्छा, ठीक है, तो तुम अपनी करामात करो!" होताभ बालों को टुकड़े-टुकड़े करने ही जा रहा था कि वोल्का चीखा, "तुम उन्हें गौरैया बना दो, चाहे मछली बना दो। जो मन में आये बना दो। लेकिन इसी पल हमारी-तुम्हारी दोस्ती खत्म। तुम्हारी हरकतें मुझे पसन्द नहीं, समझे! चलो···बनाओ उन्हें गौरैया···यही होगा न कि बिल्ली उन्हें देखते ही दबोचकर खा जायेगी! और क्या?"

होताभ भौंचक्का खड़ा रह गया। फिर बोला, "कैसी बातें कर रहे हो! मैं यह सब इसलिए कह रहा हूँ कि लोग तुम्हारे पास तक इज्जत से भरे हुए पहुँचें। वह इज्जत जो तुम्हें मिलनी चाहिए।"

"नहीं, नहीं, मैं यह कतई नहीं चाहता!"

"तुम्हारा हर शब्द मेरे लिए हुक्म है!" होताभ आदर से बोला। वह भीतर-भीतर परेशान भी था। आखिर वोल्का की यह कमजोरदिली कैसी थी। वह बोला, "तो ठीक है···मैं इन्हें चिड़िया नहीं बनाऊँगा, बस।"

"और कुछ भी नहीं बनाओगे!"

"अच्छा बाबा, कुछ भी नहीं करूँगा।" वह जैसे दुम दबाकर सबकुछ मान गया। लेकिन तोड़े हुए बाल वह इकट्ठे किये हुए

बहुत ही आश्चर्यजनक और खौफनाक दृश्य था। हिसाब रखनेवाली औरत और दूसरा बैरा—दोनों ही बेहोश हो गये। पहला बैरा डर से पीला पड़ गया लेकिन उसने शान्ति से कहा, "बड़ी गलत बात है यह। सार्वजनिक जगहों में आपको ठीक से पेश आना चाहिए। और अगर आप वशीकरण जाननेवाले एक भले जादूगर हैं तब तो आपको और भी अच्छी तरह पेश आना चाहिए !"

"ओह ! घुटने टेको !" होताभ चिल्लाया, "तुमने सुना नहीं···घुटने टेको !"

तीन हजार सात सौ बत्तीस साल की उसकी उम्र में यह पहला मौका था जबकि एक साधारण नश्वर व्यक्ति ने उसके हुक्म को मानने से इनकार किया था। होताभ को लगा कि अगर उसकी बात न मानी गयी तो वोल्का की नजरों में वह गिर जायेगा। वोल्का उसकी दोस्ती की कद्र करे और इज्जत से उसे देखे, इस बात के लिए वह बुरी तरह चिन्तित था।

"ऐ हकीर आदमी ! अगर जान की परवाह है तो घुटने टेक दे !"

"इस बात का सवाल ही कहाँ उठता है !" उस बहादुर बैरे ने काँपती हुई आवाज में कहा, "मैं समझ ही नहीं पा रहा हूँ कि आप इतना गुस्सा क्यों होते जा रहे हैं। अगर आपके खयाल से कोई गलती हुई है तो 'शिकायत और सुझाव' की कापी में आप दर्ज कर सकते हैं। कोई भी उसमें लिख सकता है। एक बात और बता दूँ—बहुत बड़े-बड़े और मशहूर जादूगर और वशीकरण जाननेवाले इस कैफे में आते रहते हैं। लेकिन किसी ने भी ऐसा व्यवहार नहीं किया जैसा आप कर रहे हैं, क्यों कात्या, ठीक है न ?" पास आकर खड़ी मित्र से बैरे ने कहा।

कात्या ने नाक सिकोडते हुए कहा, "ये घुटने टेकने को कह रहे हैं ! यह तो सरासर जंगलीपन है !"

"जंगलीपन !" होताभ बिगड़ पडा। वह आपे से बाहर हो गया था, "इतने मगरूर हो तुम लोग ! अपनी हरकतों के लिए तुम लोग खुद ही पछताओगे !" कहते हुए उसने हवा में हाथ से कुछ बनाया और दाढ़ी में से तीन बाल तोड़े। वोल्का के कान के पास लाकर उसने बालों के टुकड़े किये। बालों के टुकड़े करना था कि बूढ़ा खुद ही जैसे नाखुश हो उठा क्योंकि वोल्का बोलने लगा और चलने-फिरने भी लगा। ऐसा होते ही उसने सबसे पहले होताभ का हाथ पकड़ लिया और चीखा, "ये तुम क्या कर रहे हो, होताभ ?"

"मैं इन्हें मजा चखाना चाहता हूँ ! मैं अब क्या बताऊँ···मैं इन्हें बिजली की आवाज-भर से मार डालता ! वैसे इतना तो कोई भी गया-

बोता इफ़रित भी कर सकता है।"

स्थिति की गम्भीरता समझते हुए भी वोल्का को लगा कि होताब को वैज्ञानिक सचाई बतानी ही पड़ेगी। वह बोला, "बिजली की गरज से कोई भी नहीं मर सकता…," यह कहते हुए भी भीतर-भीतर वह बेहद परेशान था कि बैरे के सिर पर झूलती हुई मौत को कैसे टाला जाये, इसलिए वह आगे बोला, "हाँ, बिजली अगर गिर पड़े तो आदमी को मार सकती है… गरजन तो सिर्फ एक आवाज-भर है। कोई नुकसान नहीं होता उससे।"

"मैं इस बात से सहमत नहीं हूँ।" होताब ने रूखेपन से कहा, क्योंकि वह एक नौजवान के अनुभवहीन तर्क के सामने झुकना नहीं चाहता था, "मेरे ख़याल में तुम्हारी बात ग़लत है। लेकिन अब मेरा इरादा बदल गया है। मैं इन्हें बिजली की गरजन से नहीं मारूँगा बल्कि गौरैया बनाकर छोड़ दूँगा। यही सबसे अच्छा होगा।"

"लेकिन क्यों?"

"इन्हें सज़ा देना जरूरी है! बदमाशों को ज़रूर सज़ा मिलनी चाहिए।"

"अरे तो इन्हें सज़ा देने की कोई वजह भी हो! सुन रहे हो कि नहीं।" वोल्का ने होताब का हाथ कसकर पकड़ लिया, क्योंकि वह बाल तोड़ने ही वाला था।

"अच्छा, ठीक है, तो तुम अपनी करामात करो!" होताब बालों को टुकड़े-टुकड़े करने ही जा रहा था कि वोल्का चीखा, "तुम उन्हें गौरैया बना दो, चाहे मछली बना दो। जो मन में आये बना दो। लेकिन इसी पल हमारी-तुम्हारी दोस्ती ख़त्म। तुम्हारी हरकतें मुझे पसन्द नहीं, समझे! चलो…बनाओ उन्हें गौरैया…यही होगा न कि बिल्ली उन्हें देखते ही दबोचकर खा जायेगी! और क्या?"

होताब भौंचक्का खड़ा रह गया। फिर बोला, "कैसी बातें कर रहे हो! मैं यह सब इसलिए कह रहा हूँ कि लोग तुम्हारे पास तक इज्जत से भरे हुए पहुँचें। वह इज्जत जो तुम्हें मिलनी चाहिए।"

"नहीं, नहीं, मैं यह कतई नहीं चाहता।"

"तुम्हारा हर शब्द मेरे लिए हुकम है।" होताब आदर से बोला। वह भीतर-भीतर परेशान भी था। आख़िर वोल्का की यह कमज़ोरदिली कैसी थी। वह बोला, "तो ठीक है…मैं इन्हें चिड़िया नहीं बनाऊँगा बस।"

"और कुछ भी नहीं बनाओगे!"

"अच्छा बाबा, कुछ भी नहीं करूँगा।" वह जैसे दुम दबाकर सबकुछ मान गया। लेकिन तोड़े हुए बाल वह इकट्ठे किये हुए था और लगता था

ह उन्हें टुकड़े-टुकड़े करेगा।
"अरे इन्हें क्यों तोड़ रहे हो ?" वोल्का ने पूछा।
"मैं इस वेहूदे होटल की हर चीज, मेज, कुर्सियाँ वगैरह धूल में मिला
।"
"तुम्हारा दिमाग खराव हो गया है।" वोल्का ने नाराज होते हुए
हा, "अरे बुद्धू मियाँ···यह सरकारी सम्पत्ति है !"
"क्यों जनाव ! क्या मैं जान सकता हूँ कि इस शब्द 'बुद्धू मियाँ' के
त्या अर्थ हैं ?" उसने पूछा।
वोल्का का मुंह चुकन्दर की तरह लाल हो आया, वोला, "वह···वह
देखो···मेरा मतलब है···खैर यह समझ लो कि बुद्धू मियाँ का मतलब है
बुद्धिवाला आदमी···यानी समझदार आदमी !"
होताभ ने आगे किसी वातचीत में इस्तेमाल करने के लिए उस शब्द
को याद कर लिया। वह वोला, "लेकिन···"
"लेकिन-वेकिन कुछ नहीं। मैं तीन तक गिनती गिनूंगा और अगर
तीसरे पर तुम इस होटल से बाहर नहीं निकले तो हमारी दोस्ती खत्म···हाँ
तो मैं गिनता हूँ एक···दो···त···ती···" वोल्का तीन की गिनती पूरी भी
नहीं कर पाया कि होताभ ने अपने रूप को ठीक कर लिया। वह ठीक क
का पहले जैसा हो गया। फिर उदास स्वर में वोला, "ठीक है, जो तुम
चाहते हो, वही ठीक है ! तुम्हारी मेहरवानी ही मेरे लिए सबसे कीमती
है !"
"हाँ, यह वात हुई ! बस, अव तुम इनसे माफी माँग लो और हम लोग
चलें।"
होताभ ने वैरे को घूरा और वोला, "तुम इस नौजवान को दुआ दो कि
इसने तुम्हें वचा लिया !" वोल्का ने सुना और समझ लिया कि इस होताभ
से माफी मँगवाना वहुत मुश्किल है, इसलिए वह खुद ही वोला, "आप लोग
हमें माफ कर दें ! इन वूढ़े मियाँ पर भी अव गुस्सा न करें। यह परदेसी हैं
और अपने लोगों के तौर-तरीके नहीं जानते···अच्छा, नमस्ते !"
"नमस्ते !" वैरे ने धीरे-से कह दिया।
वे लोग अभी भी घवराये हुए थे। परेशानी के साथ-साथ डरे हुए भी
थे। लेकिन वे इस वात की कल्पना तक नहीं कर पा रहे थे कि कितना वड़ा
खतरा टल गया है। वोल्का और होताभ को वाहर जाते हुए वे देखते रहे।
वे तव तक ताकते रहे जव तक वूढ़ा गायव नहीं हो गया।
"पता नहीं, इस तरह के उजड्ड वूढ़े कहाँ से चले आते हैं !" कात्या
राहत की साँस लेते हुए आँख में आते हुए आँसू पोंछे।

दिलेर बैरे ने कहा, "वह पुराने जमाने का कोई जादूगर है शायद ! पेन्शन वगैरह पाता होगा, और शायद एकदम अकेला है।"

"पुराना और बूढ़ा होने से क्या ?" हिसाब रखनेवाली औरत ने कहा, "अच्छा चलो···काम करें।"

उस दिन हरकतों का अन्त वही नही हुआ। जैसे ही वोल्का और होताभ गोर्की स्ट्रीट मे पहुँचे कि एक मोटर की तेज रोशनी से उनकी आँखें बुरी तरह *चौंधिया गयीं। मरीजों को ले जानेवाली एक बड़ी मोटर शाम* की शान्ति को अपने तेज भोंपू की आवाज से बेधती हुई उन्ही पर लगभग चढ आयी।

होताभ ने अपना रंग बदला और चिल्ला पडा—"उफ्, पत्थर पड़ें मुझ *बदकिस्मत जिन्न पर ! वह शैतानों और इफरितों का बेरहम बादशाह अभी* तक दुश्मनी नही भूला है। उसी ने यह दानव मेरे पीछे भेजा है," कहते हुए वह एकदम वही से सीधा ऊपर की तरफ उछला। तीसरी या चौथी मंजिल पर वह जाकर रुका। वही से उसने अपना टोप हिलाते हुए नीचे खडे वोल्का से कहा, "मैं तुम्हें फिर खोज लूँगा ऐ वोल्क इब्न अल्योशा ! अच्छा नमस्ते !" कहकर वह हवा मे घुलकर खो गया।

सच पूछो तो बूढ़े के गायब होने मे वोल्का को खुशी हुई। उसे और भी जरूरी काम थे लेकिन घर लौटने की बात सोचकर उसे जैसे गश आने लगा।

बात भी ठीक ही थी, तुम अपने को उसकी जगह रखकर जरा सोचो ! भूगोल का इम्तहान देने के लिए वह सुबह घर से निकला था। फिर सिनेमा चला गया। उसे साढ़े छ बजे घर खाने के लिए लौटना था, और वह अब नौ बजे लौट रहा था। इम्तहान भी चौपट हो गया था। सबसे बड़ी मुसीबत तो यह थी कि उसकी दाढ़ी बनी हुई थी··· वोल्का की जो अभी तेरह बरस का भी नही हुआ था। उसने बहुत सोचा, बहुत जोर डाला दिमाग पर, लेकिन कोई भी हल नही खोज पाया। आखिर कुछ भी सोच न पाने के कारण वह घिसटता-घिसटता अपनी शान्त सडक की ओर बढने लगा।

बाहर ही दरवान ने उसे ताज्जुब से घूरा। वह नीचेवाले बडे कमरे मे पहुँचा। सीढियों से फुर्ती से ऊपर पहुँचा और गहरी साँस लेकर उसने घण्टी का बटन दबाया। किसी के पैरों की आहट हुई, फिर एक अजनबी आवाज सुनायी पडी, "कौन है ?"

"मैं हूँ !" वोल्का कहना ही चाहता था कि उसे एकाएक याद आया कि आज सुबह ही वह यह मकान बदल चुका है। नये किरायेदार का कोई भी जवाब न देकर वह सीधा नीचे भागा। आश्चर्य से घूरते हुए दरबान के

सामने से गुजरकर वह खास सड़क पर आ गया। वहाँ उसे बस मिल गयी। लेकिन यह दिन उसके लिए बदकिस्मती का दिन था। सिनेमा में शायद उसका बटुआ रह गया था। उसे बस से उतरना पड़ा और घर तक पैदल आना पड़ा।

वह अपने किसी भी सहपाठी से बिलकुल नहीं मिलना चाहता था। लेकिन गोगा, जिसे चिढ़ाने के लिए सभी 'पिल' कहते थे, उससे सामना तो होना ही था। कोढ़ में खाज तो यह थी कि इस नये बड़े मकान में आज से वे पड़ोसी बन चुके थे।

और वही हुआ, जैसे ही वह नये मकान की हद में घुसा कि पहचानी हुई तेज आवाज कानों में पड़ी, "ओए यार! वह कौन था बूढ़ा बाँगड़, जिसके साथ तुम स्कूल से टरक गये थे?" गोगा पिल दौड़कर पास आ गया था। वह बड़ी हिकारत की निगाहों से वोल्का को ताक रहा था।

"वह बाँगड़ नहीं, एक अच्छे खासे बूढ़े आदमी थे," वोल्का ने शान्ति से कहा। क्योंकि दिन लड़ाई से खत्म हो, यह उसका इरादा नहीं था, वह बोला, "वह···वह···हमारे पिताजी के दोस्त हैं···ताशकन्द के रहनेवाले हैं।"

"अगर मैं अभी तुम्हारे पिताजी के पास जाऊँ और बताऊँ कि इम्तहान में तुमने क्या-क्या कलाबाजियाँ दिखायीं तो कैसा रहे?"

"अब तुम मेरे हाथ से पिट जाओगे, समझे!" वोल्का भड़क उठा। उसकी बात से आखिर घरवाले क्या समझते? उसी गुस्से में वह चीखा, "बदमाश! बेहूदे···अभी बत्तीसी झाड़ दूंगा!"

"अरे यार, तुम तो बुरा मान गये। मैं तो मजाक कर रहा था," गोगा ने कहा और अपने कमरे में घुस गया। लेकिन यह खतरा तो अब रोज का था, क्योंकि वोल्का उसका पड़ोसी था।

भीतर घुसकर उसने दरवाजे से मुँह निकाला और चिढ़ाने के अन्दाज में बोला, "गंजे आदमी! गंजे आदमियों का देश! हा हा हा!" और जीभ निकालकर मुँह चिढ़ाते हुए वह डर से ऊपर भाग गया।

वहाँ बड़ा बिल्ला खड़ा था। साइबेरियन बिल्ला, जिसका नाम 'होमिच' था। वह 43 नम्बर के हिस्से में रहता था। फुटबाल के नामी खिलाड़ी के नाम पर ही उसका नाम रखा गया था। वह बिल्ला वहीं सीढ़ियों पर तना खड़ा गुर्रा रहा था। सामने कोई नहीं था, जिस पर वह गुर्राता।

यूँ ही गोगा ने उसके लात मार दी। 'होमिच' का चोट के दर्द से चीखना और कराहना दसवीं मंजिल पर भी बखूबी सुना जा सकता था।

उस विल्ले ने ऐसी साफ और ऊँची छलांग लगायी जैसी कि फुटबाल का खिलाड़ी छलांग लगाकर गर्व से छाती फुला लेता।

उसी के बाद कुछ ऐसा अजूबा हुआ जिसकी कतई उम्मीद नहीं थी।

आधे गज दूर दीवार से विल्ले की गुर्राहट फिर सुनायी पड़ी और वह उड़कर एकदम दूसरी तरफ पहुँच गया—जहाँ गोगा खड़ा था। ऐसा लगा कि विल्ले को रबर की दीवार ने झटके से फेंक दिया हो। और तभी लगा जैसे विल्ले ने मुँह फाड़कर साँस खींची हो और किसी के पैरों को पीछे से जैसे दबोच लिया हो। गोगा वैसे भी डरपोक था। वह डर के मारे बेजान हो गया।

'अ···अ···' वह धीरे-से जैसे कराहा। उसका शरीर ठिठुर गया था पर अपने भारी और दबे हुए पैरों को उसने किसी तरह खींचा और कमरे की तरफ बेतहाशा भागा।

जैसे ही दरवाजा खटाक से बन्द हुआ—होताब प्रकट हो गया। वह अपना बायाँ पैर देख रहा था, क्योंकि विल्ले ने पंजों से जगह-जगह नोचा था। दर्द भी बहुत हो रहा था।

यह जानकर कि वह सीढ़ियों पर अकेला ही है, होताब बड़बड़ाया, 'तेरा सत्यानाश हो···तू लड़का नहीं, कुत्ता है।'

वह चुपचाप सुनता रहा। तभी गहरे विचारों में डूबा हुआ वोल्का धीरे-धीरे सीढ़ियों से ऊपर आया।

बूढ़ा उसकी नजर के सामने नहीं पड़ना चाहता था। वह एकदम हवा में मिलकर गायब हो गया।

पिछले अध्याय की अगली किस्त

यह ठीक है कि वोल्का को एक ऐसे लड़के के रूप में पेश करने का मन होता है, जिसमें कोई कमी न हो। लेकिन इस कहानी के लेखक के जाने-माने सच्चेपन के कारण यह करना मुमकिन नहीं है। ईर्ष्या या डाह करने की भावना को अगर सचमुच एक कमी माना जाये, तो अफसोस के साथ हमें यह मानना पड़ेगा कि पिछले कुछ दिनों से उसे गोगा से बहुत ईर्ष्या हो रही थी। इम्तहान शुरू होने से बहुत पहले गोगा फड़ मारा करता था कि उसकी माँ ने कहा है कि जैसे ही वह सातवें दर्जे में पहुँचेगा, वे उसे एक अलसेशियन पिल्ला देंगी।

'हाँ-हाँ, ठीक है···इन्तजार करो', उस वक्त वोल्का ने नाक सिकोड़ने

हुए कहा था, लेकिन भीतर-ही-भीतर वह डाह से जला जा रहा था।

मन में कहीं बहुत भीतर वह यह भी मान रहा था कि गोगा पिल की बात सच्ची-सी लगती है। दर्जे के सभी लड़के जानते थे कि गोगा की माँ अपने बेटे की छोटी-से-छोटी बात पूरी करती थीं।

'माँ मुझे पिल्ला जरूर देंगी।' गोगा ने जोर देकर कहा था, 'माँ मेरी किसी चीज के लिए इनकार नहीं करतीं। उन्होंने वादा किया है तो वे खरीदकर जरूर देंगी। मान लो, कुछ गड़बड़ भी हो जाये, तो वे कहीं से पैसे उधार लेकर खरीद देंगी। तुम नहीं जानते, फैक्टरीवाले मेरी माँ को बहुत मानते हैं।'

...ऐसे उदासी के क्षणों में ही वोल्का दिन-भर घटित होनेवाली ऊटपटाँग बातों के बोझ से दबा हुआ धीरे-धीरे सीढ़ियाँ चढ़ रहा था। और उसके सामने एक दृश्य उभर रहा था कि—उधर घर के 37 नम्बर के हिस्से में गोगा पिल एक बहुत खूबसूरत झबरे पिल्ले के साथ खेल रहा है। वही गोगा पिल, जो दर्जे का सबसे लद्धड़ लड़का था, दर्जे का ही क्यों, पूरे स्कूल बल्कि पूरे मास्को का। इन्हीं खयालों में वोल्का डूबा हुआ था और अपने मन को समझा रहा था। तभी एक खयाल और आया—अच्छा, मान लो कि गोगा की माँ सचमुच पिल्ला खरीदकर देना भी चाहें, लेकिन अभी तो नहीं ही लायी होंगी! क्योंकि गोगा जब सातवें दर्जे में जायेगा, तभी उसने पिल्ला लाकर देने का वादा किया है।...और गोगा का इम्तहान तो अभी कुछ घण्टे पहले ही हुआ है। इतनी जल्दी पिल्ला खरीदना जरा मुश्किल ही है। पिल्ला कोई ऐसी चीज तो है नहीं कि दूकान में गये और कहा, 'वह पिल्ला मेरे लिए पैक कर दीजिए।' अच्छे पिल्ला के लिए काफी दिनों इधर-उधर देखना-भालना पड़ेगा।

लेकिन जैसे ही दादी ने दरवाजा खोला, उसे 37 नम्बरवाले हिस्से के बन्द दरवाजों के पार से पिल्ले की भोंकने की तेज आवाज सुनायी पड़ी।

'तो उसने पिल्ला खरीद ही दिया...' उसने कुढ़न से जलते हुए सोचा, 'अलसेशियन होगा...या बाक्सर...'

इतना सोचना-भर उसकी बर्दाश्त के बाहर था कि गोगा के पास सचमुच ही पिल्ला आ गया है। वोल्का ने दरवाजों को कसकर बन्द कर दिया ताकि उस खूबसूरत कुत्ते की भोंकने की आवाज बिलकुल न सुनायी पड़े जो उसे खींचती और उसके मन को झकझोरती थी।

फिर उसने गोगा की माँ को कुछ कहते हुए भी सुना, शायद इस बारे में कि कुत्ते ने गोगा को काट लिया है। लेकिन इससे भी उसे शान्ति नहीं मिली।

वोल्का के बाबूजी किसी सभा में रुक गये थे। वह शान्त और खुश दिखायी पड़ें, वोल्का बराबर कोशिश कर रहा था। लेकिन दादी ताड़ गयी कि वह बहुत उदास है। इसलिए उन्होंने सोचा कि खाना खिलाकर बात पूछेंगी।

और जब वोल्का ने जल्दी से खाना खा लिया तो दादी ने कहा, "हाँ, तो वोल्का! सब ठीक-ठाक है न?"

'वह···हाँ···" वह कमीज उतारता हुआ कमरे की तरफ चला गया, कुछ भी साफ-साफ नहीं बता पाया। दादी भी कमरे में पहुँची।

वोल्का ने गहरी साँस ली और कपड़े बदले। ठण्डे बिस्तर में वह टाँगें फैलाकर लेट गया। लेकिन वह अब भी व्याकुल था।

पास ही मेज पर एक मोटी-सी किताब रखी थी। उसकी जिल्द शोख रंगों की थी। वोल्का ने देखा तो एक क्षण के लिए चौंधिया-सा गया। यह तो वही ज्योतिष-विज्ञान की पुस्तक थी जिसके लिए वह कब से ललचा रहा था। और उस पर पहचानी हुई लिखावट में लिखा था

वोल्का के लिए—
जो मानवें दर्जे का सबसे ज्यादा पढ़ा-लिखा विद्यार्थी है,
जो ज्योतिष-विज्ञान क्लब का कार्यकारी सदस्य है,
उसको दादी की ओर से प्यार सहित!

कितना मजेदार समर्पण था! दादी हमेशा कुछ-न-कुछ मजेदार बात खोजकर निकालती हैं! लेकिन फिर भी वोल्का के ओठों पर हँसी नहीं आयी। वह खुश नहीं हुआ···इतने दिनों से जिस किताब के लिए उसका मन था, उसे पाकर भी वह खुश नहीं हो पाया। रह-रहकर दुख कचोट उठता था···छाती पर एक बोझ-सा रखा हुआ था।

"दादी!" उसने पुकारा, "एक मिनट जरा सुनना।"

"क्या बात है शैतान!" दादी ने दिखावटी गुस्से से कहा। मन में वह खुश थीं कि वोल्का बोला।

"दादी, जरा दरवाजा बन्द कर दो···हाँ, और यहीं मेरे पास बिस्तर पर बैठ जाओ, तुम्हें कुछ बहुत जरूरी बात बतानी है।"

"अपनी जरूरी बात अभी रख, सुबह सुनाना।" दादी ने यूँही कहा, हालाँकि वह खुद जानने के लिए उतावली थी कि जरूरी बात क्या हो सकती है?

"नहीं, नहीं···दादी···वह बात यह है कि मुझे दर्जा नहीं मिला है···मेरा मतलब है कि अभी नहीं मिला है···मैं इम्तहान में पास नहीं हुआ

"तुम फेल हो गये हो?" दादी ने पूछा।

"नहीं, फेल तो नहीं हुआ, लेकिन पास भी नहीं हुआ··· मतलब यह कि

फेल तो नहीं ही हुआ हूँ। मैंने असल में इम्तहान में यह बताया कि पुराने लोग भारत के बारे में क्या सोचते थे···और यही कि अन्तरिक्ष क्या है। तभी मेरी तबीयत कुछ बिगड़ने लगी। यह देखकर हमारी अध्यापिका ने कहा कि मैं पहले अच्छी तरह आराम करूँ, फिर आकर इम्तहान दूँ।"

इतना सबकुछ दादी को बताते हुए भी वह होताभ का नाम नहीं ले पाया। और शायद वह यकीन भी न करतीं।

वह फिर बोला, "सच पूछो तो मैं अभी तुम्हें कुछ बताना नहीं चाहता था, मन-ही-मन मुझे बड़ी शर्म लग रही थी···समझीं। तुम यह किताब अभी अपने पास रखो दादी," वोल्का ने सुझाया। उसकी आवाज काँप रही थी।

"पागलपन की बात करता है। मैं इसे कहाँ रखूँगी? अच्छा, तू यही समझ ले कि मैंने सँभालकर रखने के लिए अभी इसे दिया है। बस। और अब सो जा।"

"ठीक है।" वोल्का ने कहा, "सुन लो दादी, अब यह तय है कि भूगोल में मैं प्रथम आऊँगा। यकीन करती हो न?"

"बिलकुल। अब आराम करो। हाँ, तुम्हारे बाबूजी और माँ को मैं बता दूँ या तुम्हीं बताओगे?"

"तुम्हीं बता दो दादी।"

"अच्छा!" कहकर दादी ने उसे प्यार से चूमा, बत्ती गुल की और चली गयीं।

कुछ देर उस अँधेरे में वोल्का जैसे साँस बन्द करके लेटा रहा, इस इन्तजार में कि दादी यह बुरी खबर बाबूजी और माँ को अभी सुनायेंगी। लेकिन उनके घर आने से पहले ही उसे नींद आ गयी।

बेचैनी-भरी रात

एक घण्टा भी नहीं हुआ था कि हॉल में बजती हुई टेलीफोन की घण्टी से एकाएक उसकी नींद टूट गयी।

बाबूजी फोन पर बोल रहे थे :

'हलो, हाँ, कौन···नमस्ते नमस्ते बारबाराजी। अच्छा हूँ, धन्यवाद। और आप कैसी हैं?···हाँ वोल्का, वह सो रहा है। मेरे खयाल से वह एकदम ठीक है। अच्छी तरह खाना भी खाया है उसने···हाँ-हाँ, मुझे पता है, उसने घर में बताया था···मुझे खुद ताज्जुब है···हाँ, यही हो सकता

है…आराम जरूरी है यह मुझे भी लगता है…अगर आपको कोई एतराज न हो तो…बहुत-बहुत धन्यवाद…अच्छा, नमस्ते !' फोन रखकर बाबूजी ने माँ से कहा, 'बारबारा तुम्हें नमस्ते कह रही थी।…वह वोल्का का हाल पूछ रही थीं। कह रही थीं फिक्र करने की कोई बात नहीं है। सब जानते हैं कि वह पढ़ने में तेज है। बारबारा ने भी यही कहा कि उसे आराम करने दो।'

वोल्का कान खड़े करके सुनने की कोशिश कर रहा था। समझ में ज्यादा नहीं आ पाया तो वह फिर सो गया। इस बार वह पन्द्रह मिनट भी नहीं सो पाया था कि टेलीफोन की घण्टी फिर बज उठी।

बाबूजी ही जवाब दे रहे थे, "जी हाँ, बोल रहा हूँ, नमस्कार…क्या, नहीं, वह यहाँ नहीं है…जी, वोल्का, वह घर पर है…ठीक है…ठीक है…नमस्कार।' वोल्का को साफ-साफ नहीं सुनायी पड़ रहा था।

तभी रसोई में माँ ने पूछा, "कौन था ?"

"ज़ेन्या के पिताजी का फोन था…बड़े घबराये हुए लग रहे थे। ज़ेन्या अभी तक घर नहीं पहुँचा। वह यहाँ तो नहीं है और वोल्का घर पर है या नहीं ?"

आधे घण्टे बाद ही तीसरी बार वोल्का की नींद टेलीफोन की घण्टी से फिर टूट गयी…बड़ी बेचैनी-भरी रात थी। इस बार ज़ेन्या की माँ का फोन था। ज़ेन्या अब तक घर नहीं पहुँचा था ! वह वोल्का से कुछ अता-पता मालूम करना चाहती थीं।

दरवाजा खोलकर बाबूजी ने पुकारा, "वोल्का ! ज़ेन्या की माँ पूछती हैं कि वह तुम्हें कब और कहाँ दिखायी पड़ा था ?"

"शाम को सिनेमा पर मिला था।"

"सिनेमा के बाद !"

"उसके बाद मैंने नहीं देखा।"

"उसने कुछ कहा था कि कहाँ जा रहा है ?"

"नहीं।"

काफी देर तक वह इसी इन्तजार में रहा कि घरवाले ज़ेन्या के गायब होने की बात खत्म करें (क्योंकि वह खुद तनिक भी परेशान नहीं था। वह जानता था कि ज़ेन्या सरकस देखने गया है…वहाँ वह पास होने की खुशियाँ मना रहा होगा)। इन्तजार में ही वह पहले सो गया।

कमरे के कोने में कुछ आहट हुई। किसी के भीगे पैरों चलने की आहट थी। भीगे पैरों के निशान फर्श पर दिखायी देते और फौरन सूख जाते। कोई अदृश्य आदमी चुपचाप कमरे में टहल रहा था।

किसी ने वोल्का के कन्धे पर हलके से हाथ रखा···उस वक्त वह गहरी नींद में सोया हुआ था, उसकी आँख नहीं खुली। जो उसे जगाने की कोशिश कर रहा था, उसने तव गहरी-सी उदासी-भरी साँस ली, कुछ वुद-वुदाया। फिर वह अदृश्य आदमी उस ओर वढ़ गया जिधर मछलियोंवाली पेटी रखी थी। उसमें से कुछ पानी छलका।

और फिर कमरे में नींद से वोझिल सन्नाटा छा गया।

मकान नम्बर 37 में मजेदार करिश्मे

गोगा की माँ ने कुत्ता नहीं खरीदा। खरीदने का वक्त ही नहीं मिला। वाद में भी गोगा के लिए कुत्ता नहीं लाया गया क्योंकि उस शाम जो अजीवोगरीव घटनाएँ हुई थीं, उनके कारण दोनों का ही मन खट्टा हो गया था— लेकिन वोल्का ने 37 नम्बर के हिस्से में कुत्ते को भौंकते सुना था। क्या उसने गलत समझ लिया था ?

नहीं, उसने गलत नहीं समझा था।

लेकिन उस शाम 37 नम्बर में कोई कुत्ता था भी नहीं।

इसलिए वोल्का गोगा से जले, इसका सवाल नहीं रह गया था। काहे के लिए कुढ़ता वोल्का : वह तो खुद गोगा भौंक रहा था। यह तमाशा तव शुरू हुआ जव गोगा खाने के लिए हाथ-मुँह धो रहा था। वह इस फिक्र में था कि सुवह वोल्का ने जो तमाशा इम्तहान में किया था, वह सव अपनी माँ को नमक-मिर्च लगाकर सुनायेगा। वस, उसी वक्त वजाय वोलने के उसने भौंकना शुरू कर दिया।

वह सुनाना चाहता था कि वोल्का ने एकाएक इम्तहान में वकवास शुरू कर दी···गुस्से से अध्यापिका ने मेज पर हाथ पटके और वुरी तरह वोल्का पर चीख पड़ी, 'गधे की तरह क्या वक रहे हो ! वदमाश कहीं का। तुम एक साल और इसी दर्जे में सड़ो।'

लेकिन इसके वदले में गोगा के मुँह से निकला :

'वोल्का ने एकाएक वकवास शुरू कर दी···भौं···भौं···भौं···और वारवारा चीख पड़ीं···भौं···भौं···भौं···'

गोगा घवराहट से जैसे गूंगा हो गया। एक क्षण वह चुप रहा, साँस भरकर उसने फिर कहने की कोशिश की।

"मम्मी !" वह दुख से भरकर वोला, "ओह मम्मी !"

"क्या वात है वेटे ?" माँ ने घवराहट से देखते हुए कहा, "अरे, तुम्हें

क्या हो गया ?"

"मैं कहना चाहता था कि भौं···भौं···भौं···मम्मी, मुझे क्या हो गया है ?" गोगा डर से नीला पड़ गया था।

"भौंकना बन्द करो बेटे···मेरे प्यारे गोगा···यह भौंकना बन्द करो।"

"मैं जान-बूझकर नहीं कर रहा हूँ मम्मी," वह दुख से बोला, "मैं सिर्फ यह कहना चाहता था कि···"

फिर वही हुआ, शब्द तो नहीं निकले, उसने फिर जोर-जोर से भौंकना शुरू कर दिया।

"भौंको मत गोगा···मुझे डर लगता है इससे !" कहते हुए माँ की प्यार-भरी आँखों से आँसू झरने लगे, "भौंको मत···"

गोगा और कुछ न सोच पाने के कारण माँ पर ही बिगड़ पड़ा और बहुत ही जोर-जोर से भौंकने लगा। इतनी जोर से उसने भौंकना शुरू किया कि पड़ोस के छज्जे से आवाज आयी, "अपने लड़के को रोकिए, क्यों बेकार कुत्ते को छेड़ रहा है। निहायत बदतमीजी है यह। लड़के को सिर चढ़ा रखा है।"

गोगा की माँ रोते-रोते ही खिड़कियाँ बन्द करने के लिए दौड़ीं। फिर उन्होंने घबराकर माथा छुआ तो गोगा और जोर से भौंकने लगा। आखिर उसने डर से नीले पड़े हुए गोगा को किसी तरह बिस्तर में लिटाया। गर्मियों की रात होते हुए भी उसे भारी लिहाफ उढ़ा दिया। और भागी हुई सीधी गयीं और अस्पताल की गाड़ी के लिए फोन किया।

बीमारी वह बताती भी क्या, सच बात भी नहीं बता पायीं। यही कह दिया कि लड़के को बहुत तेज बुखार है और बेहोशी में अण्ड-बण्ड बकता है।

जल्दी ही डाक्टर आ गया। आते ही उसने माथे पर हाथ रखकर बुखार की जाँच की। बुखार तो था ही नहीं। डाक्टर थोड़ा नाराज भी हुआ पर गोगा की माँ का दुख से भरा मुख देखकर उसने नाराजी प्रकट नहीं की। साँस लेकर वह पास पड़ी कुर्सी पर बैठ गया और पूछा, "आपने अपने डाक्टर को बुलाने के बजाय अस्पताल की गाड़ी क्यों मँगवायी ?"

गोगा की माँ ने सब सच-सच बता दिया।

"क्यों, तुम समझते हो कि तुम कुत्ते हो ?" डाक्टर ने यूँही गोगा से पूछा।

गोगा ने सिर हिलाया, "हाँ।"

"हूँ, कुछ बात तो बनी," डाक्टर ने सोचा। "अच्छा, जीभ"

गोगा ने जीभ निकाल दी।

"जीभ तो जैसी आदमियों की होती है, वैसी ही है," कहते हुए उसने दिल की परीक्षा ली—"दिल भी ठीक है और फेफड़े भी एकदम साफ हैं···पेट में तो कोई गड़बड़ी नहीं है ?"

"पेट भी ठीक है," माँ ने बताया।

"क्या यह बहुत देर से भौंक रहा है ?"

"दो घण्टे से ज्यादा हो गये डाक्टर साहब ! समझ में नहीं आता, क्या करूँ ?"

"घबराइये मत। डरने की कोई बात नहीं है। अच्छा, अब तुम यह बताओ बेटे कि यह शुरू कैसे हुआ ?"

"डाक्टर साहब, शुरुआत किसी बात से नहीं हुई···मैं माँ को बता रहा था कि वोल्का ने भौं···भौं···भौं···"

"देख रहे हैं डाक्टर साहब !" माँ ने रोते हुए कहा, "मैं क्या करूँ ? कुछ दवा दे दीजिए···गोलियाँ···पाउडर···या जो आप ठीक समझें।"

डाक्टर की भौंहें चढ़ गयीं। बोला, "जरा सोचने दीजिए। मैं कुछ किताबों से देखना चाहूँगा···यह अपनी तरह का अकेला मामला है··· अजीब मर्ज है। इसको पूरा आराम दीजिए। बिस्तर से बिलकुल न उठे। हलका खाना दीजिए, साग-सब्जियाँ और दूध की चीजें। कॉफी···कोको वगैरह कुछ नहीं। चाय में खूब दूध डालकर दीजिए, वह भी माँगने पर। बाहर तो कतई मत जाने दीजिए।"

डाक्टर ने चलते-चलते रहम से गोगा के सिर पर हाथ रखना चाहा, लेकिन यह सोचकर कि डाक्टर कैसी कड़वी-कड़वी दवाइयाँ देगा, वह इतने जोर से भौंका कि डाक्टर भी डर गया। घबराकर उसने हाथ भी हटा लिया कि कहीं वह काट न खाये।

"हूँ···सचमुच अजीब मर्ज है···अपनी तरह का अकेला मामला," डाक्टर ने बात दुहरायी। एक नुस्खा उसने लिखा और दिन में आने की कहकर चला गया।

और वैसी ही परेशानी-भरी सुबह

सुबह बड़ी खुशनुमा और साफ थी।

साढ़े छः बजे दादी ने धीरे-से दरवाजा खोला। धीरे-से खिडकी तक गयीं और उसे भी पूरा खोल दिया। ठण्डी और ताजी हवा कमरे में भर गयी। मास्को की खुशनुमा, शोर-शराबे और चहल-पहल से भरी हुई सुबह

की यह शुरुआत थी। अगर चादर न खिसकती तो शायद वोल्का की आँख न खुलती।

आँख खुलते ही उसने दाढ़ी पर खूँटियाँ उगी हुई महसूस कीं। अब कोई चारा नहीं था। बड़ी मुसीबत की बात थी। ऐसी हालत में उठकर वह बाबूजी और माँ के पास भी नहीं जा सकता था। उसने झटपट मुँह तक चादर ओढ़ ली। पड़े-पड़े सोचने लगा कि अब क्या किया जाये।

"वोल्का उठो, यहाँ आओ!" बाबूजी खाने के कमरे से पुकार रहे थे। उसने सोने का बहाना करते हुए कोई जवाब नहीं दिया। बाबूजी कह रहे थे, "ऐसी अच्छी सुबह है···कैसे कोई सोया रह सकता है। यह सोने का वक्त है?"

तभी दादी की आवाज सुनायी पड़ी, "कोई तुमसे इम्तहान दिलवाता और पौ फटते ही तुमसे उठने को कहता अल्योशा, तब मैं देखती!" वह बाबूजी से कह रही थीं।

"ठीक है···सोने दो।" बाबूजी बड़बड़ाये, "हमें क्या? भूख लगेगी तो उठेगा।"

उसने पड़े-पड़े सोचा—क्या मेरी भूख के बारे में बात हो रही है? और सचमुच इस दाढ़ी को बजाय अब तो भूख ही ज्यादा सता रही थी। आमलेट और पावरोटी का खयाल आ रहा था। आखिर बाबूजी कारखाने चले गये और माँ बाजार चली गयी। जैसे ही बाहरवाले दरवाजे के बन्द होने की आवाज सुनायी दी, तो उसने तय किया, 'यह अच्छा हुआ···अब मैं दादी को पूरा किस्सा बताऊँगा और हम दोनों मिलकर सोचेंगे।'

वोल्का ने टाँगें सीधी कीं, जम्हाई ली और दरवाजे के पास पहुँचा, जिस शीशे की पेटी में मछलियाँ रहती थीं, उसकी तरफ उसने बग़ैर कुछ खयाल किये हुए नजर डाली···और सुन्न खड़ा रह गया। शीशे की उस पेटी में कुछ अजीबोग़रीब बात हुई थी···ऐसी बात जिसे दिमाग लगाकर भी हल नहीं किया जा सकता था। कल उसमें सिर्फ तीन मछलियाँ तैर रही थीं···अब चार थीं। चौथी मछली काफी बड़ी, मोटी और सुनहरी थी। वह बड़े मजे से अपने चमकदार पंख थरथराते हुए तैर रही थी। वोल्का ने उसे शीशे के पार से देखा तो मछली ने उसकी ओर देखकर आँख झपकायी।

"बाप रे!" एक क्षण के लिए वह दाढ़ी की बात भूल गया।

पानी में हाथ डालकर उसने उस मछली को पकड़ने की कोशिश की। वह मछली इसी इन्तजार में थी। उस मछली ने जोर से पानी पर पूँछ मारी और बाहर आ गयी। बाहर आते ही मछली होताभ से [illegible]

"ओह !" होताभ ने पानी पोंछते हुए कहा। तभी सोने और चांदी के काम की एक खूबसूरत तौलिया हवा में आ गयी। उस तौलिये से होताभ ने अपनी दाढ़ी पोंछी। फिर बोला, "मैं तुम्हें सलाम करने के लिए सुबह से इन्तजार कर रहा था। तुम उठ ही नहीं रहे थे। मेरी हिम्मत नहीं थी कि तुम्हें जगा दूं। ऐ खुशनसीब वोल्का इब्न अल्योशा ! मुझे पूरी रात इन मछलियों के साथ गुजारनी पड़ी।"

"मेरा मजाक उड़ाते हुए तुम्हें शर्म नहीं आती !" वोल्का ने गुस्से से कहा, "मेरे दाढ़ी निकली हुई है और तुम मुझे खुशनसीब कहकर मजाक उड़ाते हो।"

बातूनी पिकोरवी की बोलती बन्द

सुबह-सुबह पिकोरवी ने सोचा कि दाढ़ी भी बनायी जाये और नदी का नजारा भी देखा जाये। उसने खिड़की के पास मेज खिसका ली। उसी छोटी मेज पर दाढ़ी बनाने का सब सामान था। गुनगुनाते हुए उसने साबुन लगाना शुरू किया।

साबुन लगाकर उसने उस्तरा उठाया। हथेली पर घुमाया और बड़ी आसानी और चतुराई से दाढ़ी बनाने लगा। दाढ़ी बनाकर वह उस्तरा साफ कर ही रहा था कि सोने-चांदी के काम की शानदार सफेद पोशाक और डण्ठलों के बने मोरक्को के गुलाबी जूते, जिनकी पूंछ बिच्छू के डंक की तरह मुड़ी हुई थी, पहने हुए एक बूढ़ा झट-से हाजिर हुआ।

"तुम नाई हो ?" बूढ़े ने आश्चर्यचकित पिकोरवी से कड़ी आवाज में पूछा।

"मैं पेशेवर नाई नहीं हूं। यों मैं हूं नाई ही, पर पेशेवर नाई न होते हुए भी मैं किसी भी पेशेवर का मुकाबला कर सकता हूं, कोई मुझे हरा नहीं सकता। जानते हो क्यों ? क्योंकि जब पेशेवर नाई···"

बूढ़े ने रुखाई से बात काट दी, "ऐ बातूनी नाई ! तुम एक नौजवान की दाढ़ी बना सकते हो। कटने का एक भी निशान नहीं होना चाहिए।"

बूढ़े ने उसे कालर से पकड़ा और बगैर कोई बात सुने वह पिकोरवी को खिड़की से लेकर उड़ गया···अनजानी जगह की ओर।

वे उस जाने-पहचाने कमरे में पहुंचे जहां वोल्का बैठा हुआ था। बिस्तर पर बैठा हुआ वोल्का बहुत उदास था। सामने रखे शीशे में अपनी दाढ़ी देख-देखकर वह बहुत दुखी हो रहा था।

"ऐ नौजवान मालिक ! खुशी और किस्मत तुम्हारे साथ है !" होताभ ने घूमने ही कहा। पिकोरवी उसके हाथ में लटका हुआ था। होताभ आगे बोला, "तुम्हारे लिए नाई मिलने की कतई उम्मीद नहीं रह गयी थी। तभी यह बातूनी आदमी दिखायी दिया। मैं इसे पकड़ लाया हूँ। और अब यह तुम्हारे सामने हाजिर है। शेव का जरूरी सामान साथ है।" फिर होताभ पिकोरवी से बोला, "कायदे से अपना उस्तरा वगैरह ठीक करो और इस सम्माननीय नौजवान की दाढ़ी बनाओ। ऐसी दाढ़ी बनाओ कि इसके गाल बिलकुल चिकने हो जायें···लड़की की तरह चिकने।"

पिकोरवी ने चूं-चपड़ नहीं की। हाथ में चमकदार उस्तरा लिया और कुछ मिनटों में ही वोल्का की दाढ़ी बहुत अच्छी तरह बन गयी।

"अपनी चीजें समेटो।" होताभ ने कहा, "कल सुबह मैं फिर उड़कर पहुँचूँगा, तुम्हें इनकी दाढ़ी एक बार और बनानी होगी।"

"कल मैं नहीं आ सकता। मुझे सुबह की पाली पर जाना है," पिकोरवी ने इन्कार किया।

"तुम्हें उससे कोई मतलब नहीं," होताभ ने शान्त भाव से कहा। कमरे में खामोशी का भारीपन छा गया। तभी पिकोरवी के दिमाग में एक विचार आया, बोला, "तुम तिबलिसी का नुस्खा इस्तेमाल करो। बड़ा अच्छा इलाज है।"

"वही न, पाउडर," वोल्का ने पूछा, "सिलेटी रंग का। मैंने सुना है, या शायद कहीं कुछ उसके बारे में पढ़ा है···"

"वही···वही, सिलेटीवाला पाउडर!" पिकोरवी प्रसन्नता से बोला, "ज्यार्जिया में बनाया जाता है। उसे सिर्फ गालों पर लगा लीजिए···घनी-से-घनी दाढ़ी सफाचट हो जायेगी···निशान नहीं मिलेगा उसका। अब खैर दाढ़ी है तो फिर बढ़ आयेगी लेकिन साफ बहुत बढ़िया होगी।"

"हमारे नौजवान दोस्त के कभी नहीं निकलेगी!" होताभ ने बीच में टोककर कहा।

"आपको यकीन है?" उसने पूछा।

होताभ के चेहरे पर गुस्सा उभर आया, बोला कुछ नहीं। वह एक नाई से बात करना अपनी शान के खिलाफ समझता था।

और कुछ ही देर बाद वह तिबलिसी के एक हमाम के सामने देखा गया और बिना कपड़े उतारे ही वह गुसलखाने में घुस गया। गन्धक की महक उसके नथुनों में घुसने लगी। यह तो होना ही था। तिबलिसी के हमाम गन्धक के गर्म पानी के लिए मशहूर थे। ऐसी अजीबोगरीब पोशाक पहने आदमी की ओर सभी का ध्यान आकर्षित हुआ था।

हमाम का नौकर वानो खड़ा हुआ था। वह बूढ़ा उसकी ओर बढ़ा और ने खड़े होकर फुरसत से कपड़े उतारने लगा। "भाईजान, कपड़े उतारने जगह उधर है," वानो ने बताया।

बूढ़ा कुछ नाराज हुआ। वह नहाना नहीं चाहता था। गर्मी के कारण सिर्फ कोट उतार रहा था। बोला, "यहाँ आओ!" और अपने टोप से ा करते हुए उसने फिर कहा, "जिन्दा रहना चाहते हो तो फौरन यहाँ से रक जाओ।"

वानो मुस्कराया, बोला, "ऐसी खुशनुमा सुबह में कौन मरना चाहेगा, बाबाजान! आपको क्या चाहिए?"

बूढ़े ने सख्त आवाज में पूछा, "क्या यही तिबलिसी के मशहूर हमाम हैं···जिनकी मैंने तारीफ-ही-तारीफ सुनी है!"

"जी हाँ, ये वही मशहूर हमाम हैं!" वानो ने गर्व से कहा, "दुनिया-भर घूम आइए, पर ऐसे हमाम कहीं नहीं मिलेंगे। आप शायद बाहर से आये हैं!"

बूढ़े ने उसकी बात का कोई जवाब नहीं दिया, अपनी बात ही बोला, "कुछ खास लोगों ने मुझे बताया कि तिबलिसी के हमाम में कोई जादूवाला लेप यानी मलहम की तरह का कुछ मिलता है जो बालों को एकदम साफ कर देता है···"

"ओह, तो आप 'तारो' चाहते हैं?" वानो ने खुशी से भरकर कहा।

"हाँ-हाँ···" बूढ़े ने बीच में कहा, "उसे 'तारो' कहते हैं तो वही 'तारो' मुझे चाहिए। फौरन 'तारो' लाओ नहीं तो अभी···"

"बस···बस···ठीक है···मैं समझ गया कि अगर जिन्दगी प्यारी है··· तो···बस···मैं अभी हाजिर हुआ।"

अनुभवी वानो का पाला बहुतों से पड़ा था। वह जानता था, समझदारी इसी में है कि बहस न करो। वह एक मिट्टी के प्याले में राख की तरह की कोई चीज़ भरकर ले आया। बूढ़े को देते हुए उसने कहा, "दुनिया में कहीं भी यह जादूवाला पाउडर नहीं मिलेगा! हमाम के नौकर की यह बात गाँठ बाँध लीजिए।"

बूढ़े का चेहरा तमतमा आया।

"तुम मुझे गधा बना रहे हो! क्यों छोकरे!" उसकी आवाज हल्की थी पर बेहद गुस्से से भरी हुई, "तुमने लेप यानी वह मलहम की तरह की चीज लाने को कहा था और अब बाजारू धोखेबाजों की तरह यह पुराना पाउडर मुझे थमा रहे हो···यह बीमार चूहे के रंग का पाउडर!" कहते हुए बूढ़े ने इतनी जोर से हुंकार मारी कि सारा पाउडर उड़कर उसके बालों, भौंहों

दाढ़ी और मूँछों पर लग गया। वह इतना गुस्से में था कि इसका कोई खयाल ही उसने नहीं किया।

"नाराज मत हो भाईजान !" वानो ने कहा, "पानी मिलाने की देर है, यह पाउडर ही लेप बन जायेगा। वही जो आप चाहते हैं।"

बूढ़े को लगा कि वह ख्वामखाह बिगड़ पड़ा। बात तो ठीक ही है। बोला, "बड़ी गर्मी है !" फिर वह बुदबुदाया, "पसीने से दाढ़ी तर है···यह ठीक है···सारी ताकतें मेरे हाथ में हैं ! और इस दुखदायी गर्मी को भी खत्म होना चाहिए।"

"अफसोस यह है कि इस गर्मी पर मेरा कोई वश नहीं है !" वानो ने कहा।

"यह मेरे वश में है !" कहते हुए बूढ़े ने, जो कि और कोई नहीं, होताम ही था, बायें हाथ की अँगुलियाँ चटकायी और दाँत पीसने लगा।

वानो देख रहा था—तभी एक अजूबा हुआ—जहाँ होताम खड़ा था, उधर से बर्फीली हवा आने लगी। फर्श पर बर्फ बिछ गयी और कमरे में बादल मँडराने लगे। देखते-देखते उन बादलों से होताम के सिर पर बारिश होने लगी।

"आह ! अब मजा आया।" होताम ने कहा, "इस गर्मी में फुहार के नीचे नहाने से बड़ी ताजगी आती है !" कहते हुए उसने दाहिने हाथ की अँगुलियाँ चटकाईं और देखते-देखते फर्श की बर्फ नदारद हो गयी, बारिश रुक गयी और बर्फीली हवा भी बन्द हो गयी।

"हाँ, तो अब उस तारो की बात करो, चलो मैं यकीन किये लेता हूँ कि तुम्हारा तारो मलहम में बदल जायेगा···वक्त बहुत कम है, इसलिए फुर्ती करो और मुझे एक पीपा तारो दे दो !" होताम ने कहा।

"एक पीपा तारो !" वानो अचकचाया।

"दो पीपा दे दो !" होताम ने कहा।

"जनाबआली···बड़ी-से-बड़ी दाढ़ी को एक कटोरी-भर पाउडर सफाचट कर देगा···" वानो ने समझाया।

"ठीक है, पाँच कटोरी-भर दे दो, बस !" होताम ने कहा।

"अभी लीजिए !" कहकर वानो पास के कमरे में घुस गया और एक बड़ी बोतल भरकर लौटा जिसमें डॉट लगी हुई थी। आते ही बोला, "बीस कटोरी पाउडर इसमें है···"

"ऐ ! नौकर की दुम, मेरे साथ दगा नहीं होना चाहिए, समझा···नहीं तो···" होताम कह ही रहा था कि वानो ने बात काट दी, "ऐसा कभी हो

सकता है ! राम राम···और आप जैसे बुजुर्ग के साथ, कभी नहीं···" वाल्का यह कह ही रहा था कि लड़ाकू होताभ हवा में गायब हो गया।

···और दूसरे ही क्षण एक बूढ़ा वोल्का के सामने मौजूद था। उसकी भौंहें सफाचट थीं, दाढ़ी-मूँछ नदारद थी···वही गुलाबी जूतोंवाला बूढ़ा। जैसे ही उसने वोल्का के कन्धे पर हाथ रखा तो वोल्का सहम गया। उसने एकदम पूछा, "अरे होताभ ! यह क्या हुआ ?"

दीवार के शीशे में होताभ ने अपनी शक्ल देखी और जबरदस्ती हँसने लगा और बोला, "मैं शायद अब ज्यादा खूबसूरत लग रहा हूँ···तुम शायद मेरे शक्कीपन पर हँसो लेकिन सचमुच मैंने इस पाउडर को अपने पर आजमाकर देखा है ताकि धोखा न हो," कहते हुए उसने तश्तरी में पाउडर निकाला।

वोल्का की दाढ़ी-मूँछ उस पाउडर से साफ करके उसने अपने बायें हाथ की अँगुलियाँ चटकायीं। अँगुलियाँ चटकाते ही उसकी शक्ल पहले जैसी हो गयी। शीशे में अब अपने को दोबारा देखकर उसकी जान-में-जान आयी, मूँछों को उसने पहले की तरह उमेंठ लिया, भौंहों पर हाथ फेरा और सन्तोष की साँस ली।

"भई वाह ! हम दोनों के चेहरे अब पहले जैसे हो गये !" होताभ ने खुशी से कहा।

गोताखोर से मुलाकात

ज़ेन्या के घरवाले रात-भर परेशान रहे। उन्होंने सब दोस्तों के घर टेली-फोन किया। टैक्सी लेकर जगह-जगह ढूंढ़ा···हर थाने, अस्पताल में पूछा, लेकिन कुछ भी पता नहीं चला। ज़ेन्या ऐसा गायब हुआ था कि उसका कोई पता-निशान नहीं मिल रहा था।

दूसरे दिन स्कूल के प्रिंसिपल ने ज़ेन्या के सभी सहपाठियों को बुलाया और उनसे पूछताछ की। वोल्का ने बताया कि ज़ेन्या कल रात सिनेमाघर पर मिला था। दर्जे में ज़ेन्या के पास जो लड़का बैठता था, वह बहुत याद करके इतना ही बता पाया कि उसने ज़ेन्या को शाम छह बजे के करीब पुश्किन स्ट्रीट में देखा था, उस वक्त वह बहुत उत्साह में था और सिनेमाघर की ओर भागा जा रहा था।

तभी एक और लड़के को याद आया कि ज़ेन्या ने कहा था कि उसका

इरादा तैरने का है ! और इतना पता चलते ही हर वालण्टियर ज़ेन्या की लाश की खोज करने लगे। नदी में भी खोज की गयी पर कुछ भी हाथ नहीं आया। गोताखोरों ने नदी तल को छान डाला, लेकिन कुछ भी नहीं मिला।

वोल्का भी परेशान था, वह ऐसी खुशनुमा शाम में घर पर नहीं बैठ पा रहा था। ज़ेन्या का क्या हुआ, इसी खौफनाक खयाल से वह परेशान था। उसने सोचा, स्कूल जाकर ही फिर पता करूँ···शायद अब तक कोई खबर मिली हो। और जैसे ही वह लौटते हुए स्कूल के फाटक के पास आया, होताभ खामोशी से प्रकट हो गया। होताभ ने देखा कि वोल्का काफी परेशान था, इसलिए उसने कुछ पूछकर उसे और नाराज नहीं करना चाहा। दोनों अपने में डूबे हुए चुपचाप चलते रहे। चलते-चलते वे नदी के किनारे पहुँचे।

नदी में तैरती हुई नावों की ओर इशारा करके होताभ ने कहा, "नावों में कैसे अजीब आदमी खड़े हैं !"

"वे गोताखोर हैं !" वोल्का ने उदास स्वर में कहा।

तभी होताभ ने एक गोताखोर से पूछा, "ऐ गोताखोर···इस खूबसूरत नदी के तल में तुम क्या ढूँढने की कोशिश कर रहे हो ?" वह गोताखोर नाव से पानी में कूदने ही वाला था।

"एक लड़का डूब गया है !" उस गोताखोर ने उत्तर दिया और वह पानी में कूद गया। सुनकर होताभ ने वोल्का के सामने अदब से झुकते हुए कहा—"ऐ वोल्का इब्न अल्योशा ! मैं तुम्हारे पैरों की धूल चूमता हूँ···ऐ ! सबसे तेज विद्यार्थी वोल्का !"

"ओह !" वोल्का ने अपने उदास खयालों से उबरते हुए कहा।

होताभ ने सादर पूछा, "क्या ये गोताखोर उसी लड़के को खोजने की कोशिश कर रहे हैं जिसे तुम्हारा सहपाठी होने का सौभाग्य प्राप्त था।"

"हाँ ! वही ज़ेन्या है," वोल्का ने दुख से कहा।

"अरे वही लड़का न जो तुम्हें सिनेमा में मिला था, वही जो तुमसे चीख-चीखकर कुछ बात कर रहा था और तुम उसकी बातों से उदास हो गये थे···जिसने सबको जा-जाकर बताया था कि तुम्हारे दाढ़ी निकल आयी है !" होताभ ने पूरे तौर से जानना चाहा।

"हाँ-हाँ, वही, लेकिन मैं इसलिए परेशान नहीं हूँ कि उसने दाढ़ी की बात लोगों को बतायी बल्कि इसलिए परेशान हूँ कि वह डूब गया है !" वोल्का ने होताभ को समझाया।

"नहीं नहीं, वह डूबा नहीं है !" होताभ ने कहा।

सकता है ! राम राम···और आप जैसे बुजुर्ग के साथ, कभी नहीं···" वानो यह कह ही रहा था कि लड़ाकू होताभ हवा में गायब हो गया।

···और दूसरे ही क्षण एक बूढ़ा वोल्का के सामने मौजूद था। उसकी भौंहें सफाचट थीं, दाढ़ी-मूंछ नदारद थी···वही गुलाबी जूतोंवाला बूढ़ा। जैसे ही उसने वोल्का के कन्धे पर हाथ रखा तो वोल्का सहम गया। उसने एकदम पूछा, "अरे होताभ ! यह क्या हुआ ?"

दीवार के शीशे में होताभ ने अपनी शक्ल देखी और जबरदस्ती हँसने लगा और बोला, "मैं शायद अब ज्यादा खूबसूरत लग रहा हूँ···तुम शायद मेरे शक्कीपन पर हँसो लेकिन सचमुच मैंने इस पाउडर को अपने पर आजमाकर देखा है ताकि धोखा न हो," कहते हुए उसने तश्तरी में पाउडर निकाला।

वोल्का की दाढ़ी-मूंछ उस पाउडर से साफ करके उसने अपने बायें हाथ की अँगुलियाँ चटकायीं। अँगुलियाँ चटकाते ही उसकी शक्ल पहले जैसी हो गयी। शीशे में अब अपने को दोबारा देखकर उसकी जान-में-जान आयी, मूँछों को उसने पहले की तरह उमेंठ लिया, भौंहों पर हाथ फेरा और सन्तोष की साँस ली।

"भई वाह ! हम दोनों के चेहरे अब पहले जैसे हो गये !" होताभ ने खुशी से कहा।

गोताखोर से मुलाकात

ज़ेन्या के घरवाले रात-भर परेशान रहे। उन्होंने सब दोस्तों के घर टेली-फोन किया। टैक्सी लेकर जगह-जगह ढूंढ़ा···हर थाने, अस्पताल में पूछा, लेकिन कुछ भी पता नहीं चला। ज़ेन्या ऐसा गायब हुआ था कि उसका कोई पता-निशान नहीं मिल रहा था।

दूसरे दिन स्कूल के प्रिंसिपल ने ज़ेन्या के सभी सहपाठियों को बुलाया और उनसे पूछताछ की। वोल्का ने बताया कि ज़ेन्या कल रात सिनेमाघर पर मिला था। दर्जे में ज़ेन्या के पास जो लड़का बैठता था, वह बहुत याद करके इतना ही बता पाया कि उसने ज़ेन्या को शाम छह बजे के करीब पुश्किन स्ट्रीट में देखा था, उस वक्त वह बहुत उत्साह में था और सिनेमाघर की ओर भागा जा रहा था।

तभी एक और लड़के को याद आया कि ज़ेन्या ने कहा था कि उसका

इरादा तैरने का है ! और इतना पता चलते ही हर वालन्टियर जेन्या की लाश की खोज करने लगे। नदी में भी खोज की गयी पर कुछ भी हाथ नहीं आया। गोताखोरों ने नदी तल को छान डाला, लेकिन कुछ भी नहीं मिला।

वोल्का भी परेशान था, वह ऐसी खुशनुमा शाम में घर पर नहीं बैठ पा रहा था। जेन्या का क्या हुआ, इसी खौफनाक खयाल से वह परेशान था। उसने सोचा, स्कूल जाकर ही फिर पता करूँ···शायद अब तक कोई खबर मिली हो। और जैसे ही वह लौटते हुए स्कूल के फाटक के पास आया, होताभ खामोशी से प्रकट हो गया। होताभ ने देखा कि वोल्का काफी परेशान था, इसलिए उसने कुछ पूछकर उसे और नाराज नहीं करना चाहा। दोनों अपने में डूबे हुए चुपचाप चलते रहे। चलते-चलते वे नदी के किनारे पहुँचे।

नदी में तैरती हुई नावों की ओर इशारा करके होताभ ने कहा, "नावों में कैसे अजीब आदमी खड़े हैं !"

"वे गोताखोर हैं !" वोल्का ने उदास स्वर में कहा।

तभी होताभ ने एक गोताखोर से पूछा, "ऐ गोताखोर···इस खूबसूरत नदी के तल में तुम क्या ढूँढ़ने की कोशिश कर रहे हो ?" वह गोताखोर नाव से पानी में कूदने ही वाला था।

"एक लड़का डूब गया है !" उस गोताखोर ने उत्तर दिया और वह पानी में कूद गया। सुनकर होताभ ने वोल्का के सामने अदब से झुकते हुए कहा—"ऐ वोल्का इब्न अल्योशा ! मैं तुम्हारे पैरों की धूल चूमता हूँ···ऐ ! सबसे तेज विद्यार्थी वोल्का !"

"ओह !" वोल्का ने अपने उदास खयालों से उबरते हुए कहा।

होताभ ने सादर पूछा, "क्या ये गोताखोर उसी लड़के को खोजने की कोशिश कर रहे हैं जिसे तुम्हारा सहपाठी होने का सौभाग्य प्राप्त था।"

"हाँ ! वही जेन्या है," वोल्का ने दुख से कहा।

"अरे वही लड़का न जो तुम्हें सिनेमा में मिला था, वही जो तुमसे चीख-चीखकर कुछ बात कर रहा था और तुम उसकी बातों से उदास हो गये थे···जिसने सबको जा-जाकर बताया था कि तुम्हारे दाढ़ी निकल आयी है !" होताभ ने पूरे तौर से जानना चाहा।

"हाँ-हाँ, वही, लेकिन मैं इसलिए परेशान नहीं हूँ कि उसने दाढ़ी की बात लोगों को बतायी बल्कि इसलिए परेशान हूँ कि वह डूब गया है !" वोल्का ने होताभ को समझाया।

"नहीं नहीं, वह डूबा नहीं है !" होताभ ने कहा।

"क्या कह रहे हो तुम? वह डूबा नहीं है?" वोल्का ने आश्चर्य से पूछा।

"बिलकुल नहीं···अरे मैं अकेला जानता हूँ इस बात को!" होताभ ने वोल्का को बताया, "बात असल में यह हुई कि वह जेन्या सबको तुम्हारी दाढ़ी के बारे में बताता फिर रहा था···मैं जानता था कि तुम्हें इससे बहुत परेशानी हो रही थी···यह मुझे बहुत बुरा लगा कि तुम दुखी हो। इसलिए मैंने उसे बहुत दूर पूरब में फेंक दिया है···वहाँ, जहाँ आसमान से धरती मिलती है। मेरे खयाल से वहाँ के लोगों ने उसे पकड़कर गुलाम की तरह बेच दिया होगा! और अब वहाँ तुम्हारी दाढ़ी के बारे में जो वह चाहे बके···उसे बकने दो, हमें कोई फर्क नहीं पड़ता।"

होताभ की यह बात सुनकर वोल्का आश्चर्य में पड़ गया।

उड़ान की तैयारी

"गुलाम की तरह बेच दिया गया होगा? क्या मतलब तुम्हारा?" वोल्का ने घबराहट से पूछा।

होताभ ने महसूस किया कि फिर कुछ गलती हो गयी है, और उसका चेहरा बिगड़-सा गया। वह बोला, "हाँ-हाँ, सीधी-सी बात है! जो होता है वही हुआ है! वहाँ लोग गुलामों को खरीदते और बेचते हैं!" उसने अपना हाथ मलते हुए बताया।

"तब तो गजब हो गया!" वोल्का चीख पड़ा, "होताभ! तुम्हें पता है कि तुमने क्या कर डाला है?"

"हसन अब्दुर्रखमान इब्न होताभ को हमेशा पता रहता है कि वह क्या करता है!" होताभ ने कड़े स्वर में कहा।

"खाक पता रहता है!···बगैर किसी बात के तुम अच्छे-भले आदमियों को गौरैया बना देते हो या उन्हें गुलामों की तरह बेच देते हो। यह कोई बात हुई। जेन्या को अभी, इसी पल वापस बुलाओ!" वोल्का ने चीखकर कहा।

"यह नहीं हो सकता!" होताभ ने सिर झुकाते हुए कहा, "नामुमकिन काम के लिए मुझसे मत कहो।"

"लोगों को गुलामों की तरह बेच सकना तुम्हारे लिए मुमकिन है, क्यों?" वोल्का नाराजी से चीख रहा था, "तुम जानते हो तुमने क्या कर डाला है? और कान खोलकर सुन लो, अगर जेन्या अभी वापस नहीं आता

तो मैं तुम्हारे साथ किस तरह पेश आऊँगा, यह तुम सोच भी नहीं सकते !"

वोल्का इसी सोच में डूबा हुआ था कि होताभ अगर जेन्या को वापस नहीं लाया तो वह कैसे क्या करेगा। उन अनजान गुलाम खरीदने और बेचनेवालों के पंजे से कैसे जेन्या को वापस लायेगा? उसने सोचा—क्यों न सरकार के किसी मन्त्रालय को लिखा जाये' लेकिन यही समझ में नहीं आया कि किस मन्त्रालय को इस बात की सूचना दी जाये'''यही सोचता हुआ वह चला जा रहा था। आखिर हारकर वह एक बैंच के सिरे पर टिक गया। अपने को बिल्कुल असहाय पाकर उसके आँसू फूट पड़े।

होताभ ने चिन्तातुर होकर पूछा, "भई हुआ क्या जो तुम इस तरह रोने लगे? इससे मेरा दिल टूटता है वोल्का!" कहते हुए वह वोल्का के नजदीक आ गया। वोल्का ने उसे नफरत से झिड़क दिया।

होताभ बोला, "मैं बराबर तुम्हें खुश करने की कोशिश में लगा हुआ हूँ! लेकिन मेरा हर काम बेकार साबित होता है। तुम्हें कुछ पसन्द ही नहीं आता। पूरब से पश्चिम तक लोग मेरे करिश्मों का लोहा मानते हैं। आज तक एक भी आदमी ऐसा नहीं मिला जिसने मेरी धाक न मानी हो, या मेरा अहसान न माना हो! सभी ने मेरे नाम का डंका पीटा है'' आज तक कभी ऐसा हुआ ही नहीं कि कोई खुश न हुआ हो'''पर एक तुम हो कि मेरी हर बात उल्टी हो जाती है। मैं खुद इस बात को जानना चाहता हूँ कि आखिर गलती कहाँ पर है? कुछ समझ में ही नहीं आता'''शायद अब मैं ज्यादा बूढ़ा हो गया हूँ!"

"नहीं होताभ, तुम तो अब भी खासे जवान-से लगते हो!" वोल्का ने अपने आँसू रोकते हुए कहा।

वोल्का की बात पर होताभ ने चालाकी से कहा, "अब तुम मेरी चापलूसी कर रहे हो! लेकिन भई, अब तुम्हारे दोस्त जेन्या को फौरन वापस लाना मेरी ताकत के बाहर है!"

वोल्का का चेहरा दुख से काला पड़ गया।

"अगर'''" होताभ आगे बोला, "उसके न होने से तुम इतने परेशान हो तो एक ही तरीका है—हम उड़कर चलें और उसे वापस ले आयें।"

"उड़कर चलें! इतनी दूर! कैसे?" वोल्का ने आश्चर्य से पूछा।

"कैसे? अरे भई चिड़िया वगैरह पर उड़कर जाना नहीं होगा।" होताभ ने चतुराई से कहा, "अरे हम जादुई कालीन पर उड़कर चलेंगे।"

"कब चलेंगे?" वोल्का ने एकदम पूछा।

"तुम कहो तो अभी, इसी पल चल सकते हैं," होताभ ने कहा।

"तो चलो'''" वोल्का ने कहा।

उड़ान शुरू हुई

जादुई कालीन का एक कोना कुछ घिसा हुआ था। वोल्का को लगा कि उसने ऐसा कालीन कहीं देखा है—शायद ज़ेन्या के घर या अपने स्कूल में अध्यापकों के कमरे में।

उड़ान शुरू होने से पहले होताभ ने वोल्का को जादुई कालीन के बीचों-बीच अपने साथ खड़ा कर लिया था, फिर दाढ़ी से तीन वाल तोड़े। उन पर उसने फूंक मारी, कुछ बुदबुदाया और आसमान की ओर देखने लगा। बस…जादुई कालीन फड़फड़ाने लगा था। एक-एक करके चारों कोने ऊपर उठने लगे। किनारे कोनों में फंस गये लेकिन बीच का हिस्सा जमीन से ही चिपका रहा—दोनों का बोझ काफी था। थोड़ी देर फड़फड़ाने के बाद जादुई कालीन स्थिर हो गया।

होताभ ने फिर कुछ मन्त्र फूंकना शुरू किया। उसकी आंखें आसमान की ओर लगी हुई थीं। अबकी बार देखते-देखते जादुई कालीन एकदम सीधा और सख्त हो गया। एक पल में ही सन्नाता हुआ वह ऊपर आसमान में पहुंच गया। वोल्का का जी कुछ मिचलाने लगा, शायद चक्कर के कारण या ऊंचाई पर जाने की वजह से।

जादुई कालीन पेड़ों के ऊपर था, ऊंचे-ऊंचे मकानों से भी ऊपर उठता गया…मिलों की ऊंची चिमनियों से भी ऊंचा उठ गया और हवा में तैरता हुआ शहर के ऊपर से जा रहा था। नीचे शहर की लाखों रोशनियां टिम-टिमा रही थीं। शहर के शोर-शराबे की आवाज भी उन्हें सुनायी पड़ रही थी।

वोल्का ने आश्चर्य से कहा, "अरे हम कितनी ऊंचाई पर उड़ रहे हैं ?"

"करीब 600-700 हाथ !" होताभ ने बताया। वह अब भी अंगुलियों से कुछ शक्लें बना रहा था।

इसी बीच कालीन और ऊपर उठकर कायदे से हवा में तैरने लगा। होताभ पालथी मारकर आराम से बैठ गया। वोल्का ने भी चाहा कि पालथी मारकर बैठ जाये, लेकिन उसे कुछ दिक्कत हुई। आखिर वह एकदम किनारे पर पैर लटकाकर बैठ गया। हवा इतनी तेज थी कि उसके लटकते हुए पैरों को जैसे तोड़ देना चाहती थी। वोल्का ने घबराकर दोनों पैर कालीन पर कर लिये और सामने फैलाकर बैठ गया। होताभ का चेहरा गर्व से फूला हुआ था और वह बादशाह की तरह बैठा था। थोड़ी ही देर में वोल्का को ठण्ड लगने लगी…सर्दी उसकी हड्डियों तक में घुसने लगी। उसे गर्म कपड़ों की याद भी आयी जो सैकड़ों मील दूर घर पर रखे हुए थे।

तभी उसे याद आया कि बाबूजी ने ठण्ड को दूर करने का तरीका एक दफा बताया था। खयाल आते ही वोल्का ने अपने कन्धों और पुट्ठों को खूब हिलाना शुरू किया···उन्हें हाथों से रगड़ता भी जा रहा था और खूब झूमता भी जा रहा था कि पलक मारते ही वह कालीन से लुढ़क पड़ा···

खैर·· वह तो यह कहिए कि किसी तरह किनारा उसके हाथ में आ गया, नहीं तो इस भयंकर हवाई दुर्घटना के साथ ही हमारी यह कहानी भी खत्म हो गयी होती।

कालीन के किनारे से लटका हुए वोल्का भयातुर-सा चीखा—"होताभ···होताभ, पकड़ना!"

एकदम होताभ लपका और वोल्का को उसने जैसे-तैसे ऊपर कर लिया। फिर अपने को ही कोसने लगा—'अरे मेरा सत्यानाश हो···इस बुढ़ापे को आग लगे···अगर तुम गिर पड़े होते तो मैं अपने को जान से मार लेता···' इसी तरह वह बुदबुदाता रहा और वोल्का को बाँह से पकड़े रहा। उसने यह तय कर लिया था कि जमीन पर उतरने से पहले अब वह वोल्का को नहीं छोड़ेगा।

वोल्का के दाँत बजने लगे थे, वह बोला, "कुछ···गरम कपड़ा अगर ओढ़ने को मिल जाये तो·· " तभी होताभ ने कहा, "जरूर···जरूर!" और उसी क्षण एक कम्बल न जाने कहाँ से आ गया।

रात हो गयी थी। जादुई कालीन पर अब वोल्का खासतौर से परेशानी महसूस कर रहा था, उसने कहा, "500 हाथ और ऊपर चले चलो ताकि हमें सूरज फिर दिखायी देने लगे!"

होताभ ने फिर अपनी करामात दिखायी। कालीन और ऊपर उठ गया और सूरज फिर दिखायी देने लगा—वही लाल गोला क्षितिज की काली रेखा के पास अटका हुआ था।

कुछ देर की खामोशी के बाद वोल्का ने कहा, "जरा सोचो···जेन्या को न जाने कितनी मेहनत करनी पड़ रही होगी!" अपराधी होताभ कुछ बुदबुदाकर चुप रह गया। वोल्का फिर उदासी से बोला, "उस दूर देश में वह बिल्कुल अकेला है! न दोस्त हैं न रिश्तेदार···बेचारा दुख से कराह रहा होगा!"

होताभ खामोश ही रहा।

और सचमुच दूर पूरब में जेन्या कष्टों से कराह रहा था।

"नहीं नहीं···मैं नहीं रह सकता!" उन्हें देखकर जेन्या एकदम दुख से चीखा था, "अब नहीं···अब यहाँ नहीं रह सकता···"

जिन परिस्थितियों में जेन्या ने ये दुख-भरे शब्द कहे थे, उनकी जान-

कारी के लिए यह जरूरी है कि हम पहले ज़ेन्या के अनुभवों को वयान कर। अच्छा, तो कुछ देर के लिए हम होताभ और वोल्का को छोड़ते हैं।

तो अव सुनिए ज़ेन्या की कहानी—

दूर पूरव में जेन्या ने क्या किया ?

सिनेमाघर की पहली सीट में ज़ेन्या वैठा हुआ था तभी उसने दाढ़ीवाले लड़के यानी वोल्का को देखने की कोशिश की थी। तभी खेल शुरू हो गया और हॉल में अँधेरा हो गया था। उसी क्षण उसे वहुत तेज सीटी की आवाज सुनायी पड़ी थी, पैर-तले से हाल की कठोर धरती खिसक गयी थी। उसे लगा जैसे वह लम्बी-लम्बी घास में खड़ा था।

कुछ देर वाद जव वह अँधेरे में देख सकने लायक हुआ तो उसने पाया कि वह एक घने जंगल में खड़ा है। चारों तरफ तरह-तरह के फूल हैं। वातावरण में गर्मी और नमी थी। इतनी गर्मी और नमी जो हाल में नहीं थी।

ज़ेन्या ने सोचा—मैं कहाँ हूँ ? और आगे वढ़ने की उसकी हिम्मत नहीं हुई···वह सोच रहा था —यह जगह तो जंगल की तरह है···और यह सब एक सपने की तरह है। निश्चय ही यह सपना है ! मैं शायद सो रहा हूँ।

खैर···जव कँटीली झाड़ियों में से ज़ेन्या ने रास्ता खोजा तो जगह-जगह खरोंचें लग गयीं। तव ज़ेन्या ने सोचा कि सोना ही वेहतर है···और इस तरह जव उसकी वह वेहोशी-सी हालत दूर हुई तो उसने देखा कि पीला आसमान खूव चमक रहा है···पेड़ों के वीच से उसे साफ आसमान दिखायी दे रहा था। गर्मी वहुत थी। उसे लगा कि मजेदार सपना अव भी चल रहा है।

और रास्ता खोजते-खोजते जव वह जंगल के किनारे पहुँचा तो उसने चार हाथी देखे। वे हाथी अपनी सूँड़ों में वड़े-वड़े लट्ठे दवाये हुए जा रहे थे। सवसे आगेवाले हाथी पर एक दुवला-पतला काला आदमी वैठा हुआ था। वह कमर तक नंगा था, उसके सिर पर पगड़ी थी।

कुछ दूर पर गांव की झोंपड़ियों से धुआँ उठ रहा था। ज़ेन्या की समझ में अव आया कि वह कहाँ का सपना देख रहा है—वह भारत का सपना देख रहा था। उसने सोचा—यह तो सचमुच मजे की वात है··· उसने सोचा, अभी और मजेदार चीजें दिखायी पड़ेंगी।

"तुम कौन हो ?" हाथी पर बैठे हुए आदमी ने झेन्या से पूछा, "अंग्रेज हो ? पुर्तगाली हो ? या अमरीकन हो ?"

"नहीं···मैं रसियन···रूसी हूँ !" झेन्या ने टूटी-फूटी अंग्रेजी में कहा। और अपनी बात पूरी तरह से समझाने के लिए उसने अपनी तरफ इशारा किया और बोला, "हिन्दी-रूसी भाई-भाई !"

यह सुनते ही हाथी पर बैठे आदमी का चेहरा चमकने लगा और उसने इतनी जोर से सिर हिलाया कि ताज्जुब होता था कि उसकी पगड़ी सिर से क्यों नहीं गिरी ? उसने झट-से हाथी को झुकाया और झेन्या को अपने साथ बैठा लिया। और वह पूरा काफिला—चार हाथियों का काफिला—शान से गाँव की ओर बढ़ने लगा।

रास्ते में बहुत-से बच्चे भी मिले।

हाथी पर बैठे हुए आदमी ने उन बच्चों से कुछ ऊँची आवाज में कहा, उन्होंने बड़ी अचरज-भरी निगाहों से एक सोवियत बच्चे को ताका और गाँव की तरफ भागे। जब हाथियों का काफिला गाँव में पहुँचा तो गाँव की पूरी आबादी ही अकेली पतली गली में उमड़ आयी थी।

कितना अनोखा स्वागत था !

झेन्या को बड़े आदर से नीचे उतारा गया। वे लोग उसे कमरे में ले गये और खाना खिलाया। खाने के बाद तमाम लोगों ने उससे हाथ मिलाया, और देर तक एक लम्बा हिन्दुस्तानी गीत गाते रहे। झेन्या ने भी गाने में साथ दिया, जैसा भी वह गा सकता था, उसने गाया। सब लोग बहुत खुश हुए। उसके बाद झेन्या ने अपना एक गाना गाया, कुछ लड़के-लड़कियों ने उसके साथ गाया—बाकी साथ देते रहे।

इसके बाद कुछ लोगों ने एक हिन्दू लड़के से एक खास गीत सुनाने को कहा—जब वह गाने लगा तो झेन्या ने उसे समझ लिया, वह 'कत्यूशा' था—झेन्या भी खुलकर गाने लगा। बाकी लोग तालियों की थाप देते रहे। गीत खत्म होने पर उन्होंने फिर हाथ मिलाये और उनकी आवाजें गूँज उठीं—'हिन्दी-रूसी भाई-भाई।'

यह धूमधाम खत्म हुई तो लोग तरह-तरह की बातें करने लगे। अंग्रेजी न झेन्या को आती थी और न गाँववालों को, इसलिए उन्हें यह मालूम करने में काफी दिक्कत हुई कि झेन्या दिल्ली जाने की जल्दी में तो नहीं है। और यह कि वह रूसी दूतावास तो नहीं जाना चाहता ! झेन्या को कोई जल्दी नहीं थी।

थोड़ी ही देर में दूसरे गाँव से कुछ लोग आ गये जो सम्मानित अतिथि को अपने गाँव में ले जाना चाहते थे। उस दिन वह तीन गाँव घूमा।

तीनों गावों में वही सब धूमधाम हुई जो पहले में हुई थी।

एक चौथे गांव में जेन्या ने रात गुजारी। सुबह पांचवें गांव के लोग उसे लेने पहुंचे। लेकिन अब वह उठा तो कुछ कराह रहा था।

लेकिन जहां दोस्ती के हजारों हाथ तुम्हें 'हिन्दी-रूसी भाई-भाई!' के नारे के साथ उठा लें···और प्यार आसमानी ऊंचाइयों को छूने लगे, वहां सब दुख भूल जाता है।

तभी सौभाग्य से मोटर की आवाज सुनायी पड़ी जो पास के रेलवे स्टेशन तक जा रही थी और जेन्या को ले जानेवाली थी।

जेन्या पसीने से लथपथ था। हंसते-मुस्कराते गांववाले उससे गले मिले, हाथ मिलाये। तभी दो लड़कियां दौड़ती हुई आयीं और उन्होंने जेन्या के गले में फूलों की माला पहना दी। जेन्या थोड़ा सकुचा गया। तीन विद्यार्थियों ने केलों का गुच्छा उपहार में दिया। सब गांववालों की ओर से अध्यापक ने जेन्या की यात्रा के लिए शुभकामनाएं प्रकट कीं। बच्चों ने उससे कहा कि मास्को के बच्चों को हिन्दुस्तानी बच्चों का प्यार दें। कुछ ने उसके हस्ताक्षर भी मांगे, जैसे कि वह कोई मशहूर आदमी हो। जेन्या मना भी कैसे करता?

केले के गुच्छे को दोनों हाथों से पकड़े-पकड़े जेन्या ने चारों तरफ झुक-झुककर सबके अभिवादन का उत्तर दिया।

और जैसे ही लोग उसे मोटर में चढ़ा रहे थे, वह एकाएक गायब हो गया। बस···गुम हो गया।

यह बड़ी हैरत की बात थी। लेकिन इससे भी ज्यादा हैरत की बात यह थी कि गांववालों को इस घटना से कतई ताज्जुब नहीं हुआ। वे उसी क्षण जेन्या के बारे में एकदम सबकुछ भूल गये थे।

लेकिन पाठको! आपको भी इस बात पर आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि वे गांववाले जेन्या के बारे में इतनी जल्दी सबकुछ कैसे भूल गये।

सा···रे···ग···म···ओ वोल्का इब्न अल्योशा

बग़ैर समझे-बूझे जादुई कालीन पर सो जाना खतरे से खाली नहीं है।

होताभ और वोल्का बुरी तरह थक चुके थे। चारों तरफ के अंधियारे और खामोशी ने उन्हें और भी थका डाला था। दोनों को पता ही नहीं चला कि वे कब ऊंघने लगे। कम्बल तो था ही, उसकी गर्मी भी आराम दे रही थी।

वोल्का टाँग सिकोड़कर आराम से सो गया था। लेकिन होताब अपने घुटने मोड़े ही बैठा था और उसी हालत में सो गया था। तभी उसने एक खौफनाक सपना देखा-

डेविड के लड़के सुलेमान के नौकर वजीर आसिफ इब्न बराखिया के साथ एक बार फिर उसे कैद करने को निकल पड़े हैं। वे उसे मिट्टी की सुराही में बन्द करना चाहते हैं और उन्होंने गले तक उसे मिट्टी की सुराही में ठूँस भी दिया है···और वह सुराही की गर्दन में फँसा हुआ बेपनाह कोशिशें कर रहा है कि किसी तरह बाहर निकले। इतना ही नहीं, उसके नौजवान दोस्त वोल्का को भी वे लोग एक सुराही में कैद करने ही वाले थे। अगर दोनों बन्द हो गये तो फिर कभी नहीं निकल पायेंगे। और उधर जेन्या भी जिन्दगी-भर फँसा रह जायेगा, उसे भी फिर कोई नहीं बचा पायेगा।

वह उस सुराही की गर्दन से निकल आना चाहता था, सो उसने बड़े जोर से अपने को उछाला···

और उछलना था कि उसकी आँख भी खुल गयी और वह गहरे अन्धकार में कालीन के नीचे गिर पड़ा।

किस्मत की बात यह हुई कि उसकी चीख वोल्का ने सुन ली, और किसी तरह होताब की बायीं बाँह उसकी पकड़ में आ गयी। लेकिन होताब बहुत भारी था और वोल्का उसे ऊपर कालीन पर नहीं खींच पा रहा था। तभी होताब ने अपनी दाढ़ी से बालों का गुच्छा-का-गुच्छा नोंच लिया और मन्त्र फूंक दिया। अगर यह न हो पाता तो दोनों ही कालीन से लुढ़ककर नीचे गहरे अन्धकार में गिर पड़ते। मन्त्र फूंकने के बाद वोल्का बहुत आसानी से होताब को खींच सका।

कालीन पर आते ही होताब गाने लगा, 'सा···रे···ग···म! ऐ वोल्का सा···रे···ग···म···!' होताब राग अलाप रहा था और नाच भी रहा था। हर बार यही लगता था कि वह अब कालीन से नीचे गिरा, अब नीचे गिरा।

एकाएक उसने गाना बन्द कर दिया और अपनी दाढ़ी में से बहुत बाल नोच लिये। वोल्का आश्चर्य से देखता रह गया—आखिर इसने यह बाल क्यों नोचे?

बात असल में यह थी कि जेन्या को दासता से मुक्त करने के लिए अब खतरनाक उड़ान की कोई जरूरत नहीं रह गयी थी। तभी अँधेरे में से उछलकर जेन्या कालीन पर आ गिरा। उसके हाथों में करीब दस किलो का केलों का गुच्छा था।

"अरे ज़ेन्या !" अचरज और खुशी से वोल्का चीख उठा।

जादुई कालीन इतना बोझ नहीं सँभाल पाया। सीटी की तरह आवाज करते हुए वह नीचे गिरने लगा। नीचे की ओर जाते ही नमी और ठण्डक बढ़ने लगी।

"होताभ !" वोल्का चिल्लाया, "बादलों के ऊपर चलो !"

लेकिन होताभ ने जवाब नहीं दिया। कोहरे के कारण वे होताभ को अच्छी तरह देख भी नहीं पा रहा था। होताभ अपनी दाढ़ी से जल्दी-जल्दी बाल नोंचने में लगा था। बाल टूटने की आवाज होती थी, जैसे चिकारे का तार टूटता हो। और हर बार होताभ निराश होकर बाल फेंक देता था और दूसरा तोड़ता था···होताभ बहुत परेशान था···

तभी होताभ के कोट की गीली बाँह थामते हुए वोल्का ने पूछा, "होताभ ! यह माजरा क्या है ?"

"मेरा सत्यानाश हो ! मैं सिर-पैर तक भीग गया हूँ," होताभ ने लगभग रुँआसे स्वर में कहा।

"तुम्हीं क्या, हम सभी भीगे हुए हैं !" वोल्का ने गुस्से से कहा।

"मेरी दाढ़ी···मेरी दाढ़ी भीग गयी है !" होताभ ने दुख से कहा।

"तो क्या हुआ ?" ज़ेन्या ने मजाक किया।

"मेरी दाढ़ी बुरी तरह भीग गयी है !" होताभ ने फिर दुख से वही बात दुहराई, "मैं अब बच्चे की तरह बेबस हूँ ! कोई भी जादुई काम करने के लिए दाढ़ी का सूखा होना जरूरी है···एकदम सूखी होनी चाहिए !"

"हम जमीन से जा टकरायेंगे," वोल्का ने पथराई आवाज में कहा।

"सुनो सुनो !" ज़ेन्या ने बात सुझायी, "घबराने से काम बिगड़ जायेगा···गुब्बारों में उड़नेवाले ऐसे मौकों पर जो करते हैं, वही हमें करना चाहिए। वे अपना बोझ कम करते हैं···सारा बेकार सामान फेंक देते हैं···बस ठीक है···इन केलों को विदा दी जाये !" कहते हुए उसने केलों का भारी गुच्छा अन्धकार में फेंक दिया। बोझ कम होने से कालीन का नीचे गिरना धीमा हो गया, फिर नीचे की ओर जाना एकदम थम गया। कालीन कुछ ऊपर की ओर उठा कि तभी हवा का तेज झोंका आया और उन्हें दाहिनी ओर उड़ा ले गया।

वोल्का ने अपना कम्बल ज़ेन्या को भी उढ़ा लिया, और तीनों ही जादुई कालीन पर ऊँघने लगे।

मेरे दोस्त से मिलो !

कालीन उड़ रहा था। पूरब में चमकदार सूरज का गोला उदय हो रहा था। धीरे-धीरे गर्मी बढ़ती गयी और बर्फ पिघल गयी। होताभ करवट बदलकर और भी जोर से खर्राटे लेने लगा।

नमी और गर्मी के कारण जेन्या की नींद भी उचट गयी। धीरे से वह वोल्का के कान में फुसफुसाया, "हां, अब बताओ, यह बूढ़ा आदमी कौन है ?"

"खैर मानो या न मानो···यह बूढ़ा आदमी एक जिन्न है···अलिफ लैला वाला जिन्न ! जिन्दा जिन्न ? इसी की वजह से परीक्षा में वह सब गड़बड़-घोटाला हुआ था···यह बोलता जा रहा था और मैं रट्टू तोते की तरह दुहराता जा रहा था !"

"यह बोल रहा था ?" जेन्या ने आश्चर्य से होताभ को देखते हुए कहा।

"हां, यही बोल रहा था। लेकिन देखो, मेरे फेल होने की बात इसके सामने मत करना। इसने कसम खायी है कि अगर मेरे अध्यापकों ने मुझे फ़ेल किया तो उन्हें जान से मार डालेगा। मैं अपनी अध्यापिका वारवारा को इसके जादू से बचाना चाहता हूं···इसलिए फेल होने की बात इसे कतई न मालूम पड़े, समझे !" वोल्का भेद-भरे स्वर में जेन्या को बता रहा था।

"सचमुच !" जेन्या बोला।

"खैर, अब चुप ही रहो तो अच्छा है।"

"क्यों वोल्का···यही है तुम्हारा दोस्त जेन्या ?" होताभ ने पूछा।

"हां, मेरे दोस्त से मिलो !" कहते हुए वोल्का ने जेन्या का परिचय कराया। यह परिचय-वरिचय ऐसे हो रहा था जैसे वे सब जादुई कालीन पर न होकर धरती पर ही हों।

ऐ ताकतवर सुलतान, हम पर मेहरबानी करें !

उस दिन दो बार जादुई कालीन बादलों में से होकर गुजरा और दोनों बार होताभ की दाढ़ी गीली हो गयी। सारे जादुई करिश्मे धरे रह गये—यहां तक कि उन लोगों को खाना भी नसीब नहीं हुआ। सभी भूखे थे। जेन्या के हिन्दुस्तान के किस्से में भी मजा नहीं आ रहा था, क्योंकि [illegible] खाने की ओर से हट ही नहीं रहा था। एक और बड़ी मुसीबत थी

कोई ओर-छोर नजर नहीं आ रहा था। नीचे दूर-दूर तक नीला पानी दिखायी पड़ने लगा, जिसके बायीं ओर ऊबड़-खाबड़ पहाड़ों की कतार थी।

"यह काला सागर है," वोल्का और ज़ेन्या, दोनों साथ ही चीख पड़े।

"सत्यानाश हो…" होताभ चिल्लाया, "हम सीधे जा रहे हैं !"

तभी हवा का एक तेज झोंका आया और कालीन थोड़ा बायीं ओर मुड़ गया…उसका रुख काकेशश के समुद्री किनारे की ओर हो गया था। बादलों के बीच से इत्तफाक से ज़ेन्या को तुआप्से शहर दिखायी पड़ गया। व्यापारी नावें लंगर डाले किनारे पर खड़ी थीं। तभी सबकुछ कोहरे में ओझल हो गया। कालीन भी भीगने से भारी हो गया था और सीटी बजाता हुआ नीचे की ओर तेजी से जा रहा था। कुछ ही पलों में बादल ऊपर छूट गये और कालीन बहुत नीचे आ गया। तभी डूबते सूरज की रोशनी में मशहूर शहर सोची चमक उठा। सोची शहर सैलानियों का मनोरंजन-केन्द्र और आरामगाह था।

और देखते-देखते जादुई कालीन एक तैरनेवाले तालाब में गिर पड़ा। यह तालाब सेनोटोरियम का था। तीनों उड़ाके पानी निचोड़ते हुए तालाब से बाहर निकले।

"चलो गनीमत हुई," चारों ओर उत्सुकता से देखते हुए वोल्का ने कहा।

"अगर मेरी दाढ़ी सूख जाये तो सब रास्ते पर आ जायें !" होताभ बोला, "यह तो बुरी तरह भीगी हुई है।"

"यहाँ कोई रसोईघर होगा !" जेन्या ने सुझाया, "तुम चूल्हे के पास दाढ़ी सुखा सकते हो…ओह इस वक्त एक टुकड़ा रोटी और सॉसिज के लिए मैं सबकुछ दे सकता हूँ !"

"काश कुछ तले हुए आलू ही मिल जाते !" वोल्का ने बात जोड़ी।

"तुम लोगों की बातों से मेरे दिल पर धक्का लगता है…यह सब मेरी गलती है नौजवान दोस्तो !" होताभ ने दुखी स्वर में कहा।

"तुम्हारी गलती नहीं है…अच्छा आओ, हम यहाँ का रसोईघर ढूँढ़ें !" वोल्का ने होताभ को तसल्ली देते हुए कहा।

सेनोटोरियम की इमारत बहुत बड़ी थी। वे लोग टेनिस खेलने के मैदान से गुजरते हुए उन ऊँची-ऊँची मेहराबों के नीचे पहुँचे जो कि आलीशान महल की लगती थीं। इमारत की सभी खिड़कियाँ रोशनी से जगमगा रही थीं।

तभी किसी के पैरों की आहट [illegible]। जीने से कोई नीचे आ रहा था। एक चेहरा ऊपरवाली खि[illegible]

"जाफ़र ! जाफ़र···हम उन्हें फिर देख लेंगे···इस रात में कहाँ गुम हो जायेगी !"

"सुना तुमने !" होताम ने डर से कहा और लड़कों की बाँहें पकड़कर वह उन्हें झाड़ियों की ओर घसीट ले गया। डर के मारे उसका बुरा हाल था। तभी एक बेंच पर दो तौलिए पड़े दिखायी दिये···उन्हें देखते ही होताम खुशी से उछल पड़ा, "खुदा का लाख-लाख शुक्र ! इनसे मैं अपनी दाढ़ी सुखा लूँगा। और दाढ़ी सूख गयी तो मुझे दुनिया में किसी का डर नहीं है !"

लेकिन तौलिये भीगे हुए थे। फिर भी वह अपनी दाढ़ी उनसे रगड़ रहा था कि तभी एक हट्टा-कट्टा, रौबीला और लम्बे कद का अजरबेजानी जोकि लाल लबादा पहने हुए था, वहाँ आ निकला।

उसे देखते ही होताम उसके पैरों पर गिर पड़ा, "ऐ ताकतवर सुलतान। हम पर मेहरबानी करें···हमें माफ़ कर दें ! आप चाहे मेरा सिर उतार लें, पर इन नौजवान लड़कों की कोई गलती नहीं है···इन्हें माफ़ कर दें··· बड़ी कच्ची उम्र है इनकी !"

तभी वोल्का ने समझदारी का काम किया। वह जाफ़र को एक तरफ़ बुला ले गया और उसे कुछ समझाया। फिर जाफ़र ने होताम की हरकतों पर ध्यान नहीं दिया। वह तीनों को खाना खिलाने के लिए अपने कमरे में ले गया। उन्हें कमरे में बैठाकर वह खाने का इन्तज़ाम करने चला गया। इस बीच जेन्या की नज़र एक पंखे पर पड़ी। उसने फ़ौरन पंखा चला दिया और होताम की दाढ़ी सुखा दी। दाढ़ी का सूखना था कि होताम की जान-में-जान आ गयी। वह गर्व से बोला, "अब वह सुलतान जाफ़र एक नहीं सैकड़ों सिपाहियों को बुला ले···अब हमारा बाल भी बाँका नहीं हो सकता !"

"वह सुलतान नहीं है," वोल्का ने फिर कहा।

"मुझे सिखाओ मत !" कहते हुए होताम ने दो बाल तोड़े और पलक झपकते ही वे तीनों वहाँ से तीन मील दूर एक रेतीले किनारे पर पहुँच गये।

कुपढ़ होना कितना बुरा है !

थोड़ी ही देर बाद जोर से बारिश होने लगी। सोची शहर में बहुत पानी बरसा। और कुछ देर में बारिश का तूफ़ान वहाँ भी पहुँच गया जहाँ वे तीनों यात्री बैठे थे। वे तीनों काले सागर के किनारे रात बिताना चाहते थे।

किस्मत से आते हुए तूफान के आसार उन्हें नजर आने लगे। एक बार फिर बुरी तरह से भीगने और सर्दी खाने के लिए कोई भी तैयार नहीं था। खासतौर से होताभ की दाढ़ी को तो सूखा रखना ही था। अब चारा यही था कि तीनों और कहीं दक्षिण की तरफ उड़ जायें। लेकिन उस घुप्प अंधेरे में उड़ते हुए किसी भी पहाड़ से टकराकर चकनाचूर हो सकते थे। कुछ देर के लिए वे झाड़ियों के नीचे रुक गये और बचने की तरकीब सोचने लगे कि कहां जाना चाहिए।

"सुनो दोस्त !" ज़ेन्या खुशी से बोला, "बस, बात बन गयी। हम होताभ की दाढ़ी पर तेल चुपड़ दें।"

"उससे क्या होगा ?" होताभ ने पूछा।

"तब तुम्हारी दाढ़ी बाढ़ आने पर भी नहीं भीग सकती, समझे !"

होताभ ने कई बाल तोड़ लिये, फिर उसने एक बाल के दो टुकड़े किये और देखते-देखते उसकी दाढ़ी पर अपने आप तेल चुपड़ गया। फिर उसने दूसरे बाल के टुकड़े किये और आनन-फानन उन्होंने अपने को एक आरामदेह संगमरमर की खूबसूरत गुफ़ा में पाया जो वहीं गहरे कगार पर एकदम बन गयी थी। जून महीने का वह भयंकर तूफान आया और बाहर उसकी आवाज गूंजती रही···और यहां संगमरमर की गुफा में शानदार कालीन बिछे हुए थे, जिन पर बहुत बढ़िया खाना मौजूद था। तीनों ने पेट-भर खाया और गहरी नींद में सुबह तक सोते रहे।

सुबह मोती की तरह साफ़ लहरों के शोर ने उन्हें जगाया। सूरज काफी पहले उदय हो चुका था। उन्हें हवाई जहाज की आवाज सुनायी पड़ी, जो अभी दूरी पर उड़ रहा था। मुसाफिरों को ले जानेवाला वह चांदी की तरह चमकता हुआ हवाई जहाज कुछ ही क्षणों में समुद्र के ऊपर आ गया।

"ओह, कितना अच्छा होता अगर हम इस हवाई जहाज से मास्को जा सकते !" ज़ेन्या ने गहरी-सी आह भरते हुए कहा।

"खयाल तो बुरा नहीं है," वोल्का ने भी अपनी राय दी।

यह सुनते ही होताभ ने अपनी जेब से बहुत पतला-सा सफेद तार-सा निकाला। वह चांदी के तार की तरह लग रहा था। उसने तार के कई टुकड़े कर डाले और बस आंख झपकते ही तीनों उस हवाई जहाज की बेहद आरामदेह सीटों में बैठे नजर आने लगे।

मज़े की बात यह थी कि हवाई जहाज के मुसाफिरों में से किसी ने भी आश्चर्य प्रकट नहीं किया। वे जैसे यही जानते थे कि ये तीनों उनके साथ शुरू ही से चले आ रहे हैं !

"होताभ, वह चांदी के तार की तरह क्या चीज थी जिसे तुमने तोड़ा

था ?" जेन्या ने उत्सुकता से पूछा।
"वह मेरी दाढ़ी का बाल था !" होताब ने बताया।
"लेकिन तुमने तो उसे जेब से निकाला था !"
"मैंने पहले ही एक बाल तोड़कर जेब में रख लिया था···मैंने सोचा···शायद कोई मुसीबत···मुझे माफ़ करना, क्योंकि मैंने यकीन नहीं किया था कि तेल से दाढ़ी सूखी रह सकेगी ! असल बात यह थी।" होताब ने सकुचाते हुए बताया।
"तुम विज्ञान में विश्वास नहीं करते ?" जेन्या ने बड़े ताज्जुब से पूछा।
"मैं विज्ञान-फिज्ञान सब जानता हूँ !" होताब ने कुछ कुढ़कर कहा, "लेकिन पता नहीं तुम्हारा विज्ञान कैसा है जो यह बताता है कि दाढ़ी को भीगने से बचाने के लिए तेल चुपड़ लेना चाहिए।" फिर बात बदलने के लिए उसने उत्साह से कहा, "यह हवाई रथ बड़ा आरामदेह है···खूब तेज भी चलता है ! पहले तो मैंने सोचा था कि हम किसी बहुत बड़ी लोहे की चिड़िया के पेट में आ गये···मैं तो सचमुच भौंचक्का रह गया था···"
···नीचे धरती पर मास्को सागर लहरा रहा था। मास्को सागर को देखते ही गर्व से वोल्का ने बताया, "इस सागर को मेरे मामा ने बनाया है।"
"इस सागर को ?" होताब ने भौंहें सिकोड़ते हुए पूछा।
"हाँ !"
"तुम्हारे मामा ने ?"
"हाँ !"
"तुम यह कहना चाहते हो कि खुदा तुम्हारा मामा है !" होताब ने दुख-भरे स्वर में कहा।
"मेरे मामा खुदाई के आपरेटर हैं···समझे, उनका नाम है···ब्लादीमीर नेकरासोव। आजकल भी वे कुइबीशेव सागर की खुदाई में लगे हुए हैं···तुम यकीन तो करो !" वोल्का ने उसे विश्वास दिलाया।
"अरे वोल्का···मैं तुम्हारी इतनी इज्जत करता हूँ, तुम्हारी बात पर यकीन करता हूँ···"होताब एकदम गुस्से से लाल-पीला हो रहा था, "और अब तुम्हें सफ़ेद झूठ बोलते शर्म नहीं आती, और वह भी मुझसे !"
तभी पास की सीट पर बैठे हुए एक मुसाफ़िर ने वोल्का को टोककर पूछा, "ब्लादीमीर नेकरासोव क्या सचमुच तुम्हारे मामा हैं ?"
"हाँ हाँ, वे मेरी माँ के भाई लगते हैं !" वोल्का ने कहा।
"तुमने पहले क्यों नहीं बताया ?" उस मुसाफ़िर ने कहा, "अरे तुम,

इतने मशहूर आदमी के भानजे हो···अरे भाई, नेकरासोव के क्या कहने, वे हजारों में एक आदमी हैं। जहाँ कुइवीशेव सागर की खुदाई हो रही है, मैं अभी वहीं से लौट रहा हूँ। मैं तुम्हारे मामा के साथ ही काम करता हूँ! समझे···" उस मुसाफिर ने फिर होताभ से कहा, "अगर तुम जानना ही चाहते हो तो मैं बताता हूँ!" कहकर वह कुछ अपने थैले में खोजने लगा और एक अखबार होताभ को थमा दिया और उसमें छपी तस्वीर दिखाते हुए कहा, "यह देखो!"

"यही मेरे मामा की तस्वीर है!" वोल्का खुशी से बोला, "मैं इस अखबार को ले लूँ, मैं अपनी माँ को दिखाऊँगा!"

"जरूर, तुम रखो इसे," कहते हुए मुसाफिर ने होताभ की ओर देखा और पूछा, "तुम्हें अब भी शक है? अगर है तो यह सुर्खी पढ़ो : 'शानदार समुद्र बनानेवाले।' यह सब इन्हीं के मामा के बारे में है। इसे पढ़ो, यहाँ से···" कहते हुए उसने अखबार बढ़ा दिया।

होताभ ने अखबार ले लिया और पढ़ने का बहाना करने लगा। सच बात तो यह थी कि उसे पढ़ना आता ही नहीं था, और वह यह बात जताना नहीं चाहता था।

इसीलिए हवाई अड्डे से घर जाते वक्त होताभ ने वोल्का से कहा कि वह उसे पढ़ना-लिखना जरूर सिखा दे क्योंकि जब उस मुसाफिर ने उसे अखबार पढ़ने के लिए कहा था तो वह शर्म से गड़ा जा रहा था।

पर होताभ की जिद थी कि उसे पहले अखबार ही पढ़ना सिखाया जाये।

कौन सबसे अमीर है!

"मेरी आँखों के तारे वोल्का! चलो, जरा टहल आयें!' होताभ प्यार से बोला।

"लेकिन एक शर्त पर! वह यह कि तुम हर मोटर-बस से बैल की तरह चौंकोगे नहीं। खैर, अब तो बैल भी नहीं चौंकते, बेकार में उनका नाम ले रहा हूँ···पहले तुम यह मान लो कि ये मोटर-बसें बदकिस्मती की अलामत नहीं हैं बल्कि इंजनों से चलती हैं!"

"ऐ वोल्का इब्न अल्योशा! मैंने सुन लिया और मानूंगा भी!' होताभ ने कहा।

"ठीक है, तो मेरे साथ-साथ दोहराओ—मैं कभी भी डरूँगा नहीं···'

में पहुँचे। वोल्का को देखते ही दानवों ने झुककर कड़कड़ाती आवाज में स्वागत किया···बोलते वक्त उनके मुँह से आग की लपटें निकलती थीं। यह सब देखकर वोल्का घबरा गया।

"इनसे डरने की कोई बात नहीं है, ये इफरत हैं और इन्हें तुम्हारी शान बढ़ाने के लिए पहरेदारों की तरह रखा है!" होताभ ने दानवों का परिचय देते हुए कहा।

"ठीक है, हां तो होताभ, चलो···पहले तुम्हारे महल देख लूं।"

"ये मेरे महल नहीं, ये तुम्हारे हैं!" साथ-साथ चलते हुए होताभ ने उसकी बात ठीक कर दी।

पहला महल पूरा-का-पूरा गुलाबी संगमरमर का बना हुआ था। उसमें नक्काशीदार चन्दन के दरवाजे थे, उन दरवाजों में चांदी की कीलें गड़ी हुई थीं और चांदी के ही सितारों की फूल-पत्तियां बनी थीं।

दूसरा महल आसमानी रंग के संगमरमर का था। उसमें दस बड़े-बड़े आबनूस के दरवाजे थे। उनमें सोने की कीलें थीं और फूल-पत्तियों की जगह हीरे-जवाहरात जड़े हुए थे। महल के बीचोबीच एक बड़ी बावड़ी थी, जिसकी तह शीशे की तरह चमक रही थी और उसमें सुनहरी मछलियां तैर रही थीं।

वे तीसरे महल में घुसे···यह महल चमचमा रहा था! देखते ही वोल्का बोला, "यह तो मैट्रो की तरह है।···उतना ही चमचमाता हुआ।"

"अभी तुमने पूरा कहां देखा है!" होताभ बोला।

वह उसे भीतर ले गया। एक बार फिर दानवों ने उसका स्वागत किया। होताभ ने उसे दिखाया—सामने दरवाजे के पास सोने का पटल था। उस पर कुछ खोद-खोदकर लिखा गया था—उसे पढ़ते ही वोल्का को अजीब-सी अनुभूति हुई···उसे खुशी भी हुई और अफसोस भी हुआ। उस पर खुदा था:

'नौजवानों के सिरताज, बुद्धिमानों में सबसे बुद्धिमान, सुन्दरतम··· योग्य और कुशल उस नौजवान के ये महल हैं जो भूगोल का अन्यतम विद्यार्थी है, विज्ञान का धुरन्धर पण्डित है, गोताखोरी में सबसे साहसी है, तैराकों का अगुआ है, वालीवाल के खिलाड़ियों का नेता है, बिलियर्ड और पिंगपांग का अद्भुत खिलाड़ी और चैम्पियन है···वही राजसी नौजवान वोल्का इब्न अल्योशा इन महलों का मालिक है। युगों तक उसका नाम इसी तरह जगमगाता रहेगा और साथ ही उसके सौभाग्यशाली माता और पिता का नाम भी अमर रहेगा!'

"यहाँ यह न होता तो अच्छा था।" वोल्का ने कहा, "मेरा मतलब है

कि इन पर लिखा जाये—ये महल जिला शिक्षा-विभाग की सम्पत्ति हैं।"

"कैसा शिक्षा-विभाग ?" होताभ बोला।

"अरे मेरे जिले का शिक्षा-विभाग, जहाँ मैं पैदा हुआ, बढा और मैंने पढना-लिखना सीखा !" वोल्का ने कहा।

"भई ये शिक्षा-विभाग कौन है, मैं नही जानता···तुम कह रहे हो तो कोई योग्य आदमी ही होगा···! पर इन महलो के मालिक सिर्फ तुम होगे, और कोई नही !"

"लेकिन सुनो तो···"

"मैं कुछ भी नही सुनना चाहता···ये महल सिर्फ तुम्हारे है, और कोई इनका मालिक नही हो सकता," होताभ ने बहुत गुस्से से कहा। उसकी आँखो से चिनगारियाँ फूट रही थी, फिर अपने को बहुत सँभालते हुए उसने कहा, "तुम्हे शायद मेरी बात मजूर नही है।"

"बिलकुल नही ! मुझे इतनी जगह की क्या जरूरत ?"

होताभ दुखी हो गया, दुख से गहरी साँस लेते हुए उसने कहा, "तो ठीक है, फिर मैं तुम्हें कुछ और चीज दूँगा।"

धीरे-धीरे महल धुँधले पडने लगे और हवा मे घुल गये। दानव भी जोर से चीखते हुए ऊपर आसमान मे उड गये और गायब हो गये।

ऊँट की सवारी

अभी यह सब हुआ ही था कि एकाएक तमाम मैदान हाथियों, ऊँटों और खच्चरों से भर गया। काफिले-पर-काफिले चलते ही आ रहे थे। उन सब पर काले-काले सवार बैठे थे जो दूध जैसी पोशाकें पहने हुए थे। हाथियो की चिंघाड़ो, ऊँटो और खच्चरों के हिनहिनाने की आवाजो से मैदान गूँज रहा था। उनके खुरो की आवाजें और घण्टियो के स्वर भी मैदान मे भर रहे थे।

तभी कीमती रेशमी कपडे पहने हुए एक ठिगना-सा काला आदमी हाथी पर से कूदा, मैदान के बीचोबीच आया और अपनी हाथीदांत की छडी से उसने जमीन पर तीन बार ठुकठुकाया। बस, एक सोता वही से फूट पड़ा और सभी जानवर शोर मचा-मचाकर पानी पीने लगे।

"ये सब तुम्हारा है वोल्का ?" शोर मे चीखकर होताभ ने बताया, "अब इस नाचीज तोहफे को कबूल करो !"

"ये सब मेरा है ? क्या मतलब है तुम्हारा ?" वोल्का ने पूछा।

"हां हां, सबकुछ—ये हाथी, ऊँट और खच्चर ! और जो सोना, हीरे व जवाहरात ये लादकर लाये हैं···और इनके साथ जितने हांकनेवाले आदमी हैं—यह सब तुम्हारी सम्पत्ति है !" होताभ ने खुशी से कहा।

···बातें बिगड़ती ही जा रही थीं। बोल्का ने सोचा—अभी-अभी तीन शानदार पर बेकार महलों का वह स्वामी बना था, और अब इस अपार सम्पत्ति का मालिक है···इन हाथियों का स्वामी है···और तो और, अब वह गुलामों को रखनेवाला जागीरदार भी बन गया है ! वह यही चाहता था कि किसी और के देखने से पहले ये सब गायब हो जाये। पर उसे लगा कि अगर वे तीनों महल बने रहते तो उसके जिले के काम आते···और अब वह इसी सोच में डूबा था कि कोई ऐसी तरकीब सूझ जाये जिससे यह सब धन और सम्पत्ति उसके जिले और शहर के काम आ सके। पर कुछ समझ में नहीं आ रहा था, सोचने का वक्त पाने के लिए उसने कहा, "क्यों होताभ, ज़रा ऊँट पर चढ़कर मौज ली जाये···तब तक ये लोग काफिलों की देखभाल करेंगे।"

"जरूर···बड़ा मजा आयेगा !" होताभ ने कहा।

और कुछ ही देर बाद दो कूबड़ोंवाला एक ऊँट शान से सड़क पर जाता हुआ दिखायी दिया। उस पर होताभ और बोल्का सवार थे।

जो देखता वही चीखता। 'ऊँट आया···ऊँट आया !' चीखते हुए बच्चे इधर-उधर दौड़ने लगे। सड़क पर तमाम आदमी जुट गये। जो सुनता वही निकल आता। लोगों ने ऊँट को चारों ओर से घेर लिया था। पर जैसे-तैसे ऊँट चौराहे पर पहुंचा। और वह चौराहा पार करने ही वाला था कि उस सड़क की बत्ती लाल हो गयी। सड़क पर चलने के अपने नियम थे। ऊँट बेचारा क्या जाने कि क्या नियम हैं और क्या नहीं···वह रुका नहीं, उस लाइन पर भी नहीं रुका जहां पर रुकने के लिए लिखा होता है···वह शान से आगे बढ़ गया। बोल्का ने बहुत कोशिश की कि ऊँट रुक जाये क्योंकि वह जानता था कि लाल बत्ती का मतलब है—रुक जाओ। लेकिन ऊँट बढ़ता गया। तभी पुलिसवाले ने चालान करने के लिए अपनी कितबिया निकाली।

वह तो कहिए बचत हो गयी···क्योंकि तभी एक कार का हार्न बहुत तेजी से बजा, ब्रेक लगने की आवाज सुनायी दी और दुर्घटना होते-होते बच गयी। कार का ड्राइवर चीखता हुआ निकला और उन दोनों पर बिगड़ उठा।

पुलिसवाला उन दोनों को ऊँट समेत एक ओर ले गया। मजा लेने के लिए भीड़ भी जमा हो गयी और तरह-तरह के फिकरे सुनायी पड़ने लगे।

कोई कह रहा था, 'अरे भई, ऊँट पर सवारी करनेवालों को मैं मास्को में पहली बार देख रहा हूँ।'

दूसरी आवाज आयी, 'वह तो बचाव हो गया नहीं तो अभी भयंकर टक्कर होती !'

एक और आवाज सुनायी दी, 'सड़क के नियम भी नही मालूम ? कैसे लोग हैं ये ! ये ऊँट आया कहाँ से ?'

वोल्का का दिमाग चकरा गया। ऊपर लटके-लटके ही उसने पुलिसवाले से गलती के लिए क्षमा माँगी, "अब फिर ऐसा नही होगा ! हमें जाने दीजिए। ऊँट भी भूखा है'''यह गलती हमसे पहली बार हुई है'''"

"भई मैं मजबूर हूँ।" पुलिसवाले ने कहा, "सब यही कहते हैं कि पहली बार गलती हुई है !"

वोल्का इस कोशिश में लगा था कि किसी तरह पुलिसवाला छोड़ दे, तभी होताब ने उसे बाँह से अपनी ओर खींचा। "ये तुम क्या कर रहे हो वोल्का !" होताब बोला, "क्यो इन लोगो को मुँह लगाते हो'''तुम्हारा यह घिघियाना मुझे अच्छा नही लगता, और वह भी मुझे बचाने की खातिर ! अरे, ये लोग तुम्हारे पैरों की धूल बराबर नहीं हैं'''तुम क्यों गिड़गिड़ा रहे हो ?"

वोल्का ने होताब को परे कर दिया लेकिन तभी उसे लगा कि भूगोल की परीक्षावाले दिन जैसी कोई बात हुई है'''वह जो बोलना चाहता था, नहीं बोल पा रहा था'''वह कहना चाहता था, 'मेहरबानी करके हमें जाने दीजिए'''फिर कभी ऐसा नही होगा !' लेकिन उसके मुँह से निकला, "तुम्हारी ये जुर्रत ! दो कौड़ी के पुलिसमैन की यह हिम्मत ! मुझे रोकना चाहता है। फौरन झुककर माफी माँगो नही तो अभी मजा चखाता हूँ ! मुझे अपनी दाढ़ी की सौगन्ध'''नहीं-नहीं, होताब की दाढ़ी की सौगन्ध जो मैंने तुम्हें खाक में न मिला दिया ! समझे।"

वोल्का के मुँह से एकाएक यह ललकार सुनकर लोगों को गुस्सा नही आया बल्कि हक्के-बक्के रह गये।

तभी वह आगे बोला, "मैं इस शहर का सबसे नामी नौजवान हूँ। तुम लोग मेरे पैरों की धूल बराबर भी नही हो'''" वह कहता जा रहा था कि पुलिसवाले ने कहा, "ठीक है, वहाँ पुलिस थाने पर पता चलेगा कि तुम कौन हो !"

तभी मौका देखकर वोल्का ने होताब से कहा, "फौरन हमें और इस ऊँट को कहीं बहुत दूर ले चलो'''शहर के बाहर। नही तो अब मुसीबत में पड़ जायेंगे। सुन रहे हो'''फौरन भागो ! यह मेरा हुक्म है।"

"मैं उनके साथ चाहे जो कुछ करूँ ? तुम नाराज नहीं होगे न ?"

"सवाल ही नहीं उठता'''मैं तुमसे कैसे नाराज हो सकता हूँ !"

"अच्छा, तो कसम खाओ !"

"मैं कसम खाता हूँ !"

"अब ठीक है'''बात असल यह है होताभ कि तुम्हारी दी हुई चीजों का मैं कोई फायदा इस धरती पर नहीं उठा सकता। फिर मैं इतनी धन-दौलत का करूँगा भी क्या ? तुम्हीं बताओ ?"

"क्यों, तुम अमीरों से भी अमीर हो सकते हो, और क्या !" होताभ ने समझाया, "क्या तुम देश के सबसे दौलतमन्द आदमी नहीं बनना चाहते ? दौलत का मतलब है ताकत, नाम और दोस्त !"

"खरीदे हुए नाम और दोस्तों की किसे जरूरत है ? वह नाम किस काम आयेगा जो सच्ची मेहनत से देश की सेवा करके नहीं कमाया गया है बल्कि पैसे से खरीदा गया है ?" वोल्का ने तर्क किया।

"तुम गलत सोचते हो वोल्का ! पैसे से आदमी को सबसे बड़ी ताकत मिलती है'''वह लोगों पर अपना सिक्का जमा सकता है !" होताभ ने कहा।

"हमारे देश में यह नहीं होता," वोल्का बोला।

"यानी अब तुम यह कहोगे कि तुम्हारे देश में कोई अमीर बनना ही नहीं चाहता !" ठहाके लगाते हुए होताभ ने जैसे अकाट्य बात कही।

"हाँ, लोग अमीर नहीं बनना चाहते !" वोल्का ने बताया, "जो आदमी जितना अच्छा और उपयोगी काम करता है उसे उतना ही ज्यादा पैसा मिलता है। यह ठीक है कि सब ज्यादा-से-ज्यादा कमाना चाहते हैं, लेकिन ईमानदारी और मेहनत से !"

"तो मेरी सलाह मानो !" होताभ ने समझाया, "ये जितनी भी चीजें हैं, इन्हें पैसों में बदल लो और पैसा लोगों को उधार दे दो'''यह तो सम्मानपूर्ण काम है—जिसे जरूरत हो उसे उधार पैसा दे देना !"

"तुम्हारा दिमाग बहक गया है'''रूस का नागरिक भला यह काम कर सकता है ! अगर कोई बदमाश ऐसा करे भी तो कोई उसके पास फटकेगा भी नहीं। अगर किसी को पैसे की जरूरत हो हो तो वह 'आपसी मदद कोष' से ले सकता है या अपने किसी दोस्त से माँग सकता है''' समझे ?" वोल्का ने गम्भीरता से बताया।

"एक और तरीका हो सकता है !" होताभ ने दूसरी बात सुझायी, "सारी दौलत से चीजें खरीद लो और शहर के हर हिस्से में अपनी दूकानें खोल दो। तुम आनन-फानन बड़े व्यापारी बन जाओगे और लोग तुम्हारे

पास मदद के लिए आया करेंगे !"

"तुम्हें शायद मालूम नहीं, हमारे यहाँ सारा व्यापार सरकार या सहकारी समितियाँ करती हैं ! अपनी दूकान खोलकर मुनाफा कमाना···" वोल्का कह ही रहा था कि होताभ ने बात काट दी, "···अच्छा इस बात को भी छोड़ो। अगर तुम कुछ चीजें बनाओ···!"

"बिलकुल !" वोल्का ने खुशी से कहा, "अब तुम मेरी बात समझ पाओगे !"

"चलो, कुछ बात तो बनी !" होताभ ने कहा, "हाँ, एक दफा तुमने बताया था कि तुम्हारे पिताजी फैक्टरी में फोरमैन हैं ! ठीक है न ?"

"हाँ, उनके ऊपर भी एक चीफ इंजीनियर हैं, और उनके ऊपर एक डायरेक्टर भी हैं !" वोल्का ने बताया।

"बस बात बन गयी !" होताभ ने खुशी से कहा, "तुम इस दौलत का बहुत अच्छा इस्तेमाल कर सकते हो। जिस फैक्टरी में तुम्हारे पिताजी काम करते हैं, वह उन्हें खरीदकर दे दो···साथ ही कुछ और फैक्टरियाँ खरीद लो।"

"वह फैक्टरी पिताजी की है," वह बोला।

"कैसी बात करते हो वोल्का, अभी तो तुम कह रहे थे कि···" होताभ की बात उसने काट दी, "अच्छा तो सुनो···पिताजी जिस फैक्टरी में काम करते हैं वह उन्हीं की है, वही नहीं, सब खदानें, रेलवे, जमीन···नदियाँ, पहाड़, दूकानें, स्कूल, विश्वविद्यालय, क्लब, महल, नाटकघर, बाग-बगीचे और सिनेमाघर···ये सब हमारे हैं, जेन्या के भी हैं, उसके माँ-बाप के भी हैं और···"

होताभ ने इस बार बात काटी, "इसका मतलब है कि तुम्हारे पिताजी के कारोबार में कुछ हिस्सेदार भी हैं !"

"हाँ, देश में जितने भी इन्सान हैं, सब हिस्सेदार हैं !" वोल्का बोला।

"अजीब मुल्क है तुम्हारा···मैं कुछ भी नहीं समझ पाता," होताभ बड़बड़ाया और वहीं खाट के नीचे सो गया।

जादूगर सिदोरेली से होताभ की भिड़न्त !

होताभ दुखी था और उसे देखकर दया आती थी। वह मछली बन गया और वोल्का के उसी शीशे के बक्से में जा बैठा जिसमें मछलियाँ रहती

थी। शाम तक वह वहीं रहा। सात बजे वह कूदकर बाहर निकल आया। पंखे की हवा में अपनी दाढ़ी सुखायी और बोला, "तुम मेरे उपहारों को स्वीकार करने से इन्कार करते हो, यही बात मुझे चोट पहुँचाती है। लेकिन मैं यह जरूर जान गया हूँ कि क्यों तुम मेरे हर उपहार को ठुकराते आते हो। यह सारा गोलमाल तुम्हारी अध्यापिका वारवारा के कारण हो रहा है। मैं अब वारवारा से ही निपटूँगा···" कहते हुए उसने चार बाल तोड़े···कुछ भयंकर बात होने ही जा रही थी कि वोल्का चीखा, "नहीं-नहीं, प्यारे होताब! मेरी अध्यापिका का कोई कसूर नहीं है, सच कोई कसूर नहीं है···!" वोल्का ने कहा और उसका ध्यान इस बात की ओर से हटाने के लिए एक क्षण बाद ही वह बोला, "होताब, चलो सर्कस चलें! अगर हम और जेन्या गये तो टिकट नहीं मिल पायेंगे, तुम्हारे लिये टिकट ले लेना कोई मुश्किल नहीं है। तुम्हीं हमें सर्कस दिखा सकते हो, क्योंकि तुममें बहुत-सी ताकतें हैं।"

"तो फिर चलो, ऊँट पर ही चलते हैं। या ऊँट छोड़ो, आज हाथी पर चलें! लोग तुम्हें हाथी पर देखेंगे तो आँखें फटी रह जायेंगी!" होताब ने कहा।

"नहीं-नहीं, ऊँट या हाथी पर नहीं, अगर तुम्हें डर न लगे तो हम मोटर-बस से चले चलें?" वोल्का ने कहा।

"अरे डरूँगा क्यों?," होताब ने कुछ चिढ़ते हुए कहा, "पिछले चार दिनों से मैं इन लोहे की बैल-गाड़ियों को बराबर देख रहा हूँ!"

आध घण्टे बाद वोल्का, जेन्या और होताब मनोरंजन-पार्क में पहुँचे और सर्कस के तीन टिकट लेकर भीतर घुसे।

···सर्कस के खिलाड़ियों और करतबी आदमियों की कतारें-की-कतारें सर्कस पण्डाल के मध्य में बने घेरे में आने लगीं। वे चमकदार पोशाकें पहने हुए थे। धीरे-धीरे सब शान्त हो गया और सर्कस का खेल शुरू हुआ। घोड़े की नंगी पीठ पर चढ़कर कुछ सवारों ने करतब दिखाये, फिर झूले के खेल हुए। बीच-बीच में जोकर लोग भी मजा दे रहे थे···काफी खेलों के बाद इण्टरवल हो गया।

तभी जेन्या ने किसी को देखा और धीरे से बोला, "वोल्का, अच्छा यह होगा कि अब हम तीनों ही चले जायें···वह···वह···वारवारा जी यहाँ सर्कस में मौजूद हैं!" कहते हुए उसने एक ओर इशारा किया। देखते ही वोल्का सुन्न पड़ गया। अध्यापिका वारवारा के साथ उसकी पाँच साल की पोती भी थी। दोनों जने एकदम होताब के सामने खड़े हो गये ताकि वह वारवारा को न देखने पाये। फिर वोल्का ने धीरे से कहा, "सुनो होताब···

अब हम घर चलें···अब यहाँ कोई भी मजेदार खेल नहीं होगा, आज ज़रा गड़बड़-सा ही है।"

"अरे भई नहीं···इतना मजेदार तमाशा तो मैंने कभी देखा ही नहीं···अरे यह तो जादू का तम्बू है, तुम्हारा मन नहीं लग रहा तो जाओ, मैं चला आऊँगा," होताभ बोला।

लेकिन वे दोनों उसे अकेला भी नहीं छोड़ना चाहते थे, यह तो वारवारा के लिए और भी खतरनाक होता क्योंकि जिन्न होताभ उससे बेहद चिढ़ता था। खैर, अब चारा यही था कि इण्टरवल में वह वारवारा को न देखने पाये। तभी ज़ेन्या उसे एक परचा पढ़ाने लगा। उसने होताभ से कहा, "तुम पढ़ना चाहते थे न···लो यह परचा पढ़ो···हमें जो भी वक्त खाली मिले उसे इस्तेमाल में लाना चाहिए।"

"भई, मैं तुम्हारी तारीफ करता हूँ, बड़ी लगन है तुममें!" होताभ ने कहा और ज़ेन्या ने सर्कस के विज्ञापन का परचा उठाकर पढ़ाना शुरू किया—'यह' 'अ' अक्षर है। "मैंने कौन-सा अक्षर बताया?" ज़ेन्या ने पूछा।

'अ' अक्षर।

"बहुत अच्छे?" ज़ेन्या ने आगे पढ़ाना शुरू किया। और पढ़ाई में होताभ इतना डूब गया कि उसने और किसी तरफ ध्यान ही नहीं दिया। इण्टरवल खत्म होने तक होताभ ने अक्षर-ज्ञान प्राप्त कर लिया था और शब्दों को पढ़ना शुरू कर दिया था—'क···ल···बा···ता···र!'

तभी एक आइसक्रीम बेचनेवाला उधर आया। एक के बाद तेंतालीस आइसक्रीम लेकर होताभ पाँच मिनट में साफ कर गया।

तभी सर्कस का खेल शुरू हुआ और बताया गया—"दुनिया के मशहूर जादूगर सिदोरेली अब अपने कमाल दिखायेंगे।"

सिदोरेली का नाम सुनते ही देखनेवालों ने तालियाँ बजायीं और सर्कस का बैण्ड बजना शुरू हो गया। एक अधेड़ छोटे कद का आदमी मैदान में आया। वह नीली सिल्क की पोशाक पहने हुए था, जिस पर सुनहरी कढ़ाई में अजगर बने हुए थे। आते ही उसने झुक-झुककर दर्शकों को सलाम किया—यही सिदोरेली था! सिदोरेली जब मुस्कराता था तो उसका सोने का दाँत चमक उठता था।

"भई वाह!" होताभ ने तारीफ से कहा। "अरे भई, देखो न, इसी सिदोरेली को···इसके मुँह में सोने के दाँत निकले हैं!" होताभ ने आश्चर्य से कहा, "भई, यह खूब रही···मुँह में सोने के दाँत निकलना···बड़े खूबसूरत लगते हैं!"

तब तक सिदोरेली ने एक खेल दिखा डाला।

"कैसा लगा ?" जेन्या ने वोल्का से पूछा तो वोल्का ने देखा कि जेन्या के सब दाँत सोने के हो गये हैं !

"अच्छा लगा," वोल्का ने कहा तो जेन्या ने देखा कि उसके सब दाँत सोने के हो गये हैं। वह धीरे-से फुसफुसाया, "अरे वोल्का तुम्हारे सारे दाँत सोने के हो गये हैं।"

"यह सब होताभ की कारस्तानी है—तुम्हारे भी सोने के हो गये हैं।" वोल्का ने कुछ अफसोस से कहा। होताभ उनकी बातों पर कुछ मुस्करा रहा था। और उसके मुँह में भी सोने के दाँत झलक रहे थे।

कुछ चतुराई से वोल्का ने कहा, "देखो होताभ, हम तीनों साथ-साथ बैठे हैं "हम तीनों के ही दाँत सोने के हैं, इसलिए हर आदमी हमें ही देखेगा, इससे परेशानी होगी। तुम इन्हें असली दाँत ही बना दो।"

"भई, मैं तुम लोगों की सादगी से अब डरने लगा हूँ," होताभ ने कहा और उसी क्षण सबके दाँत जैसे थे वैसे ही हो गये।

[illegible]

उसे यही खल रहा था कि एक दो कौड़ी के आदमी की इतनी तारीफ हो रही थी। उसने अब तक इतने करिश्मे दिखाये थे, पर उसकी तारीफ करना तो दूर, कोई पहचानता तक नहीं था।

और जैसे ही दर्शकों ने फिर वाह-वाह की, होताभ अपने को नहीं रोक पाया। वह कूदता-फाँदता सिदोरेली के पास पहुँच गया। तब तक सिदोरेली अपना बहुत ही मशहूर खेल दिखाने लगा—उसने कई रिबनों को लपेटकर उनमें आग लगा दी और उन्हें मुँह में भर लिया। फिर उसने एक कटोरी से बहुत-सी बुरादे जैसी कोई चीज़ उठायी और मुँह में भर ली। फिर उसने मुँह पर पंखा किया—मुँह से धुआँ निकलने लगा और चिनगारियों के साथ-साथ लपटें भी दिखायी देने लगीं। दर्शक बहुत ज़ोर से तालियाँ पीटने लगे।

[illegible] वाज साफ सुनायी [illegible] की सफाई है !" [illegible]। फिर सिदोरेली को बाँह से एक ओर ठेलते हुए उसने अपना करिश्मा दिखाया। पन्द्रह रंगों की लपटें होताभ के मुँह में फूटने लगीं और किसी चीज़ के जलने की महक सर्कस में भरने लगी।

लोगों की बेपनाह वाहवाही और तारीफ ने होताभ के जले हुए दिल पर छींटे का काम किया। वह और भी जोश में आ गया। अँगुलियाँ चटकाते ही एक सिदोरेली की जगह छोटे-छोटे बहत्तर सिदोरेली दौड़ते हुए दिखायी देने लगे! खेल दिखाने की जगह के कई चक्कर काटकर वे बहत्तर सिदोरेली फिर पारे की बूंदों की तरह घुल-मिलकर एक बड़े सिदोरेली में बदल गये।

"अभी मेरा करिश्मा खत्म नहीं हुआ है!" होताभ ने जैसे दहाड़ते हुए कहा। दर्शकों ने वाहवाही से धरती सर पर उठा ली। अभी होताभ अंगरखे के नीचे से घोड़ों के झुण्ड-के-झुण्ड निकालने लगा···घोड़े निकल-निकलकर चक्कर काटने लगे। होताभ के एक इशारे पर सब घोड़े गायब हो गये और उनकी जगह दहाड़ते हुए चार अफ्रीकी बबर शेर छलांग मारकर मैदान में उतर पड़े। मैदान का चक्कर काटकर बबर शेर भी गायब हो गये।

सर्कस का तम्बू तालियों के शोर से फटने लगा। तभी होताभ के हाथ के इशारे से सिदोरेली, उसकी तमाम चीजें और आसपास खड़े सहायक लोग—सब सुर्र-से ऊपर उठे···और हवा में घुलकर खो गये। दर्शकों ने दाँतों-तले अँगुली काट ली।

उसके बाद बैण्ड बजानेवाले तैंतीसों आदमी एक गेंद में बदल गये—वह बेहद बड़ी गेंद लुढ़कती हुई मैदान में आयी और घूमते-घूमते मटर के बराबर हो गयी!

और पलक मारते ही होताभ ने अपनी दसों अँगुलियाँ चटकायीं और एक-एक करके दर्शक अपनी-अपनी सीटों से उछल-उछलकर सर्कस के तम्बू को चीरते हुए गायब होने लगे।

आखिर में सिर्फ तीन आदमी बचे। एक होताभ, जो थोड़ा थककर बैठ गया था और वे दोनों लड़के। दौड़कर दोनों होताभ के पास पहुँचे तो चमकती आँखों से देखते हुए होताभ ने पूछा, "कैसा रहा?"

"अरे सिदोरेली से तुम्हारा कोई मुकाबला नहीं," वोल्का ने कहा, पर वह भीतर-ही-भीतर परेशान था।

हिकारत से भरे स्वर में होताभ ने कहा, "ये दो कौड़ी के आदमी हाथ की सफाई को जादू कहते हैं। और वह भी मेरे सामने!"

"सिदोरेली बेचारे को क्या मालूम कि यहाँ तुम्हारे जैसा निहायत होशियार और ताकतवर जिन्न भी मौजूद है!" जेन्या ने कहा।

तभी वोल्का ने होताभ को चालाकी से कहा, "क्यों होताभ, तुम सब लोगों को वापस बुला सकते हो! मेरे खयाल से मुश्किल ही होगा!"

"मुश्किल!" होताभ बोला, "मेरे लिए कुछ भी मुश्किल नहीं है!"

उसने दाढ़ी से तेरह बाल तोड़े, उनके टुकड़े-टुकड़े कर डाले और जोर-जोर से कोई मन्त्र पढ़ने लगा। देखते-देखते सर्कस के तम्बू से लोग नीचे आने लगे···सब अपनी-अपनी जगहों पर ही आकर जम गये।

लेकिन सिंदोरेली, उसकी चीजें, सायवाले सहायक आदमी और रिंग-मास्टर जमीन फोड़कर नीचे से निकले। बैण्डवाले होताभ के दाहिने कान से मटर की शक्ल में निकले···वह मटर उछलकर उसी जगह गिरा जहाँ बैण्डवाले बैठे थे। गिरते ही मटर तैंतीस टुकड़ों में बिखर गया। वे टुकड़े जीते-जागते आदमियों में बदल गये। आदमी बनते ही वे फिर बैण्ड बजाने लगे।

भीड़ ने होताभ को घेर लिया था। उस भीड़ को चीरता हुआ एक दुबला-पतला आदमी होताभ के पास जैसे-तैसे पहुँचा और बोला, "हमारे सर्कस के मैनेजर आपसे मिलना चाहते हैं। चले चलें तो बड़ी कृपा होगी! वे आपसे कुछ बात करना चाहते हैं!"

"नहीं-नहीं, इन्हें परेशान मत करो!" वोल्का बीच में बोल पड़ा, "आप देख नहीं रहे हैं कि इन्हें तेज बुखार चढ़ा हुआ है!"

और सचमुच होताभ का बदन जल रहा था। ज्यादा आइसक्रीम खाने से ही वह बीमार हो गया था।

खाट के नीचे अस्पताल

होताभ जिन्न था, इसलिए सवाल यह उठा कि बीमारी की हालत में उसे रखा कहाँ जाये? अस्पताल में उसे भर्ती नहीं किया जा सकता। घर पर रखने का सवाल ही नहीं उठता, क्योंकि वहाँ तो सभी उसे देख सकते हैं।

वोल्का और जेन्या ने इस बात को खूब सोचा। सर्कस से टैक्सी में होताभ को लाते हुए वे बराबर इसी मसले पर गौर करते रहे।

किस्मत की बात यह हुई कि घर पर कोई नहीं था। होताभ को आराम से वोल्का की खाट के नीचे लिटा दिया गया। जेन्या दौड़ा-दौड़ा एस्पिरीन लेने पहुँचा और वोल्का रसोईघर में चाय बनाने गया। कुछ देर बाद ही वह चाय बनाकर ले आया, आते ही बोला, "होताभ, चाय तैयार है···"

उसे कोई जवाब नहीं मिला। शायद होताभ मर गया! वोल्का ने सोचा, कि अगर होताभ मर गया तो उसकी कमी बुरी तरह खलेगी, इसलिए वह उसे पुकारता हुआ खाट के नीचे घुस गया, "प्यारे होताभ, सुनो!"

होताभ वहाँ नहीं था। अपनी परेशानी में वोल्का होताभ को और भी बुरा-भला कहने ही वाला था कि ज़ेन्या तेजी से भीतर आया। उसके पीछे-पीछे होताभ चला आ रहा था। वह कुछ बड़बड़ा रहा था।

"भई वोल्का, ये जनाब तो तमाशा हैं तमाशा !" ज़ेन्या ने वोल्का को बताया, "मैं दूकान से आ रहा था और ये हजरत वहाँ मौजूद थे। पीठ पर सोने से भरा बोरा लादे हुए थे और इस फ़िक्र में खड़े थे कि कुछ राहगीर मिल जायें तो सोना उन्हें बाँट दें ! तभी मैंने इनसे पूछा, 'इतने तेज बुखार में तुम यहाँ क्या करने आये हो !' तो यह जनाब बोले, 'अब मेरी जिन्दगी के दिन गिने-चुने ही रह गये हैं। मैं मरने से पहले कुछ दान करना चाहता हूँ !' मैंने कहा, 'तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है ? यह दान तुम दोगे किसे ? यहाँ कोई भिखारी दिखायी पड़ता है ?' इस पर जनाब ने जवाब दिया, 'अगर भिखारी नहीं हैं तो मैं अपने घर वापस जाऊँगा ! ये अपने घर जा रहे थे सो मैं इन्हें जबरदस्ती खींच लाया···"

आखिर दोनों जनों ने मिलकर होताभ को फिर से खाट के नीचे लिटा दिया। उसे बहुत-सी एस्पिरीन खिलायी और खूब चाय पिलायी और कम्बल में लपेटकर गठरी बना दिया ताकि खूब पसीना आये। कुछ देर होताभ चुपचाप लेटा रहा। फिर वह उठने के लिए दंगा करने लगा। वह बोला, "मैं सुलेमान के पास जा रहा हूँ ! डेविड के लड़के सुलेमान के पास···यह बीमारी उसी ने दी है···यह मेरे किसी पाप की सजा मुझे दी गयी है ! मैं जाकर उससे माफी माँगूँगा !" यह कहकर वह बुरी तरह चीखने-चिल्लाने लगा।

"यह है दवा की करामात ! वक्त से दवा दे दी, इसी का असर है !" जेन्या ने सन्तोष की साँस लेते हुए कहा।

आइए, ज़रा उस भौंकनेवाले लड़के से मिलें !

सच बात तो यह है कि वोल्का हमेशा गोगा के बारे में सोचता रहा। वोल्का कहीं भी होता, उसे बराबर कुत्ते के भौंकने की आवाज सुनायी पड़ती रहती। दरवाजे बन्द होते, खिड़कियाँ भी बन्द होतीं पर वह आवाज तो आ ही जाती थी।

ताज्जुब की बात यह थी कि गोगा कभी बाहर नहीं निकलता था। उसकी जगह कोई और लड़का होता तो डींग मारने के लिए ही बाहर आता—"अरे मेरा कुत्ता ! एकदम असली नस्ल का है !"

"ख़ैर, जो भी हो, कुछ-न-कुछ रहस्य तो था ही। आख़िर वोल्का गोगा की माँ से पूछ ही बैठा कि बात क्या है ? गोगा की माँ संकोच में पड़ गयी, कुछ बुदबुदाते हुए उसने गोगा के बारे में बस इतना ही बताया कि वह बीमार है और तेज़ी-से भीतर जाने लगी।

"ज़रा सुनिए !" वोल्का ने रोका, "मैं बस एक बात जानना चाहता हूँ···"

गोगा की माँ न चाहते हुए भी ठिठककर खड़ी हो गयी।

"वो···वो···आपके यहाँ अलसेशियन कुत्ता है न···अलसेशियन ही है न ?"

"कैसा अलसेशियन कुत्ता ?" उसकी माँ ने कहा।

"वही कुत्ता जो आपने गोगा को दिया था···अरे वही जो भौंकता रहता है···वह अलसेशियन जाति का है या बाक्सर नस्ल का !"

"क्या बकवास कर रहे हो !" कहते हुए उसने दुख से गहरी साँस ली और अपने घर में घुस गयी। और तभी उसके घर से फिर भौंकने की आवाज आने लगी। यही बात भेद-भरी थी।

उसी समय होताब ने, जो कि अब भी वोल्का की खाट के नीचे लेटा हुआ था, पूछा, "अरे भई, वो जिससे तुम्हारी लड़ाई थी न, अरे वही गोगा, उसके क्या हालचाल हैं ?" पूछने के बाद वह ख़ुद ही बताने के लिए उतावला हो रहा था कि यह सब जो कुछ हुआ है, ख़ुद उसी की करामात है। वह चाहता था कि गोगा को इस हालत में देखकर वोल्का भी ख़ुश होगा। फिर होताब ने कहा, "इस जादू का काट मेरे सिवा और कौन कर सकता

"गोगा ! उसकी कुछ तबीयत गड़बड़ है···" वोल्का ने खाट की पाटी से नीचे देखते हुए कहा, "भई होताभ, एक बड़े काम के लिए मैं तुम्हारी मदद चाहता हूं !"

होताभ बोला, "हां बताओ, तुम क्या मदद चाहते हो ?"

"मैं तुमसे एक चीज चाहता हूं।"

होताभ इस बात से खुश हुआ, चलो, इसने गोगा को माफ करने की बात नहीं की। वह खाट के नीचे से खिसक आया और बोला, "तुम बता-भर दो, अभी तुम्हारी बात पूरी हुई जाती है।"

"तुम मुझे एक कुत्ता लाकर दे सकते हो, अलसेशियन होना चाहिए !"

"बस कुत्ता ! अरे यह तो बड़ा आसान काम है···" कहते हुए उसने दाढ़ी से एक बाल तोड़ा और वोल्का के कदमों में एक अलसेशियन कुत्ता आकर खड़ा हो गया। वह बहुत खूबसूरत और गुदगुदा था। वोल्का खुशी से भर उठा। उसकी आंखें बड़ी तेज थीं, भीगी-भीगी-सी नाक थी और बड़े ही नुकीले कान थे। वोल्का ने उसे बड़े प्यार से थपथपाया। कुत्ते ने पूंछ हिलायी और प्यार से भौंकने लगा।

"कैसा लगा यह कुत्ता ?" होताभ ने पूछा। वह वोल्का के एक इशारे का इन्तजार कर रहा था, अगर वह चाहता तो पूरा कमरा, पूरा घर पल-में खूबसूरत कुत्तों से भर जाता। तभी कुत्ते की गर्दन देखते हुए वह , "अरे, यह तो भूल ही गया !" और उस कुत्ते के गले में बहुत खूब-पट्टा पड़ गया। पट्टा चमकदार मोतियों और कीमती पत्थरों के काम से भरा हुआ था। उसमें जितने हीरे-जवाहरात जड़े हुए थे, उनसे दो राज-मुकुट बन सकते थे।

[illegible] ग्नी से पूछा, "मुझे सीधे-सीधे [illegible]

[illegible] मुसीबत से बचाने के लिए कुत्ते को थोड़ी देर के लिए गायब कर देना ठीक रहेगा। यह तय करके होताभ मन-ही-मन सन्तुष्ट हुआ। खाट के नीचे बड़ी धीमी-सी आवाज हुई और उसी पल कुत्ता गायब हो गया।

वोल्का की माँ का ध्यान दूसरी तरफ चला गया। वह सब भूल गयी और कुत्ते की बात के बजाय उसने वोल्का से कहा, "देखो, अगर मेरे दफ्तर से टेलीफोन आये तो कह देना कि मैं घण्टे-भर में आ जाऊँगी। खैर···हाँ, ये बगल में डॉक्टर किसे देखने आया था?"

"मेरे खयाल से गोगा को!"

"वह बीमार है?"

"हाँ, शायद!"

"हाँ शायद क्या होता है···वह तो तुम्हारा दोस्त है और तुम्हें पता तक नहीं।"

"कोई खास दोस्ती नहीं है!" वोल्का ने कहा।

'तुम्हें शरम आनी चाहिए···खास दोस्ती नहीं है···' यह बड़बड़ाती हुई माँ गुस्से से बाहर चली गयी। उनका चेहरा सख्त हो गया था।

हाँ तो···वोल्का ने सोचा कि जैसे ही डाक्टर जाये उसे गोगा को जरूर देख आना चाहिए। उसने होताभ को पुकारा, "ऐ होताभ!"

कोई जवाब नहीं मिला।

"जब भी कोई बात करना चाहो, यह हजरत नदारद हो जाते हैं··· कैसा जिन्न है यह," वोल्का बड़बड़ाया।

इस बीच होताभ साहब 37 नम्बर मकान में आराम फरमाने चले गये थे और गोगा के बिस्तर के नीचे जमे हुए थे। वह यह देखने गया था कि यह बूढ़ा डॉक्टर कैसे उस जैसे ताकतवर और करामाती जिन्न का मुकाबला करता है! पहले तो मर्ज ही पता करने में बेचारा सटपटा जायेगा!

और अनुभवी डॉक्टर गोगा के इस बेहद अजीब मर्ज की छानबीन में लगा था। ऐसा मामला कभी उसके सामने नहीं आया था।

इधर होताभ की गैरहाजिरी का फायदा उठाने के लिए वोल्का ने भूगोल पढ़ना शुरू कर दिया।

उस बुजुर्ग और अनुभवी डॉक्टर का नाम था सिकन्दर।

गोगा को देखते हुए डॉक्टर ने उसकी माँ से कहा, "आप [illegible] बाहर

"गोगा ! उसकी कुछ तबीयत गड़बड़ है···" वोल्का ने खाट की पाटी से नीचे देखते हुए कहा, "भई होताभ, एक बड़े काम के लिए मैं तुम्हारी मदद चाहता हूँ !"

होताभ बोला, "हाँ बताओ, तुम क्या मदद चाहते हो ?"

"मैं तुमसे एक चीज चाहता हूँ।"

होताभ इस बात से खुश हुआ, चलो, इसने गोगा को माफ करने की बात नहीं की। वह खाट के नीचे से खिसक आया और बोला, "तुम बता-भर दो, अभी तुम्हारी बात पूरी हुई जाती है।"

"तुम मुझे एक कुत्ता लाकर दे सकते हो, अलसेशियन होना चाहिए !"

"बस कुत्ता ! अरे यह तो बड़ा आसान काम है···" कहते हुए उसने दाढ़ी से एक बाल तोड़ा और वोल्का के कदमों में एक अलसेशियन कुत्ता आकर खड़ा हो गया। वह बहुत खूबसूरत और गुदगुदा था। वोल्का खुशी से भर उठा। उसकी आँखें बड़ी तेज थीं, भीगी-भीगी-सी नाक थी और बड़े ही नुकीले कान थे। वोल्का ने उसे बड़े प्यार से थपथपाया। कुत्ते ने पूँछ हिलायी और प्यार से भौंकने लगा।

"कैसा लगा यह कुत्ता ?" होताभ ने पूछा। वह वोल्का के एक इशारे का इन्तजार कर रहा था, अगर वह चाहता तो पूरा कमरा, पूरा घर पल-भर में खूबसूरत कुत्तों से भर जाता। तभी कुत्ते की गर्दन देखते हुए वह बोला, "अरे, यह तो भूल ही गया !" और उस कुत्ते के गले में बहुत खूबसूरत पट्टा पड़ गया। पट्टा चमकदार मोतियों और कीमती पत्थरों के काम से भरा हुआ था। उसमें जितने हीरे-जवाहरात जड़े हुए थे, उनसे दो राज-मुकुट बन सकते थे।

वोल्का खुशी से भरमाया हुआ था···वह बेहद प्रसन्न था और कुत्ते को कभी लाड़ से थपथपाता और मुस्कराता। वोल्का का खुशी से इतना बेहाल देखकर होताभ की खुशी का भी ठिकाना न रहा···

लेकिन जिन्दगी में पूरी खुशी कभी नहीं मिल सकती···और खासतौर से तब, जबकि जिन्न के करतबों से मिली हो। एकाएक दरवाजे के बाहर किसी स्त्री की चप्पलों की आहट हुई। होताभ खाट के नीचे घुसकर गायब होनेवाला था कि वोल्का की माँ भीतर आयीं। और कुत्ते को देखते ही बोलीं, "मैं तो पहले ही समझ गयी थी ! यह तुम कहाँ से लाये हो ?" उन्होंने पूछा। होताभ खाट के नीचे तो चला गया था पर हड़बड़ी में गायब नहीं हो पाया था।

कुछ घबराते हुए वोल्का ने कहा, "मुझे···वो बात यह है कि इसे किसी ने दिया है···मतलब यह है कि···" माँ को सच बताने में भी कोई तर्क नहीं

था और वह झूठ बोलना नहीं चाहता था।

"ये बुदबुदा क्या रहे हो?" माँ ने सख्ती से पूछा, "मुझे सीधे-सीधे बताओ कि यह कुत्ता किसका है?"

होताब ने सोचा कि वोल्का को इस मुसीबत से बचाने के लिए कुत्ते को थोड़ी देर के लिए गायब कर देना ठीक रहेगा। यह तय करके होताब मन-ही-मन सन्तुष्ट हुआ। खाट के नीचे वही धीमी-सी आवाज हुई और उसी पल कुत्ता गायब हो गया।

वोल्का की माँ का ध्यान दूसरी तरफ चला गया। वह सब भूल गयीं और कुत्ते की बात के बजाय उसने वोल्का से कहा, "देखो, अगर मेरे दफ्तर से टेलीफोन आये तो कह देना कि मैं घण्टे-भर में आ जाऊँगी। खैर···हाँ, ये बगल में डॉक्टर किसे देखने आया था?"

"मेरे खयाल से गोगा को!"

"वह बीमार है?"

"हाँ, शायद!"

"हाँ शायद क्या होता है···वह तो तुम्हारा दोस्त है और तुम्हें पता तक नहीं।"

"कोई खास दोस्ती नहीं है!" वोल्का ने कहा।

"तुम्हें शरम आनी चाहिए···खास दोस्ती नहीं है···" यह बड़बड़ाती हुई माँ गुस्से से बाहर चली गयीं। उनका चेहरा सख्त हो गया था।

हाँ तो···वोल्का ने सोचा कि जैसे ही डाक्टर जाये उसे गोगा को जरूर देख आना चाहिए। उसने होताब को पुकारा, "ऐ होताब!"

कोई जवाब नहीं मिला।

"जब भी कोई बात करना चाहो, यह हजरत नदारद हो जाते हैं··· कैसा जिन्न है यह," वोल्का बड़बड़ाया।

इस बीच होताब साहब 37 नम्बर मकान में आराम फरमाने चले गये थे और गोगा के बिस्तर के नीचे जमे हुए थे। वह यह देखने गया था कि वह बूढ़ा डॉक्टर कैसे उस जैसे ताकतवर और करामाती जिन्न का मुकाबला करता है! पहले तो मर्ज ही पता करने में बेचारा लटपटा जायेगा!

और अनुभवी डॉक्टर गोगा के इस बेहद अजीब मर्ज की छानबीन में लगा था। ऐसा मामला कभी उसके सामने नहीं आया था।

इधर होताब की गैरहाजिरी का फायदा उठाने के लिए वोल्का ने भूगोल पढ़ना शुरू कर दिया।

उस बुजुर्ग और अनुभवी डॉक्टर का नाम था सिकन्दर।

गोगा को देखते हुए डॉक्टर ने उसकी माँ से कहा, "आप जरा बाहर

चली जायें···मैं गोगा से कुछ बात अकेले में करना चाहता हूँ।" गोगा की माँ कातर-सी बाहर चली गयीं। उनके बाहर जाते ही डॉक्टर ने पूछा, "क्यों गोगा, अब कैसी तबीयत है ? अब भी भौंकने को मन करता है ?"

"भौं भौं भौं···" गोगा जवाब में भौंकने लगा। बाहर खड़ी बेचारी माँ रोने लगी। डॉक्टर शान्त ही रहा, उसने यह समझ लिया कि गोगा शायद उसकी बात से नाराज हुआ है।

डॉक्टर ने कहा, "हाँ, वह तुम्हारा साथी है न, जो साथ पढ़ता है उसके बारे में तुम क्या सोचते हो···क्या नाम है उसका···अरे वही जो तुम्हारे बगलवाले घर में रहता है !"

"उसका नाम वोल्का है।" गोगा ने बताया।

"हाँ, मुझे भी याद आ गया, वोल्का !" डॉक्टर बोला।

"भौं भौं भौं···" गोगा फिर भौंकने लगा।

"देखो गोगा···तुम बोलने की कोशिश करो···कुछ शब्द बोलने की कोशिश करो !" डॉक्टर ने कहा।

"भौं···भौं···भौं···" गोगा जवाब में फिर भौंका। कुछ पलों के बाद निहायत असहाय की तरह वह बोला, "मैं खुद शब्द बोलना चाहता हूँ··· लेकिन नहीं बोल पाता···और शायद बोल भी नहीं पाऊँगा !"

"खैर, घबराओ मत। इतना ही काफी है।" डाक्टर ने बढ़ावा देते हुए पूछा, "तुम्हारे दर्जे में और कौन-कौन-से लड़के हैं ?"

"मेरे दर्जे में !" गोगा ने कोशिश करते हुए कहा, "अगर आप जानना ही चाहते हैं तो बताता हूँ, मेरे दर्जे में हैं भौं···भौं···भौं···"

"अच्छा, मैं तुम्हें कैसा लगता हूँ ? संकोच मत करो, जो मन में है वही कहो। तुम मुझे कैसा डॉक्टर समझते हो ?" डाक्टर ने फिर पूछा।

"कैसा डाक्टर समझता हूँ !" गोगा बोलने लगा, "मैं आपको और कैसा भी डॉक्टर नहीं समझता बल्कि आप हैं भौं···भौं···भौं···"

फिर डॉक्टर ने पूछा कि तुम्हारे स्कूल का जो अखबार है उसमें कभी किसी ने तुम्हारी बुराई तो नहीं की ? और इसके जवाब में गोगा दो मिनट तक भौंकता रहा।

होताभ सुनते-सुनते ऊब गया था। लेकिन डॉक्टर बड़े धीरज से सब-कुछ सह रहा था। कुछ देर बाद कागज और पेन्सिल गोगा के सामने रखता हुआ डॉक्टर बोला, "अब तुम लिखने की कोशिश करो !" डॉक्टर ने एक वाक्य बोला, वह गोगा ने सही-सही लिख दिया।

डॉक्टर बहुत खुश हुआ, उसने बात आगे बढ़ायी, "हाँ, तो तुम्हारी अध्यापिका का नाम बारबारा है न ? हाँ, तो अब उनका पूरा नाम लिखो।

और यह भी लिखो कि बान्दा और पेल्या—ये दोनों बहुत ही खराब लड़के हैं, मार इन्हें सजा दें!"

यह सुनते ही गोपा का चेहरा एकदम उतर गया। फिर कुछ गड़बड़ हुआ था। वह लिखता और काट देता— लिखता और काट देता। डॉक्टर ने कागज उठाकर देखा और पता तो उस काट-कूट के भरे हुए कागज पर लिखा था…'बारबारा स्टेफनोविना भों…भों…भों…बान्दा और पेल्या दोनों ही बहुत खराब लड़के हैं भों…भों…भों…!' उस कागज को जेब में रखते हुए डॉक्टर ने गोपा की माँ को भीतर बुलाकर कहा, "कल रात-भर मैं एक पल भी नहीं सोया। बस किताबें पलटता रहा…सारी किताबें मैंने खोज डालीं पर इस तरह के मर्ज का कहीं भी जिक्र नहीं मिला…किताबें पढ़ते पढ़ते जब मैं थक गया तो दिल बहलाने के लिए मैंने 'अलिफ लैला' किताब उठा ली। उसमें से मैंने एक जादूगर का किस्सा पढ़ा, जादूगर नहीं बल्कि जिन्न का किस्सा! वह जिन्न जिससे नाराज हो जाता था उसे कुत्ता बना देता था। वह कुत्ता बना हुआ आदमी या लड़का बोलते-बोलते बीच में भौंकने लगता था…ठीक यही हाल गोपा का है!"

"तो क्या कोई जिन्न…" गोपा की माँ कहते-कहते रुक गई।

"बिलकुल नहीं! जिन्न नाम की कोई चीज न कभी थी और न है!" डॉक्टर ने कहा। गोपा की खाट के नीचे पड़े हुए [illegible] को डॉक्टर की इस बात ने सख्त चोट पहुँचायी। डॉक्टर आगे बोला, "गोपा को यह अजीब किस्म का मनोवैज्ञानिक रोग हो गया है। और मेरे ख्याल से यह भौंकना बन्द नहीं करेगा।"

"तब क्या होगा डॉक्टर साहब!" निराशा से उसकी माँ ने कहा।

"हाँ, जब भी यह किसी के लिए बुरे शब्द इस्तेमाल करेगा तो भौंकने लगेगा। इसलिए इसे यह चाहिए कि यह किसी के लिए भी बुरे शब्द इस्तेमाल न करे…अगर यह ऐसा कर ले तो भौंकना बन्द हो जायेगा…एकदम बन्द हो जायेगा!"

'अगर मैं किसी के लिए बुरी बात मुँह से न निकालूँ तो ठीक हो जाऊँगा, डाक्टर साहब?" गोपा ने पूछा।

"हाँ, और यह खुद तुम्हीं कर सकते हो!" डॉक्टर ने उठते हुए कहा, "अब तुम अच्छी-अच्छी बातें करो…अपने दोस्तों के बारे में सब अच्छी-अच्छी बातें बोलो!"

तभी गोपा बोला, "बान्दा बहुत अच्छा लड़का है…" और उसे लगा कि अब उसे जबरदस्ती नहीं भौंकना पड़ रहा है। उसका मन खिल उठा। यह [illegible] हुआ डॉक्टर ने बोला, "बहुत [illegible] [illegible]

ा इम्तहान होने के वाद से यह पहला मौका है कि मेरी भौंकने की तवीयत नहीं हुई। वैसे मैं जव-जव वोल्का के वारे में कुछ कहता था तो भौंकने लगता था। इस वार ऐसा नहीं हुआ···मैं ठीक हो गया डॉक्टर साहव ! मैं ठीक हो गया !" गोगा चीख पड़ा।

"इम्तहान में क्या हुआ था ?" डॉक्टर ने पूछा।

"कुछ नहीं डॉक्टर साहव, वोल्का वेचारा ज्यादा पढ़ने की वजह से शायद एकाएक वीमार पड़ गया था !" गोगा ने इस वार फिर वोल्का के लिए अच्छी वात कही।

डॉक्टर ने चलते हुए कहा, "अभी मुझे वहुत-से उन लोगों को देखना है जो सचमुच वीमार हैं ! अच्छा नमस्ते !" डॉक्टर चला गया।

अव जरा उधर भी चलिए—

"तुम कहाँ गायव हो गये थे ?" वोल्का एकदम होताभ पर विगड़ उठा जो अभी-अभी कुछ क्षण पहले वहुत गहरे सोच में डूवा हुआ लौटा था और चुपचाप उसकी खाट के नीचे सरक गया था।

"सुनो वोल्का !" होताभ ने वहुत गम्भीरता से कहा, "अभी मैंने एक वहुत अजीव घटना देखी ! वह यह कि जिन्न के मन्त्र को एक इन्सान ने काट दिया···पर वह इन्सान इतना समझदार था कि उसे सज़ा देने की वात तक मेरे मन में नहीं आयी। जवकि उसने यहाँ तक कहा कि वह जिन्नों को नहीं मानता···अरे तुम कहाँ जा रहे हो ?" वोल्का को जाते हुए देखकर होताभ ने पूछा।

"मैं आज तक गोगा को देखने नहीं पहुँचा, यही वात मन को खल रही है—मैं ज़रा उसे देख आऊँ !" वोल्का ने कहा।"

"हाँ, हाँ, ज़रूर···लेकिन अव वह वीमार नहीं है !" होताभ ने कहा।

"अव वह वीमार नहीं है ? वह इतनी जल्दी चंगा हो गया ?" वोल्का ने आश्चर्य से पूछा।

"यह तो खुद उस पर ही है···वह चाहेगा तो जरूर चंगा रहेगा !" होताभ ने अपने घमण्ड को भूलते हुए कहा। और उसने वह पूरा मामला वोल्का को वता दिया कि भौंकनेवाला गोगा कैसे ठीक हो गया।

होताभ की जनाब मनीवेग से मुलाकात

"ऐ वोल्का इब्न अल्योशा !" होताभ ने नाश्ता करके उठते हुए क
हर वार अपनी समझ से मैंने तुम्हें वहुत ही कीमती उपहार दिये लेकि

सही बात यह है कि वे चीजें तुम्हारे लायक नहीं थीं। खैर... अब तुम्हीं बताओ कि तुम्हें और तुम्हारे दोस्तों को क्या चीजें पसन्द हैं! तुम्हारी इच्छा पूरी करके मुझे बहुत प्रसन्नता होगी!"

"यह बात है, तो मुझे एक दूरबीन ला दो...बड़ी वाली दूरबीन, जो जहाज़ी बेड़े के लोग इस्तेमाल करते हैं!" वोल्का ने फौरन कहा।

"मैं भी दूरबीन ही लूँगा...अगर तुम्हें कोई दिक्कत न हो तो!" ज़ेन्या ने कुछ सकुचाते हुए फ़रमाइश पेश की।

"अरे इसमें क्या दिक्कत है।" और वे तीनों उस दूकान की ओर चल पड़े जिस पर पुराना सामान बिकता था। दूकान पर बहुत भीड़ थी। उसमें इतनी तरह का और इतना ज्यादा पुराना सामान भरा हुआ था कि उसे कायदे से सजाना बहुत मुश्किल था।

"जरा मुझे भी दिखाओ वोल्का...यह दूरबीन कैसी लगती है!" बड़े जोश से होताब ने कहा लेकिन एकाएक ही वह पीला पड़ गया और बुरी तरह काँपने लगा। वह दूकान में खड़े लोगों को धकेलता हुआ उस ओर लपका जहाँ एक सफेद बालोंवाला मोटा विदेशी आदमी खड़ा था। पहुँचते ही होताब उसके पैरों पर गिर पड़ा और बोला, "मुझे हुक्म दीजिए...मैं आपका नाचीज नौकर हूँ!"

वह मोटा विदेशी एक अँगूठी खरीद रहा था, उसने होताब की तरफ बहुत ध्यान न देते हुए टूटी-फूटी भाषा में दूकानदार से पूछा, "हाँ, तो इस पुरानी अँगूठी का कितना दाम दूँ?"

"दस रुपये सत्तर नये पैसे दे दीजिए!" दूकानदार ने कहा।

जनाब मनीबेग पुराने सामान की दूकानों में चक्कर लगाया करते थे—इसलिए कि शायद कबाड़खाने से कोई कीमती चीज हाथ लग जाय। अभी कुछ दिन पहले मनीबेग ने आधे दर्जन चीनी प्याले बहुत सस्ते दामों में खरीदे थे। और जब वे चाँदी की अँगूठी प्लेटीनम की समझकर खरीद रहे थे तभी होताब उनके कदमों पर आ गिरा।

अँगूठी लेकर उन्होंने अपनी वास्कट की जेब के हवाले की और दूकान से बाहर निकल गये। होताब उनके पीछे-पीछे दौड़ा। जल्दी में होताब वोल्का और ज़ेन्या को सिर्फ इतना ही बता पाया था कि, "इस सफेद बालोंवाले विदेशी के पास डेविड के लड़के सुलेमान की जादुई अँगूठी है (खुदा दोनों की आत्मा को शान्ति दे!)...और मैं इस अँगूठी का गुलाम हूँ! मुझे अँगूठी के मालिक के पीछे-पीछे जाना ही पड़ेगा...अलविदा दोस्तो! मैं हमेशा तुम्हें याद रखूँगा...तुम्हारा प्यार और एहसान कभी नहीं भूलूँगा!"

इस तरह जब होताब सदा के लिए चला गया तो दोनों को बड़ा

ालीपन-सा महसूस हुआ। वे दोनों चुपचाप नदी की ओर चल दिये।

"खैर कुछ भी हो, होताभ वड़ा ही मजेदार और भला आदमी था," वोल्का ने कहा।

"इसमें क्या शक ! असल में हम होताभ को पूरी तरह समझ भी नहीं पाये," ज़ेन्या बोला।

वोल्का की नज़र एक ओर गयी और वह वगैर जवाव दिये एकदम उछलकर खड़ा हुआ और उधर ही चीखता हुआ भाग गया—'अरे होताभ लौट आया ! होताभ लौट आया !'

और सचमुच अब्दुर्रहमान इब्न होताभ दूर से उनकी ओर लपकता चला आ रहा था। पीठ पर चमड़े की दो काली थैलियाँ लटकी हुई थीं जिनमें दूरवीनें थीं।

दूकान से भागने के वाद होताभ ने जो किया उसकी दास्तान !

"भई पहले तुम दोनों मेरे पास बैठ जाओ तो मैं तुम्हें अपनी दास्तान सुनाऊँ कि दूकान से जाने के वाद मैंने क्या-क्या किया और मैं यहाँ कैसे पहुंचा। वड़ी दिलचस्प दास्तान है !" होताभ ने सुनाना शुरू किया, "ऐसा हुआ कि वह मोटा विदेशी आदमी दूकान से निकलकर पैदल ही चलता गया। लेकिन वह इतना तेज चलता था कि मैं उसका साथ नहीं पकड़ पा रहा था। एक गली के पास मैं उसके नजदीक पहुंच गया। जैसे ही पहुँचा, मैंने उसके कदमों पर गिरकर प्रार्थना की—'मेरे मालिक मुझे साथ चलने का हुक्म दें !' लेकिन मेरी वात अनसुनी करके वह चलता ही गया। अठारह वार मैंने कदमों पर गिरकर प्रार्थना की और अठारहों वार वह मुझे छोड़कर चला गया। चलते-चलते हम उसके घर तक पहुंच गये। मैं उसके पीछे-पीछे उसके घर में घुसना ही चाहता था कि वह चीख पड़ा, 'घर में क्यों घुसता चला आ रहा है ? पुलिसवाले को वुलाऊँ ?'

"मैं दरवाजे के वाहर ही खड़ा था कि एक खिड़की खुली और एक दुवली-पतली चिड़चिड़ी औरत ने इस मोटे आदमी से यह कहते हुए अँगूठी वाहर सड़क पर फेंक दी कि तुम वूढ़े हो गये पर इतनी अक्ल नहीं आयी कि पुरानी चाँदी की अंगूठी प्लेटीनम की समझकर खरीद लाये।' परन्तु यह अंगूठी उठाकर मैं सीधा तुम्हारे पास भागा। ये दूरवीनें तो मैंने पहले ही ले ली थीं…वस, यही मुझे वताना था।"

दास्तान सुनकर जेन्या ने जोश से कहा, "क्या मैं जादुई अंगूठी को जरा छू सकता हूँ ?"

"क्यों नहीं, इसे हाथ की अंगुली में पहन लो। फिर इसे घुमाओ और जो इच्छा हो, उसे जोर से कहो—वह इच्छा फौरन पूरी हो जायेगी !" होताभ ने बताया।

अंगूठी पहनकर जेन्या ने जोर से कहा, "मुझे एक साइकिल अभी ही चाहिए !" लेकिन साइकिल नहीं आयी।

"अंगूठी के साथ कुछ गड़बड हो गया।" जेन्या के हाथ से अंगूठी लेकर देखते हुए वोल्का ने कहा, "अरे इसके भीतर कुछ लिखा हुआ है।" और उसने जोर-जोर से पढ़ा—'कात्या ! इसे पहनकर मेरी याद करना। तुम्हारा वाश्या, मई 2, 1916।'

जनाब मनीबेग से दूसरी मुलाकात

दोनों जने अपनी-अपनी दूरबीनों से मजा ले रहे थे। बहुत दूर के मकान एकदम नजदीक दिखायी पड़ रहे थे। छोटी-छोटी बिन्दियों की तरह लगने वाले निशान चलते-फिरते आदमियों में बदल गये थे। तभी वोल्का ने होताभ से कहा, "जरा देखो, यह कौन चला आ रहा है !"

होताभ ने दूरबीन से देखा—जनाब मनीबेग फुदकते-फुदकते चले आ रहे थे। जब वे एकदम पास आ गये तो बोले, "भई खूब'''यह अकस्मात अच्छी मुलाकात हुई !"

मनीबेग का जिक्र इस कहानी में फिर क्यों हो रहा है, यह भी जान लीजिए। हुआ यह कि उस दिन बेगम मनीबेग का पारा चढ़ा हुआ था इसीलिए उन्होंने अंगूठी फेंक दी थी। जब पारा कुछ उतरा तो उन्होंने देखा कि नीचे खड़े एक बूढ़े ने उस अंगूठी को नाली में से उठाया और तेजी से चला गया। बेगम मनीबेग ने यह बात फौरन जनाब मनीबेग को बतायी। वह बोले, 'अरे, यह बड़ा बेहूदा बूढ़ा है ! यह दूकान से मेरे पीछे लगा हुआ था। रास्ते में कई बार यही बूढ़ा मेरे पैरों पर गिरा और बोला—मैं आपका गुलाम हूँ क्योंकि आपके पास सुलेमान की अंगूठी है ! जादुई अंगूठी है !'

यह सुनते ही कि वह जादुई अंगूठी थी, बेगम मनीबेग धम्म से कुर्सी में गिर पड़ी और सामने पड़ी 'अलिफ लैला' की किताब देखते तल्खी से बोली, 'मेरे तो कर्म फूटे हैं जो तुमसे मेरा पाला पड़ा ''तुमसे ज्यादा अक्ल तो चींटी में होती है !' बेगम मनीबेग ने अपनी किस्मत ठोकते हुए तेजी से

कहा, 'अरे कोई है जो उस वूढ़े को पकड़कर वह अँगूठी वापस ला दे !'

'लेकिन हम उसका करेंगे क्या ?' जनाव मनीवेग ने कहा।

'अरे वह वादशाह सुलेमान की अंगूठी थी जो वह वूढ़ा ले भागा है। वह अँगूठी सब इच्छाएँ पूरी कर सकती है। हमें सबसे धनवान और शक्तिसम्पन्न वना सकती है।' वेगम चीख रही थी।

'लेकिन जादुई अँगूठी कहीं किसी ने देखी भी है ?' जनाव मनीवेग ने शंका की तो वेगम वोली, 'अरे तो इस देश में किसी को तुमने पैरों पर पड़ते भी देखा है···जल्दी से उस वूढ़े को पकड़ो और फ़ौरन अंगूठी वापस ले आओ ! जाओ···'

यही वात जनाव मनीवेग को दौड़ाती हुई लायी थी और वे यहां तक पहुँच गये थे।। होताभ की अँगुली में वही अँगूठी देखकर उन्होंने पहले तो इधर-उधर की वातें कीं फिर चतुराई से वोले, "यह आप वड़ी अच्छी अँगूठी पहने हुए हैं ! मैं ज़रा देख सकता हूं !"

होताभ ने अँगूठी उतार कर दी तो जनाव मनीवेग ने फौरन उसे पहन लिया। उन्होंने घुमा-फिराकर वात शुरू की—

"अभी लीजिए !" होताभ वोला, "इसे वायें हाथ में पहनिए, घुमाइए और जो इच्छा हो माँग लीजिए !"

"अच्छा !" जनाव मनीवेग का दिल खुशी से धड़कना ही वन्द होने वाला था कि उनका चेहरा वदलने लगा। और तभी उन्होंने अंगुली में अँगूठी घुमाते हुए चीखकर होताभ से कहा, "ऐ वेवकूफ आदमी ! यहां आओ ! मेरा सारा रुपया ठीक से वांधकर रख दो !"

"हुजूर माफ करें !" होताभ शैतानी से कह रहा था, "आप किस रुपये की वात कर रहे हैं···ज़रा दिखाइए तो !"

अपनी जेव से एक नोट निकालकर उन्होंने होताभ को दिखाया और जेव में ही रख लिया। फिर वे वोले, "मुझे सौ थैली रुपया चाहिए···नहीं नहीं, मुझे एक हजार थैली रुपया चाहिए !" वे अंगूठी घुमा-घुमाकर ही वोले। तभी ऊपर से एक वोरा सीधा उनके सर पर आ गिरा। वोरा गिरते ही वे वेहोश हो गये। जव तक होताभ उन्हें होश में लाये तव तक वोल्का और ज़ेन्या ने वोरा खोल डाला। उसमें रुपयों की सौ थैलियां भरी हुई थीं और हर थैली में सौ-सौ नोट भरे थे।

जनाव मनीवेग ने आंखें खोलीं और रुपयों की थैलियों को देखा। देखते ही उन्होंने थैलियां छाती से चिपका लीं और वोले, "यह तो वहुत कम हैं।···मुझे एक लाख थैलियां चाहिए···अभी !" इतना कहना था कि आसमान से एक वड़ा वोरा टपक पड़ा। उसमें एक लाख थैलियाँ थीं। पर

जनाब मनीबेग का लालच बढ़ता ही जा रहा था और वे धड़ाधड़ माँगते जा रहे थे, "दस हजार सोने की घड़ियाँ, जिनमें हीरे लगे हों! बीस हजार सोने के सिगरेट-केस। पचास हजार मोतियों की मालाएँ!"

तभी होताब ने टोका, "अरे, अब बहुत माँग लिया, अब भी जी नहीं भरा है!"

"चुप रहो!" जनाब मनीबेग बिगड़े। फिर अँगूठी घुमाते हुए बोले, "ऐ अँगूठी···जो-जो माँगा है उसे फ़ौरन पेश कर!"

"ऐ जनाब मनीबेग, आप अपने देश को चले जायें···हमारे देश में आप जैसों की जरूरत नहीं है!" वोल्का बुरी तरह बिगड़ पड़ा।

"यही होगा!" होताब ने कहा और दाढ़ी से चार बाल तोड़े और दूसरे ही क्षण सब माल असबाब गायब हो गयी और जनाब मनीबेग गेंद की तरह लुढ़कते हुए अपने घर की ओर चले गये।

कुछ देर की खामोशी के बाद वोल्का ने सोचते हुए कहा, "समझ में नहीं आता, यह अँगूठी जादुई थी या सादा अँगूठी ही थी?"

"सादा अँगूठी थी!" होताब ने कहा।

"तो फिर उस मुटल्ले की बातें कैसे पूरी हो रही थीं?"

"वो तो मैं कर रहा था।"

"तुम! क्यों?"

"अरे भाई, यह मेरी वजह से काफी परेशान हुआ था। मैंने सोचा कुछ भला ही कर दूँ उसका। पर उसके लालचीपने से मैं चिढ़ गया!" होताब ने बताया।

फिर वे तीनों नदी-तट से लौटने लगे। रास्ते में होताब को वही अँगूठी दिखायी दी। उसने उठा ली। असल में जनाब मनीबेग गेंद की तरह लुढ़कते हुए गये थे इसलिए अँगूठी गिर गयी थी। होताब ने उसे साफ किया और अँगुली में पहन ली।

तीनों घर पहुँचे। आराम से सोये और सुबह होते ही उठ बैठे। लेकिन जनाब मनीबेग अब भी गेंद की शक्ल में लुढ़कते चले जा रहे थे। वे घर नहीं पहुँच पाये थे।

फुटबाल मैच के टिकट, बाईस फुटबालों का खेल

गर्मियों के दिन थे। सूरज निकला हुआ था। ऐसे ही में एक दिन तीनों दोस्त फुटबाल का मैच देखने के लिए निकल पड़े। फुटबाल के मैच के

मौसम में मास्को के लोग दो गुटों में बँट जाते हैं। एक गुट उनका होता है जो फुटबाल के शौकीन हैं, दूसरे वे होते हैं जिन्हें कोई लगाव खेल-वेल से नहीं होता।

टिकटों पर बहुत भीड़ होती है। वह तो यह कहिए कि होताभ साथ था। नहीं तो वोल्का और ज़ेन्या को टिकट कभी नहीं मिलता। जैसे ही वोल्का ने होताभ से टिकट के लिए कहा, होताभ के हाथ में नीले, पीले और हरे टिकटों की पूरी-की-पूरी कापी आ गयी। गेटकीपर को टिकट देकर वे स्टेडियम में पहुंचे।

जैसे वे तीनों अपनी जगहों पर पहुंचे कि आइसक्रीम बेचनेवाली एक लड़की आ पहुँची। उसने आवाज लगायी, "आइसक्रीम !"

जैसे ही उसने आवाज लगायी कि होताभ लाल-पीला हो गया। गुस्से से भरी हुई आवाज में उसने कहा, "तू मुझे इस खराब आइसक्रीम से मार डालना चाहती है ! यह तू नहीं करने पायेगी ! वहां सर्कस में मैंने छयालीस आइसक्रीमें खा लीं तो मेरी जान पर बन आयी ! अब फिर वही करने आयी है ! अभी, बस अभी तू गन्दी मेढ़की बना दी जायेगी ! समझी ?"

इतना कहते हुए वह उठा और उसने अपनी बाँह उठायी ही थी कि लपककर वोल्का उसमें लटक गया और तेजी से बोला, "इस पर क्यों गुस्सा कर रहे हो ! खुद तुम ही तो लालच में पड़कर खाते चले गये थे। बस, बैठ जाओ और ये बेकार की बातें बन्द करो।"

"जो हुक्म !" होताभ ने कहा। वह अपनी सीट पर बैठ गया। लड़की डरी हुई खड़ी थी, उससे वह बोला, "जाओ, माफ किया। वोल्का का शुक्रिया अदा करो कि इसने तुम्हें बचा लिया।"

वह आइसक्रीम बेचनेवाली लड़की फिर शाम तक उन लोगों के ओर वाले हिस्से में नहीं आयी।

मैच के कारण पूरे स्टेडियम में उत्साह छाया हुआ था। लाउडस्पीकर चीख रहे थे। हजारों लोग जोश-खरोश से खेल शुरू होने का इन्तजार कर रहे थे। तभी रेफरी साहब ने सीटी बजायी और एक फुटबाल लेकर मैदान में आये। दोनों पालियों के खिलाड़ी आ डटे। फुटबाल को रेफरी ने बीचो-बीच रख दिया। दोनों कप्तानों ने पहले हाथ मिलाये फिर सिक्का उछाला गया और चित-पट के आधार पर दोनों ही पालियां उस दिशा में नहीं रहना चाहती थीं, जिधर से सूरज की किरणें पड़ती थीं, पर जूबिलो टीम मैदान के एक तरफ और शाइबा टीम दूसरी तरफ हो गयी।

"क्यों भाई वोल्का, जरा यह तो बताओ कि ये बाइस नौजवान खिलाड़ी उस गेंद से क्या करेंगे ? क्या ये बाइसों नौजवान खिलाड़ी इतने

बड़े मैदान में इधर-उधर दौड़ते रहेंगे···एक-दूसरे से इनकी टक्करें होती रहेंगी···अरे भाई, ये थक भी तो जायेंगे···और फिर चमड़े की एक गेंद को मारकर इधर-उधर फेंकने के लिए! भई यह बड़ी ज्यादती है कि खिलाड़ी बाइस हैं और उन्हें खेलने के लिए गेंद एक दी गयी है!"

वोल्का खेल देखने में मशगूल था, उसने जवाब नहीं दिया। शाइबा टीम का खिलाड़ी गेंद लेकर विरोधी के गोल के पास पहुँचा तो हजारों की भीड़ उठ खड़ी हुई···लोग उछल पड़े और रेफरी की सीटी की चीखती हुई आवाज आयी। खिलाड़ी हक्के-बक्के-से रुक गये···फुटबाल के इतिहास में जो आज तक कभी नहीं हुआ था, वह हो गया था। यह एक करिश्मा ही था।

हुआ यह कि खूब रंगीन और चमकदार बाइस फुटबाल कहीं ऊपर से खेल के मैदान में आ गिरे। ये सब सबसे बढ़िया मोरक्को के चमड़े की बनी हुई थीं।

'यह किसी की बदमाशी है! किसने यह किया!' भीड़ तैश में चीख रही थी। लोग इतने नाराज हो उठे थे कि शैतानी करनेवाला अगर पहचाना जाता तो पुलिस के हवाले हो जाता। लेकिन कोई भी गड़बड़ी मचानेवाले को नहीं खोज सका। इतनी भीड़ में सिर्फ तीन आदमी ही यह जानते थे कि इस गड़बड़ी के लिए कौन दोषी है!

"देखो, तुमने यह क्या किया?" वोल्का फुसफुसाया, "तुमने खेल रुकवा दिया···शाइबा टीम अभी एक गोल बना लेती!"

"मैं तो गलती सुधार रहा था!" होताब ने अपने को दोषी पाते हुए कहा, "मैंने सोचा कि यह ज्यादा अच्छा होगा कि हर खिलाड़ी के पास एक-एक फुटबाल हो···हर खिलाड़ी अच्छी तरह खेल सके···यह क्या बात हुई कि एक फुटबाल का पीछा करते हुए सब दौड़ते रहें!"

"मेरी समझ में नहीं आता कि तुम्हारे साथ मैं क्या सलूक करूँ?" चीखते हुए वोल्का ने होताब से कहा और उसे खींचकर बैठा दिया। जल्दी से उसने होताब को फुटबाल खेलने की कुछ मोटी-मोटी बातें बतायीं। वोल्का के समझाने के बाद होताब की रुचि खेल में बढ़ती जा रही थी। बाइस गेंदों के गिरने के कारण शाइबा टीम एक गोल बनाते-बनाते रह गयी थी, इस वजह से उनमें घबराहट भी बढ़ गयी थी और उनका खेल भी बिगड़ गया था।

होताब मन-ही-मन अपने को दोषी महसूस कर रहा था कि उसके कारण शाइबा टीम को नुकसान हुआ है।

पर वोल्का और होताब की दिलचस्पी अलग-अलग टीमों में थी।

जब-जब शाइबा टीम के खिलाड़ी गोल करने से चूकते तो होताभ का चेहरा काला पड़ जाता और वोल्का का चमकने लगता।

आपस की इस कशमकश का पता वोल्का को नहीं था। वह यह जान भी नहीं पाया था कि होताभ शाइबा टीम के तरफदारों में हो गया है। इसीलिए जब जूबिलो के खिलाड़ी आगे धँसते हुए शाइबा के गोल तक पहुँचे तो वोल्का ने बड़े जोश से कहा, "अरे होताभ, जब जूबिलो का खिलाड़ी गोल करनेवाला हो तो शाइबा के गोल की जगह को जरा चौड़ा कर देना!"

"इससे शाइबा के खिलाड़ियों को क्या मिलेगा?" होताभ ने कहा।

"उनके लिए तुम क्यों परेशान हो? इससे जूबिलो के खिलाड़ियों को फायदा होगा।" वोल्का ने कहा तो होताभ ने बात अनसुनी कर दी। जूबिलोवाले गोल नहीं कर पाये। दो-तीन मिनट बाद ही शाइबा के एक खिलाड़ी ने जूबिलो टीम पर गोल ठोंक दिया। दर्शक खुशी से शोर करने लगे। खैर, खेल चलता रहा। जूबिलो के खिलाड़ी गोल उतारने के लिए जी-तोड़ कोशिश करने लगे। जैसे ही कुछ खाली वक्त मिला तो जूबिलो के गोलकीपर ने पास खड़े बारहवें खिलाड़ी से कहा, "भई, गोल तो हम पर हो ही गया, पर मैं कसम से कहता हूँ कि यह गोल का दाहिनी तरफ का लट्ठा···मेरी बात पर यकीन करो···दाहिनी तरफ का लट्ठा करीब आधा गज सरक गया और फुटबाल गोल में चली गयी···मैंने खुद इस बात को देखा, इन्हीं आँखों से!"

"अरे दिमाग का इलाज कराओ!" वह बारहवाँ खिलाड़ी बोला और अपनी जगह खड़ा हो गया।

शाइबा के खिलाड़ी फिर चढ़ते हुए चले जा रहे थे। और तीन मिनट में ही जूबिलोवालों पर दूसरा गोल भी ठुक गया। गोलकीपर ने बड़ी मुस्तैदी से गोल बचाने की कोशिश की थी, पर नहीं बचा पाया। इस बार फुटबाल उसकी अँगुलियों को छूती हुई ऊपर से निकल गयी···गोल का सधा हुआ लट्ठा अपने आप ऊपर उठ गया और गोल हो गया। पर वह शिकायत करे तो किससे? कौन यकीन करता?

लेकिन एकाएक खेल का पाँसा पलटता नजर आने लगा। जूबिलो के खिलाड़ी जान लगाकर खेल रहे थे। फुटबाल शाइबावालों की ओर दबी हु थी। तभी जूबिलो के एक खिलाड़ी ने बहुत जोर का किक सीधा उनके गो में मारा। कोई शक ही नहीं था कि गोल नहीं होगा। साफ-साफ गोल रहा था···देखते ही जूबिलो की जीत चाहनेवाले दर्शक खुशी से उछल पड़े वोल्का और जेन्या भी जोश में चीख पड़े थे पर दूसरे ही क्षण उनके

राशा से लटक गये। यह गोल तो [illegible]
फुटबाल गोल के ऊपरवाले लट्ठे के [illegible]
था…पूरा स्टेडियम उस टकराने [illegible]
वाज के साथ शाइबा के गोलकीपर [illegible]
चे झुक आये लट्ठे के कारण गोल [illegible]
पर के सिर पर वह लट्ठा आ [illegible]
यी।

इस घटना के होते ही वोल्का [illegible]
बरा-सा उठा। काँपती आवाज में [illegible]
हा हूँ? तुम्हें मालूम है कि मैं ओर [illegible]
ाहते हैं और तुम शाइबा का साथ दे [illegible]"

"हाँ, बात तो कुछ ऐसी ही है" [illegible]

जाये ? हारती हुई जूबिलो टीम को कैसे बचाया जाये ?

तभी वोल्का को एक बात सूझी। उसने 'खेल के मैदान से' नामक खेल-कूद की एक पत्रिका होताभ के हाथों में थमाते हुए कहा, "इसमें पढ़कर देखो ! जूबिलो टीम बड़ी ही मशहूर टीम है···देश की इतनी अच्छी टीम और उनके खिलाड़ियों से ज्यादती करके तुम उन्हें सबकी नजरों में गिरा रहे हो ! ···यह लेख पढ़ो···"

और जैसे ही होताभ ने पत्रिका से लेख पढ़ना शुरू किया कि जूबिलो के खिलाड़ियों में जैसे नयी जान पड़ गयी।

पर थोड़ी देर बाद होताभ ने पत्रिका जेन्या को पकड़ा दी, "मैं इसे बाद में पढ़ूंगा," कहकर वह खेल देखने लगा। फिर उसने दाढ़ी से एक बाल तोड़ा और अब जूबिलोवाले बुरी तरह हारने लगे। हर मिनट में एक गोल होने लगा। जूबिलो टीम पर चौबीस गोल हो गये। और जब जूबिलो टीम इतनी बुरी तरह हारने लगी तो खेल का मजा ही जाता रहा। बहुत-से दर्शक उठ-उठकर चले गये।

वोल्का आपे से बाहर हो गया, वह होताभ पर चीखा, "मैं तुम्हें हुक्म देता हूँ कि यह तमाशा फौरन बन्द करो, नहीं तो हमारी दोस्ती इसी वक्त खत्म ! तुम जिसे चाहो चुन लो—या शाइबावालों को या मुझे !"

"बहुत अच्छा ! तुम्हारा हुक्म सिर आँखों पर !" होताभ ने उसकी बात जैसे ही मंजूर की वैसे ही रेफरी ने हाफटाइम की सीटी बजा दी। कुछ देर आराम के बाद फिर खेल शुरू होना था।

लेकिन जूबिलो के खिलाड़ी मैदान में आते-आते बुरी तरह खांसने लगे। सबको छींकें आने लगीं। फौरन डाक्टर बुलाया गया। उसने बताया सारी टीम-की-टीम बीमार है। मैच अधूरा ही छोड़ना होगा।

"लेकिन क्यों ?" रेफरी ने बेहद परेशानी से पूछा।

"क्योंकि जूबिलो का कोई भी खिलाड़ी सात दिन तक नहीं खेल सकता। सब बीमार हैं।" डाक्टर ने बताया।

और इस तरह वह ऐतिहासिक फुटबाल मैच अधूरा ही रह गया।

खेल समाप्त होने के बाद हर आदमी यही बात कर रहा था कि खेल बड़ा अजीब रहा और अजीब तरह से खतम हुआ। हर आदमी की राय अलग-अलग थी और एक-दूसरे से ज्यादा उलझी हुई थी।

सिर्फ तीन ही आदमी ऐसे थे जो दर्शकों की इन बातों में हिस्सा नहीं ले रहे थे। वे चुपचाप अपनी जगह से उठकर चले। ट्राली-बस में भी कोई नहीं बोला। जहाँ वे उतरे, वहीं से जेन्या अपने घर की ओर चला गया। उसके जाने के बाद बड़ी हिम्मत करके होताभ बोला, "फुटबाल बहुत ही

अच्छा मेल है। क्या तुम अब भी मुझसे नाराज हो?" होताम ने बड़े प्यार से कहा, "अगर तुम नहीं बोलोगे तो मेरा तो दम निकल जायेगा।" और इस बात के बाद ही उनका राजीनामा हो गया और वे दोनों पहले की ही तरह फिर दोस्त हो गये।

उमर इब्न होताम को याद सताने लगी

होताम का ताजगी से भरा चेहरा देखकर यह कोई नहीं कह सकता था कि वह हाल ही में बहुत बीमार रहा है। उसके चेहरे पर कोमलता ही नहीं, गुलाबीपन भी था। वह अब भी उसी तेजी और हलकेपन से चलता था। भाई की याद िमाम के दिन को भीतर-ही-भीतर कुरेद रही थी। होताम कभी-कभी आहें भरता था और कभी-कभी उसकी आँखें डबडबा आती थीं।

और फिर एक दिन होताम ने वोल्का को बड़ी कोमल आवाज में बताया, "उदासी और दुख ने मेरे दिल को जकड़ रखा है। मुझे खोये हुए भाई की याद आती है। मैं चाहता हूँ उसकी खोज करूँ। क्या तुम उसकी खोज में मेरे साथ नहीं चलोगे?"

"तुम अपने भाई को खोजना शुरू किस जगह से करोगे?" वोल्का ने पूछा।

"[illegible] निकाला था उसी दिन मैंने तुम्हें [illegible] को एक ताँबे की सुराही में [illegible]। उधर गर्म देश है। उन देशों के समुद्री किनारों से ही खोज शुरू करनी पड़ेगी।"

दक्षिणी समुद्रों की यात्रा पर निकलने की बात वोल्का के मन को भा गयी। वह बोला, "ठीक है, मैं तुम्हारे साथ चलूँगा। जहाँ भी तुम जाओगे, मैं तुम्हारे साथ रहूँगा···बड़ा अच्छा रहेगा अगर···," कहते-कहते वोल्का बात रुक गया।

होताम का चेहरा खुशी से खिल उठा, और उसने बात जोड़ी, "···अगर हम अपने दोस्त झेन्या को भी साथ ले लें। यही कहना चाहते थे न, कैसे समझ लिया मैंने!"

"हाँ, ठीक ही समझा तुमने!" वोल्का ने कहा।

और वहीं यह तय हो गया कि होताम के बदकिस्मत भाई की खोज-यात्रा दो दिन में भीतर-भीतर शुरू कर दी जायेगी।

"हम लोग जादुई कालीन पर ही चलेंगे!" होताम ने यात्रा की

योजना बतायी, "उस पर हम तीनों के लिए काफी जगह है !"

"नहीं, नहीं, नहीं ! जादुई कालीन की बात मत करो !" वोल्का बोला, "हम ओडेसा तक रेलगाड़ी से चलेंगे, और ओडेसा से आगे···"

वह कह ही रहा था कि होताभ ने उसकी बात को फौरन जान लिया। आधे घण्टे बाद ही ज़ेन्या को भी पूरी योजना समझा दी गयी। उसने भी उत्साह से हामी भर दी।

वह कहानी जो नारामली लाइन पर घटी और हमने मास्को-ओडेसा एक्सप्रेस के गार्ड की जबानी सुनी

(इसे बयान किया प्रबन्धक गार्ड ने, अपने सहायक के सामने जो कि उस वक्त सो रहा था जब यह करिश्मा हुआ !)

प्रबन्धक गार्ड बोला, "मैंने तुम्हें यह बताने के लिए जगाया है कि अपनी गाड़ी में एक अद्‌भुत घटना हुई है !"

"मैंने सात नम्बर के डिब्बे में तीन यात्रियों को जगह दी—एक तो दाढ़ीवाला बुड्ढा था और दो बराबर उम्र के लड़के थे।

"उनमें से एक लड़के ने पूछा—'डाइनिंग-कार कहाँ है ?' वे लोग कुछ खाना वगैरह खाना चाहते थे। मैंने उन्हें बताया कि डाइनिंग-कार इस गाड़ी में नहीं है। इतना कहकर मैं अपने डिब्बे में चला आया लेकिन मैंने दरवाजे को थोड़ा खुला रहने दिया।

"गाड़ी में सभी गहरी नींद सो रहे थे···लेकिन सात नम्बर डब्बे से खुसर-पुसर की आवाज बराबर आ रही थी। तभी डिब्बे का दरवाजा खुला और उस बूढ़े का सिर बाहर निकला। उसने अपनी दाढ़ी से मुट्ठी-भर बाल तोड़े। उन बालों के उसने टुकड़े-टुकड़े किये और बाहर फेंकता हुआ कुछ बुदबुदाया और अपनी जगह बैठ गया।

"तभी एकाएक मैंने देखा तो सामने प्लेटफार्म से लँगोटी पहने चार नौजवान मेरी ओर ही चले आ रहे थे।

"मैंने उनसे कहा, 'जनाब गाड़ी में अब बिलकुल जगह नहीं है···'

"तब उनमें से एक बोला, 'जरा सँभल के बोल ! हमारे हाथ खाली होते तो इसी बात पर तेरी जान चली जाती' !"

गार्ड बोला, "हाँ, मैं तुम्हें यह बताना तो भूल ही गया कि उन चारों के सिर पर बहुत-सा खाना लदा हुआ था। एक के सिर पर भुना हुआ दुम्बा और चावल थे। दूसरे की झल्ली में सेब, अंगूर, खूबानियाँ और

नाश्तादानियाँ थीं। तीसरा आदमी एक बड़ा-सा घड़ा और चौथा आदमी दो बड़ी-बड़ी परातें लिये हुए था, उनमें भी गोश्त वगैरह का तमाम सामान था। मैं चकित-सा देखता खड़ा रह गया।

"वे सात नम्बर के डिब्बे के पास पहुँचे। दरवाजा खटखटाते ही वह बूढ़ा निकला और उन चारों नौकरों ने उसके कदम चूमे। उन्होंने खाना वगैरह उसके सामने पेश कर दिया। तभी मैंने उस बूढ़े को एक ओर बुलाकर पूछा, 'ये लोग आपके नौकर हैं। इनके पास टिकट नहीं है। आपको जुर्माना देना पड़ेगा।'

" 'पर बताइए, कैसा जुर्माना, किसे दूँ और काहे का जुर्माना दूँ,' बूढ़ा बोला।

"सुनते ही मुझे गुस्सा आया, मुड़कर मैंने उन चारों नौकरों की ओर देखा—वे गायब थे। मैंने पूरी गाड़ी छान डाली लेकिन उन चारों का कोई पता न था।

"बस यही हैरतअंगेज घटना सुनाने के लिए मैंने तुम्हें जगाया है···"

उधर झेन्या ने होत्ताब से कहा, "भई, यह तो मानना ही पड़ेगा कि वोल्का बहुत ही समझदार आदमी है!"

"मेरा भी यही खयाल है!" होत्ताब ने कहा, "वोल्का की समझदारी और राय की मैं कद्र करता हूँ! रेल का सफर बहुत बढ़िया रहा। और हमें कोई परेशानी भी नहीं हुई!"

अनोखा जहाज

ओडेसा से बातूमी को जानेवाले जहाज का नाम 'कोसगोडा' था। बहुत-से मुसाफिर रेलिंग पर झुके-झुके इधर-उधर की गप्पें हाँक रहे थे।

होत्ताब बोला, "वह हंस के परों की तरह सफेद जहाज न जाने कहाँ खो गये···बड़ी पुरानी बात हो गयी···कितना अच्छा होता अगर मैं पुराने जमाने के उसी तरह के जहाज में सफर करता···जिनके सफेद पालों में हवा भर आया करती थी और मस्तूलों के चरमराने की आवाज सुनायी पड़ती रहती थी···आजकल छोटी-सी नाव में भी लोग मशीन लगा देते हैं···पर मशीनवाली नाव में वह शान कहाँ?"

"मशीनवाली नाव!" व्यापारी जहाजी बेड़े के एक कर्मचारी ने कहा और वह डेक पर आकर एक कुर्सी में धँस गया। और कुछ ही देर बाद उसका ध्यान दूर अन्तरिक्ष की ओर गया।

"ज़रा देखना···देखना !" रेलिंग के पास पहुँचकर चिल्लाते हुए उसने सबको बुला लिया, "ज़रा वह···वह दूर वह जहाज देखो···वह पुराने ज़माने का है न ! मुख्य मस्तूल तो उसमें है ही नहीं···कैसा अजीब और सुन्दर जहाज है वह !" और जब तक और लोग उस अनोखे जहाज को देखें, वह अनजान जहाज कहीं गायब हो गया ।

उस जहाज का नाम था 'मधुर उमर' । होताभ के कैद-बदकिस्मत भाई के नाम पर ही उसका नामकरण हुआ था ।'

'मधुर उमर' जहाज पर सफर करनेवाले तीन लोग तो वे थे जो मास्को-ओडेसा एक्सप्रेस के सात नम्बर के डिब्बे में सफर कर रहे थे, यानी होताभ, ज़ेन्या और वोल्का और साथ में वे चार काले-काले आदमी भी थे जिन्हें नौकरी करते साढ़े तीन हज़ार साल हो गये थे ।

जहाज पर हर चीज साफ, सुन्दर और चमचमाती हुई थी । कमान की शक्ल के उसके दोनों भागों पर सोने की और हाथी-दाँत की कारीगरी थी । फर्श पर कीमती कालीन बिछे थे ।

जहाज की सुन्दरता देखते-देखते वोल्का को एक अंधेरा और गन्दा-सा कमरा दिखायी पड़ा । ज़ेन्या बोला, "यह गन्दा कमरा शायद उन जहाजी डाकुओं को बन्दी बनाकर रखने के लिए होगा जो सफर में कहीं पकड़े जाते हैं ।" दोनों कुछ फैसला न कर सके । दोनों ही होताभ से पूछने पहुँचे । होताभ सो रहा था । उन्होंने जगाना ठीक नहीं समझा । उनकी मुलाकात खाने पर ही हुई ।

चारों में से एक मल्लाह तो जहाज चलाने के लिए रुका रहा, बाकी तीन खाना परोसने लगे ।···खाना परोसकर जब वे जाने लगे तो लड़कों ने उन्हें रोक लिया ।

"तुम लोग खाना नहीं खाओगे ?" वोल्का ने पूछा ।

नौकरों ने जवाब में सिर हिलाया और चले गये ।

होताभ बोला, "अरे तुम नौकरों को खाने पर बुला रहे हो ? ये तो मामूली मल्लाह हैं !" होताभ ने ऐसे कहा कि अब आगे बात करने की जरूरत नहीं है ।

"हाँ, मल्लाह हैं, दूसरों की जेब काटकर रहनेवाले तो नहीं हैं । ये तो सच्चे मजदूर हैं !" वोल्का बोला ।

तभी ज़ेन्या ने कहा, "शायद ये नीग्रो हैं···नीग्रो लोग तो बहुत ही सताये हुए हैं । इसलिए हमें इनका और भी खयाल रखना चाहिए ।"

"नहीं भाई, ये मामूली मल्लाह हैं । यह हमारी शान के खिलाफ है कि ये हमारे साथ बैठकर खाना खायें । इससे हम न सिर्फ़ उनकी नजरों में ही

गिरेंगे बल्कि अपनी नजरों में भी गिर जायेंगे।"

"खैर इसमें मैं छोटा नहीं हो जाऊँगा।" वोल्का ने जोर से कहा।

"इसमें क्या बुराई है," जेन्या ने कहा, "उन्हें जल्दी से बुलाओ, नहीं तो यह खाना ठण्डा हुआ जा रहा है।"

होताब ने ताली बजायी, मल्लाह हाजिर हो गये।

"ये दोनों तुम लोगों के साथ खाना चाहते हैं," होताब ने कहा। तो बुजुर्ग मल्लाह ने आदर से घुटने टेकते हुए कहा, "जहाँपनाह! हम लोगों का खाने को मन नहीं है। बहुत पेट भरा हुआ है। अगर जरा-सा भी और खा लिया तो पेट ही फट जायेगा।"

"ये मानेंगे नहीं, होताब का डर है इन्हें।" जेन्या ने निराश होते हुए वोल्का से कहा। मल्लाह दो कदम पीछे हटकर लौट गये।

किसी ने खाना छुआ तक नहीं। दोनों उठकर चले गये। होताब सोचने लगा—ये लड़के कैसे हैं, नौकरों को बराबर का दर्जा भला कैसे दिया जा सकता है। तभी वोल्का ने उसी गन्दी जगह से एक मल्लाह को निकलते हुए देखा। वह गन्दा कमरा समुद्री डाकुओं को पकड़कर कैद करने के लिए नहीं बल्कि मल्लाहों के लिए था। कहाँ तो सजा-सजाया 'मधुर उमर' जहाज और कहाँ वह गन्दा कमरा!

वोल्का ने बहुत ही नफरत से कहा, "हम ऐसे जहाज पर नहीं रहेंगे। या तो होताब अपने उसूलों को बदले या हमसे दोस्ती तोड़ दे।"

तभी पीछे से होताब की आवाज सुनायी दी, "अरे भई, वक्त क्यों खराब कर रहे हो, खाने चलो···बेचारे नौकर भी भूखे बैठे हैं।"

वोल्का ने उन मल्लाहों की ओर देखा···उनके चेहरे पर भूख की हवाइयाँ उड़ रही थीं। उनका खयाल करते हुए वह बोला, "अच्छा, चलो। लेकिन होताब, तुमसे मुझे बड़ी गम्भीर बातें करनी हैं।"

खाना खत्म हुआ ही था कि समुद्र की लहरें मचलने लगीं। मल्लाह सर्दी से नीले पड़ गये थे। वे लहरों से जूझ रहे थे।

हालत ऐसी थी कि कुछ ही देर में 'मधुर उमर' की बस मधुर याद ही रह जाती, लेकिन तूफान थम गया और सूरज चमकने लगा।

और उसी क्षण 'मधुर उमर' गायब हो गया।

वे तीनों अथाह समुद्र में बेसहारा तैर रहे थे। चारों तरफ अपार जल और खामोशी के सिवा कुछ नजर नहीं आता था।

जादुई कालीन का हवा-पानी का मिलाजुला जहाज—वोजे-1

तीनों जने पीठ के बल तैर रहे थे। होताभ ने अपना टोप पानी के ऊपर किया हुआ था। तभी वोल्का ने होताभ को बाल तोड़ते देखा तो बोला, "होताभ, क्या योजना बना रहे हो?"

"मैं 'मधुर उमर' को वापस बुलाना चाहता हूँ!" होताभ बोला, "और वोल्का, किस्मत की बात यह है कि मेरी दाढ़ी बिलकुल सूखी है।"

वोल्का बोला, "सच्ची बात यह है कि उस जहाज पर कोई इन्सानी कानून ही नहीं है। हम उस जहाज पर नहीं जायेंगे।"

"तो फिर मैं जादुई कालीन की बात ही सुझा सकता हूँ! यातायात का बहुत ही अच्छा तरीका है वह!" होताभ ने कहा।

वोल्का को जैसे बहुत बढ़िया बात सूझी और वह बोला, "भई एक बहुत अच्छी राय मैं दे सकता हूँ! जादुई कालीन को हम आधुनिक बना सकते हैं। उसे हवाई जहाज की शक्ल दे सको तो ठीक रहेगा।"

समझ में आने-भर की देर थी कि समुद्र से एक हवा-पानी का मिलाजुला जहाज, जिसका नाम वोजे-1 रखा गया, एक सन्नाटे के साथ ऊपर आसमान में पहुँच गया। वोजे-1 उसका नाम था, जिसका मतलब था—वोल्का-जेन्या माडल नम्बर-1। वह हवाई जहाज दक्षिण-पश्छिम की ओर से उड़ने लगा। जहाज बहुत अच्छा बना हुआ था।

काला समुद्र, बोसपोरस और एशिया माइनर—सब नीचे से गुजरते जा रहे थे। इटली के पास उनका हवा-पानी का मिलाजुला जहाज उतरा। खोज यहीं से आरम्भ होती थी।

होताभ का खोना और मिलना

"अच्छा भई, मेरी सफलता की कामना करो," कहते हुए होताभ मछली में बदला और खाड़ी में खो गया।

"मुझे तो भूख लग रही है," कुछ देर के मौन के बाद जेन्या बोला।

तभी एक नाव किनारे पर आकर रुक गयी···तीन मछुआरे कूदकर किनारे उतरे। एक ने आग जलायी, बाकी दो ने मछलियाँ निकालीं, साफ कीं, और पतीली के पानी में डाल दीं।

"इनसे चलकर कुछ खाने को माँगा जाये।" जेन्या ने सुझाया।

वोल्का भी मान गया। "नमस्ते भाइयो!" जेन्या ने पहुँचकर कहा।

"बैठ जाओ बच्चो! तुम भूखे दीखते हो, बैठो। अभी ही बहुत बढ़िया मछली पककर तैयार हुई जाती है," उसी बूढ़े ने कहा।

और जब उन्होंने मछली खायी तो अँगुलियाँ चाटते रह गये। इतनी लजीज मछली कभी खाने को नहीं मिली थी।

"और खाना चाहो तो अपने आप पका लो, मैं तरीका बता दूँगा··· और देखो छोटी मछलियाँ ही लेना। बड़ी मत छूना," एक बोला।

वोल्का ने एक मछली जाल से निकाल ली, सोचा रसेदार बनाने के लिए यह ठीक रहेगी। वह उसके हाथ में तड़फड़ाती रही, फिर उसे लगा कि कहीं मछुआरे देख न लें, इसलिए उसने मछली को पानी में फेंक दिया। छपाक-से वह मछली पानी की सतह पर गिरी और होताभ में बदल गयी। वह बोला, "आज तुमने दुबारा मेरी जान बचायी है, नहीं तो उसी जाल में मैं दम तोड़ देता। भाई की तलाश करते-करते बेवकूफी से मैं जाल में फँस गया था।"

"खैर, चलो, तुम जिन्दा तो हो, हम तो फिक्र के मारे मरे जा रहे थे। इन मछुआरों ने हमें खाना खिला दिया है!"

"भला हो इन मछुआरों का"

तभी वोल्का ने कहा, "तुम्हें इस तरह आधी रात में समुद्र से निकलता हुआ देखकर वे क्या सोचेंगे?"

"तुम्हारी बात ठीक है।" होताभ बोला, "तुम किनारे पहुँचो, मैं अभी आता हूँ।"

कुछ देर बाद ही एक घोड़ा दौड़ता हुआ आया। उसकी आवाज से मछुआरों की नींद खुल गयी। एक सवार घोड़े से उतरकर जलती आग के पास पहुँचा। उसने पूछा, "वह मछुआरा कौन है जिसने दो भूखे लड़कों को खाना खिलाया है और अपने पास ठहराया है।"

"क्या बात है भाई?" नौजवान मछुआरे ने सवाल किया।

"मैं तुम लोगों को इस अहसान के बदले में कुछ उपहार देना चाहता हूँ। इसे स्वीकार करो।" कहते हुए होताभ ने दो बक्से नौजवान मछुआरे को थमा दिये। उनमें चाँदी की तरह चमकदार जिन्दा मछलियाँ भरी हुई थीं। होताभ ने दोनों बक्से उलट दिये। मछुआरे आश्चर्य से देखते रह गये—वे दोनों खाली बक्से फिर मछलियों से भर गये थे। चार-पाँच बार यही हुआ।

"देखा तुमने? इन बक्सों की यही करामात है। अब तुमको आँधी-पानी और कुहरे में शिकार के लिए नहीं निकलना पड़ेगा," होताभ ने कहा

और दोनों लड़कों को घोड़े पर बैठाकर चल दिया।

अचम्भे में खड़े मछुआरे उन्हें देखते रह गये।

पानी की मीनार और सुराही

इस बार होताभ अपनी बात पर पूरा उतरा। वह दो-तीन घण्टे में वापस आने को कह गया था। और करीब पौने नौ बजे पानी की सतह पर उसका सिर दिखायी दिया। उसके सिर पर धातु का कोई बर्तन था, जिस पर समुद्री घास लिपटी हुई थी।

"दोस्तो···मिल गया···!" होताभ वहीं से चीखा, "यही है वह सुराही···इसी में सदियों से मेरा भाई उमर इब्न होताभ बन्द है···"

"जल्दी से इसे खोलो!" जेन्या खुशी से चीखता हुआ बोला।

"खोलने की मेरी हिम्मत नहीं है। इस पर सुलेमान की मोहर लगी है। इसे वोल्का ही खोलेगा···" वोल्का बोला, "तुमने बताया था कि उमर ताँबे की सुराही में बन्द है, यह तो लोहे की लगती है···खैर···कोई बात नहीं।"

और दूसरे ही क्षण डर से वोल्का पीला पड़ गया और चीखा —"लेट जाओ···जेन्या···होताभ! इसे फौरन समुद्र में फेंक दो!"

और वोल्का की बात को न समझते हुए भी होताभ ने उस सुराही को समुद्र में फेंक दिया।

कुछ दम लेकर जेन्या ने पूछा, "क्यों वोल्का, उसमें क्या था?"

"उस पर लिखा था—मेड इन अमेरिका···यानी अमेरिका में बना हुआ!"

"तो वह बम था!"

"नहीं, वह जहाजों को उड़ानेवाली बारूदी सुरंग थी···बम और सुरंग में बहुत फर्क है। ये पानी में पड़ी रहती हैं और समुद्र में जहाजों को नीचे से उड़ा देती हैं।" वोल्का ने उन्हें समझाया।

भूमध्यसागर में उमर जब नहीं मिला तो होताभ ने कहा, "अब हमें अन्धमहासागर की ओर चलना चाहिए।" लेकिन वोल्का ने कहा, "मुझे हर हालत में कल मास्को में होना चाहिए। बहुत जरूरी काम है।" बड़े भारी दिल से होताभ ने अपने भाई उमर की खोज कुछ दिनों के लिए छोड़ दी।

वोज-1, हवा-पानी का मिला-जुला जहाज, तीनों को लेकर फौरन उड़ा और करीब दस घण्टे बाद वह मास्कोवा नदी के किनारे पर उतरा।

और फिर जुलाई महीने वर्फ को चीरकर चलनेवाला 'लडोगा' जहाज घुमक्कड़ो को लिए हुए अर्खअंगेलस्क बन्दरगाह से छूटा।

घुमक्कड ऊपर डेक पर जमा थे और घूमघामकर एक महीने बाद लौटनेवाले थे। इन शब्दो से ही आप जान गये होंगे कि अपने तीनो पुराने दोस्त मुसाफिरो मे ही है।

लडोगा जहाज का सपना

ज़रा सा रुकिए, और पहले यह जान लीजिए कि अपने ये तीनो दोस्त इस लडोगा जहाज पर सवार कैसे हुए।

आपको याद होगा कि वोल्का भूगोल के इम्तहान मे बुरी तरह फेल हुआ था, वोल्का की हिम्मत ही नही पडी कि वह होताभ से साफ-साफ कह दे कि उसी की वजह से इम्तहान मे पटरा हुआ था। भूगोल के इम्तहान के कारण ही वोल्का अब मास्को लौटा था। रात में वह कमरे मे पहुँचा तो होताभ खाट के नीचे घुसकर सोने चला गया। मौका देखकर वोल्का ने किताब खोली। पन्नों की सरसराहट से होताभ की आँख खुल गयी। उसने पूछा, "क्यो वोल्का, अभी तक जाग रहे हो ?"

वोल्का भूगोल के इम्तहान की बात होताभ को नही बताना चाहता था। इसलिए उसने बात बनायी, "असल मे मुझे इन्सोम्निया की यानी रात मे नींद न आने की बीमारी है, इसीलिए जाग रहा हूँ !"

"तो इसमें क्या मुश्किल है···अभी नींद आती है।" कहकर होताभ ने दाढी से कुछ बाल तोडे और कुछ मन्त्र फूंका। एक मिनट मे ही वोल्का खर्राटे लेने लगा। पढाई धरी रह गयी।

सुबह ही बगलवाले कमरे से टेलीफोन की घण्टी बजी तो वोल्का ने जाकर फोन उठा लिया। जेन्या का फोन था। बात करके वोल्का कमरे मे लौट आया। तभी होताभ बोला, "जेन्या था तो इस कमरे मे बुला देते। वहाँ क्यो बात कर रहे थे !"

"वह अपने घर से बोल रहा था, कमरे मे नही था।" वोल्का ने बताया। "मैं उससे टेलीफोन पर बातें कर रहा था···टेलीफोन··· अच्छा मैं तुम्हें दिखा ही दूं नही तो तुम्हें यकीन नही होगा···आओ !" वोल्का उसे दूसरे कमरे मे बुला ले गया और उसने जेन्या का नम्बर मिला दिया और रिसीवर होताभ को देकर बोला, "लो, बात करो।"

रिसीवर कान से लगा वह असमजस से मुस्कराया, "अरे, तुम्ही बोल

रहे हो जेन्या !···अपने घर से ! ···मैं समझा था कि तुम इस काली-सी चीज में बैठे हो जिसे मैं हाथ में पकड़े हूँ !" खुशी और आश्चर्य से देखते हुए उसने रिसीवर वोल्का को थमा दिया।

"भई यह तो करिश्मेवाली बात है ! इतनी दूर पर जेन्या रहता है, फिर भी इतनी आसानी से बात की जा सकती है !" होताभ बोला।

वोल्का के कमरे में लौटते ही होताभ ने अँगुलियाँ चटकायीं और बिलकुल वैसा ही एक टेलीफोन वहाँ भी आ गया तो होताभ बोला, "लो, अब अपने कमरे में बैठे-बैठे दोस्तों से बातें करो।"

वोल्का ने अब नम्बर मिलाया, पर कोई आवाज नहीं आयी। फिर नम्बर मिलाया, फिर भी आवाज नदारद। उसने रिसीवर खोलकर देखने के लिए पेंच खोलना चाहा तो वह नहीं खुला।

"यह सबसे बढ़िया काले संगमरमर का बना है !" होताभ ने घमण्ड से फूलते हुए कहा।

वोल्का समझ गया। बोला, "तुमने बस नकल उतार दी। अरे इसके भीतर ही तो यन्त्र होते हैं, जो काम करते हैं !"

"तो मुझे बताओ, मैं यन्त्र भी बना दूंगा !" होताभ बोला।

"उसके लिए तुम्हें पहले बिजली के बारे में पढ़ना होगा !"

"तो पढ़ा तो दो ! मुझे वह सब पढ़ा दो जिससे आदमी को ये अजीबो-गरीब ताकतें हासिल होती हैं···"

"पर शर्त यह है कि मेहनत बहुत करनी पड़ेगी !" वोल्का ने सख्ती से कहा, "लो, तब तक इसे पढ़ो, मैं जरा दोस्त से मिलता आऊँ !" कहकर उसने बच्चों का 'प्रावदा' अखबार उसे पकड़ा दिया और खुद स्कूल चल दिया। स्कूल सूना पड़ा था। कार्यालय में प्रिन्सिपल और वारवारा कुछ स्कूली मसलों पर बातें कर रहे थे। तभी प्रिन्सिपल ने वोल्का को देखा तो बोले, "अब तबियत कैसी है ?"

"अच्छा हूँ।"

"परीक्षा की तैयारी कर ली ?"

"जी हाँ।"

"अच्छा तो आओ—मैं कुछ सवाल पूछता हूँ !"

और वोल्का धड़ाधड़ सवालों के जवाब देता गया। एक भी सवाल पर वह नहीं अटका। वारवारा भी प्रशंसा से सिर हिलाने लगीं, बोलीं, "खूब मेहनत की है तुमने। अच्छा ! तुम सातवाँ पास हो गये···अब जाकर सितम्बर तक खूब आराम करना···"

वोल्का इम्तहान देकर लौट आया। नदी-किनारे एक पेड़ की छाया

में बैठा होताभ जोर-जोर से जेन्या को अखबार पढ़कर सुना रहा था। वोल्का बहुत खुश था। तभी होताभ ने अखबार का पन्ना पलटा और उसमें छपी पहली सूचना थी—'बर्फ को चीरकर चलनेवाला जहाज 'लडोगा' जुलाई के मध्य में अर्खंगेलस्क बन्दरगाह से उत्तरी ध्रुव सागर के लिए रवाना होगा।

"कितना अच्छा मौका है। काश, हम भी जा पाते!" वोल्का बोला। होताभ बोला, "अभी इन्तजाम हुआ जाता है।"

केन्द्रीय साहसिक यात्रा कार्यालय में खलबली!

उसी दिन होताभ साहब केन्द्रीय साहसिक यात्रा कार्यालय में दाखिल हुए। पहुँचते ही उन्होंने कहा, 'क्या मैं उन साहब से मिल सकता हूँ जो बहुत ही तजुर्बेकार हैं और जो बर्फ को चीरकर चलनेवाले जहाज 'लडोगा' के सफर के लिए सीटें देते हैं।' होताभ को उस कमरे में पहुँचा दिया गया जहाँ एक मोटा-सा गंजा आदमी लम्बी मेज पर बैठा था और पत्र देख रहा था। तभी होताभ ने आदर से झुकते हुए एक पत्र उसके हाथ में दे दिया और झुककर फिर आदर प्रकट किया और चुपचाप बाहर निकल आया।

गंजे आदमी ने पत्र खोला। इतना अजीब पत्र कभी भी केन्द्रीय साहसिक यात्रा कार्यालय के पास नहीं आया था। वह पत्र पुरानी सनदों की तरह लिपटा हुआ था। उसका कागज पुरानेपन के कारण पीला पड़ चुका था और एकदम खस्ता हो गया था। उस पर हरे चमड़े की मुहर लगी हुई थी और सुनहरे रेशमी डोरे से वह बंधा हुआ था।

गंजा आदमी अपने अधिकारी के पास भागा। अधिकारी अपने डायरेक्टर के पास भागकर पहुँचे और उन्हें वह पत्र दिखाया।

डायरेक्टर ने पत्र पढ़ा और बोला, 'बहुत दुनिया देखी है मैंने पर इतना विचित्र पत्र कभी नहीं देखा! यह किसी सनकी ने लिखा है।'

डायरेक्टर ने पढ़ना शुरू किया—

'खुशियाँ बख्शनेवाले आला अफसर की खिदमत में—

'--मैं, हसन अब्दुर्रहमान जोकि सबसे ताकतवर जिन्न हूँ और जिसकी शोहरत और ताकतों का डंका बगदाद, दमिश्क, बेबीलोन और सुमेर में बजता है। मैं जोकि होताभ का लड़का हूँ! उस होताभ का जोकि तमाम जिन्नों और इफरीतों का शाहंशाह है—जिसके ताबद— देखि-

का लड़का सुलेमान (दोनों की रूह को खुदा राहत दे !) भी दिल से चाहता है। जिसके करतवों पर अल्लाह भी खुश है और दुआ देता है और उस अल्लाह की मैं, हसन अब्दुर्रहमान इबादत करता हूँ ! दुनिया के चारों हिस्सों के शहंशाह जो महलों में रहकर दुनिया पर अपना हुक्म चलाते हैं—ऊपरी समुन्दर से निचले समुन्दर तक जिनका दबदबा और दौर-दौरा है, मग़रिब के वो बादशाह जो तम्बुओं में रहते हैं—सभी मुझ जैसे ताकतवर जिन्न हसन अब्दुर्रहमान इब्न होताभ की कदमबोसी बगदाद में कर चुके हैं ! मैं, वही हसन इब्न अब्दुर्रहमान होताभ आपकी खिदमत में एक इल्तिजा लेकर हाजिर हुआ हूँ !

'ऐ खुशियाँ बख्शनेवाले आला अफसर ! मैंने सुना है कि एक जहाज जोकि बिना पालों के ही चलता है और जिसका रोशन नाम 'लडोगा' है, कुछ बहुत ही मशहूर और मारूफ़ लोगों को लेकर अर्ख अंगेलक्स के नामी शहर से जानेवाला है। मेरी यह ख्वाहिश है कि मेरे बेहद अजीज दो दोस्तों को, जिनकी तारीफ और काबलियत बयान करने से कागज की हदें जवाब दे जायेंगी, उन मशहूर और मारूफ़ लोगों के साथ शामिल किया जाय !

'यह मेरी बदकिस्मती है कि मुझे इस बात का पता नहीं कि इस दौरे पर जाने के लिए कितनी तारीफ, शोहरत और नाम का दबदबा चाहिए ताकि मेरे अजीज और काबिल दोस्त इस खास दौरे में शामिल हो सकें ! लेकिन फिक्र की कोई बात नहीं, जिस चीज की भी जरूरत होगी वह पूरी कर दी जायेगी—क्योंकि यह मेरी ताकत के भीतर है कि मैं उन्हें शहजादा बना दूँ या शेख ! ज़ार बना दूँ या बादशाह ! अमीरों का अमीर बना दूँ या मुफ्तियों का मुफ्ती !

'ऐ खुशियाँ बख्शनेवाले आला अफसर ! मैं सात बार आपकी कदमबोसी करता हूँ, सलाम करता हूँ और इल्तिजा करता हूँ कि आप हमें खबर देने की तकलीफ जरूर गवारा करें और बतायें कि मैं और मेरे दोनों अजीज दोस्त 'लडोगा' जहाज पर कब और किस वक्त हाजिर हो जायें ! जहाज के इस खतरनाक और हौलनाक सफर में तूफान और बवण्डर आयें और निकल जायें—यही मेरी दुआ है।

बकलमखुदः जिन्नों का शहंशाह,
हसन अब्दुर्रहमान इब्न होताभ।'

आखिर में जवाब देने के लिए वोल्का का पता लिखा हुआ था।

और कुछ मिनटों बाद ही उस मोटे गंजे आदमी ने हसन अब्दुर्रहमान इब्न होताभ के उस पत्र का जवाब लिखवाना शुरू किया।

सबसे मशहूर कौन है ?

वोल्का का पता लेकर होताब ने गलती की थी। वह तो कहिए मौके की बात थी कि सीढ़ियों पर ही वोल्का को डाकिया मिल गया। अगर वह न मिल गया होता तो केन्द्रीय साहसिक यात्रा कार्यालय का पत्र उसके घर-वालों के हाथ पड़ गया होता तो तमाम तरह की बातें पूछी जातीं और खासी गड़बड़ी होती। जिसको सोच सकना भी आसान नहीं है। कांपती अंगुलियों से उसने खत खोला था और उसे कई बार पढ़कर समझने की कोशिश की थी, हालांकि वह समझा एक शब्द भी नहीं था, वह पत्र यूं था :

'प्यारे नागरिक हसन अब्दुर्रहमान इब्न होताब,

हमें यह सूचित करते हुए बहुत दुःख है कि आपकी अर्जी हमें बहुत देर से मिली। 'लडोगा' जहाज में अब कोई भी जगह खाली नहीं है।

आपके शहज़ादे और शेख को नमस्कार।

आपका
आई. दोमोसेदोव,
मुख्य अधिकारी, साहसिक यात्रा कार्यालय।'

वोल्का समझ गया कि होताब ने ही कोई पत्र लिखा होगा। होताब के इस काम से उसके मन में प्यार उमड़ आया—कितना अच्छा आदमी है होताब! लेकिन उसकी समझ में यह नहीं आ रहा था कि कौन-से शहज़ादे और शेख को उस अफसर ने नमस्कार भेजा है। वह पता करने के लिए उतावला हो उठा।

"होताब! ऐ होताब!" नदी किनारे पहुँचकर उसने पुकारा, "ज़रा एक मिनट के लिए आना।" होताब पेड़ की छाया-तले झपकियाँ ले रहा था, सुनते ही दौड़ता हुआ आया।

"तुमने साहसिक यात्रा कार्यालय को कोई पत्र लिखा था?" वोल्का ने पूछा।

"हाँ! मैं असल में तुम लोगों को चौंका देना चाहता था, इसीलिए नहीं बताया था, जवाब आया है क्या?" होताब ने पूछा।

"हाँ, यह रहा!" वोल्का ने पत्र दिखाया।

स्थिति की गम्भीरता के बावजूद वोल्का हँसी नहीं रोक पाया और किसी तरह बोला, "तो मैं शहज़ादा हूँ?"

"इसमें हँसने की क्या बात है?" होताब ने दुखी आवाज़ में कहा,

"मैंने ज़ेन्या को शहज़ादा और तुम्हें सुलतान बनाने की बात सोची थी।"

"बहुत खूब! तुम किसी दिन मुझे मरवाओगे होताभ!" वोल्का ने कहा, "तुम्हें राजनीति का भी पता नहीं। शहज़ादे या सुलतानों में ऐसी क्या बात है जो उन्हें नाम और शोहरत दे सके, उन्हें मशहूर बना सके? सुलतान और शहज़ादे तो बिलकुल बेकार के आदमी होते हैं?"

"तुम पागल की तरह बात कर रहे हो," होताभ बोला, "तुम किसे सबसे ज्यादा मशहूर और शोहरतवाला आदमी कहोगे? किसी एक का नाम लो।"

वोल्का ने बताया, "जैसे इंजन-चालक लूनिन है, अंगेलीना हैं।"

"लूनिन कौन है, कोई सुलतान है?" होताभ ने पूछा।

"लूनिन देश के सबसे अच्छे इंजन-चालक हैं।"

"तुम मेरे साथ मजाक करना चाहते हो। एक इंजन-चालक या हवाई उड़ाका भी कहीं ज़ार से ज्यादा मशहूर हो सकता है?"

उसकी बात के जवाब में वोल्का ने कहा, "हमारे यहाँ काम करनेवाले लोग शहंशाह से भी ज्यादा मशहूर होते हैं, यह अखबार खोलकर देख लो, पढ़ो।" कहते हुए उसने अखबार का पन्ना खोल दिया जिस पर 'हमारे देश के मशहूर लोग' नामक लेख था और करीब दरजन-भर कामगरों की तस्वीरें छपी थीं।

होताभ ने पढ़ा और बोला, "वोल्का, यह तो सही बात है! इस अखबार में भी लिखा है। मैं तुम्हारी बात का कभी यकीन न करता अगर इस लेख में यह न होता। लेकिन मुझे यह बताओ कि तुम्हारे देश में सब बातें इतनी नयी और अलग क्यों हैं?"

"जरूर," किनारे पर बैठते हुए वोल्का ने खूब अच्छी तरह होताभ को सोवियत व्यवस्था की खास-खास और मुख्य बातें बतायीं।

सुनकर होताभ बोला, "जो कुछ तुमने बताया वह अक्लमन्दी से भरा हुआ ही नहीं महान् भी है। हर वह आदमी जो ईमानदार और सच्चा है, उसके सोचने के लिए तुम्हारी बातों में बहुत सचाई है।" कुछ देर बाद वह फिर बोला, "इसीलिए मैं चाहता हूँ कि तुम और ज़ेन्या 'लडोगा' पर सफ़र करने के लिए जरूर चलो। इन्तजाम मैं कर दूँगा।"

"लेकिन झूठी बातें बताकर इन्तजाम मत करना।" वोल्का ने कहा।

"अच्छा।" होताभ ने मानते हुए कहा।

और अब वह यात्रा कार्यालय में किसी पर बिगड़ा तक नहीं। उसने इस तरह बातों को सँभाला कि जब तीनों 'लडोगा' जहाज पर पहुँचे तो लोगों ने उनका स्वागत किया। उन्हें जगह भी बड़ी अच्छी मिल गयी।

जहाज का कप्तान भी आश्चर्य में पड़ गया जब डेढ़ सौ झल्ली सन्तरे, डेढ सौ झल्ली बढ़िया अंगूर, दो सौ झल्ली खजूर और तमाम फल वगैरह जहाज को दिये गये। हर झल्ली पर यह लिखा हुआ था—'लडोगा के साहसी कर्मचारियों और मुसाफिरों के लिए—एक अनाम नागरिक की ओर से !'

यह उपहार होताब ने ही दिये थे, यह तो आप समझ ही गये होंगे। तीनों किसी की दया या पैसे पर सफर नहीं करना चाहते थे। मुसाफिरों ने बड़े चाव से फलों को खाया।

अब, यह बता चुकने के बाद कि हमारे तीनों दोस्त कैसे 'लडोगा' पर पहुँचे···हम साफ दिल से कहानी को आगे बढा सकते हैं।

आमना-सामना

जुलाई के मध्य में 'लडोगा' जहाज चला था और अपने ये तीनों दोस्त मुसाफिरों के रूप में उस जहाज पर थे—यह आपको याद होगा।

वोल्का और ज़ेन्या डक्के की रेलिंग के पास खड़े ताक रहे थे। वे बहुत ही खुश थे। जीवन में पहली बार वे बर्फ को चीरकर चलनेवाले जहाज पर सफर कर रहे थे।

तभी यात्रियों की देखभाल करनेवाला कर्मचारी उधर आया। रेलिंग के पास ही एक आदमी झुका हुआ खड़ा था, वह मल्लाह लग रहा था। कर्मचारी ने उसे कहा, "क्या बात है, घर की याद सता रही है?"

"मैं मल्लाह नहीं, मैं तो बैरा हूँ!" उस आदमी ने बताया।

"तो फिर झटपट खाने की एक थाली केबिन नम्बर चौदह में पहुँचा दो, वह केबिन कोल्तसोवा नाम की महिला का है।"

"यह नाम वारवारा के नाम से मिलता-जुलता है।" वोल्का ने कहा।

"उनका पूरा नाम वारवारा स्तेपनोवना कोल्तसोवा है," वह कर्मचारी बैरे को बताता हुआ चला गया।

पूरा नाम सुनते ही वोल्का और ज़ेन्या की आँखों के आगे अँधेरा छा गया। उन्हें डर था कि कहीं होताब उन पर न बिगड़ पड़े और उन्हें मेंढकी वगैरह बना दे। वे आपस में इस डर के सम्बन्ध में बात करने लगे।

तभी होताब की आवाज सुनायी दी, "अरे तुम लोग कहाँ हो?" वह नीचे से आवाज दे रहा था। दोनों दौड़कर पास पहुँचे तो ···ूस ने अपने मुसाफिर साथी से उन दोनों का परिचय कराया, और ··· ···ा. "भई

हम लोग दक्षिणी अफ्रीका के वारे में कुछ वहस कर रहे थे।" यह कहकर उसने उस-आदमी का परिचय भी दे-दिया।

वोल्का को लगा कि अगर होताभ ने फिर अपने भूगोल के ज्ञान का परिचय देना शुरू किया तो लोग हँसी उड़ायेंगे।

"क्यों वोल्का, मैं इनसे कह रहा हूँ कि दक्षिणी अफ्रीका की राजधानी प्रीटोरिया ही है। क्यों, सही है न ?"

"हां प्रीटोरिया ही है !" वोल्का ने खुशी से कहा। वोल्का और ज़ेन्या दोनों ही अचम्भे में थे कि उसने सही कैसे वता दिया !

"दीखता है तुमने मेरी भूगोल की किताव उड़ा ली है ?" वोल्का ने पूछा।

यह कहते-कहते उसका रंग उड़ने लगा क्योंकि पीछे कोई चला आ रहा था। होताभ ने मुड़कर पीछे देखना चाहा तो वोल्का ने कहा, "पीछे देखने की जरूरत नहीं है।"

एक और महिला के साथ वारवारा चली आ रही थीं। वोल्का की अध्यापिका !

होताभ ने उन्हें देख लिया। वह बहुत आहिस्ते-से उनके पास पहुंचा और दाढ़ी से दो वाल तोड़े। तभी वोल्का डर से चीखा, "नहीं होताभ ! इनकी कोई गलती नहीं है।"

ज़ेन्या और वोल्का होताभ से लिपट गये और उसे पकड़ लिया। वोल्का भी लिपट पड़ा। होताभ का वह अजनवी दोस्त, जिससे वहस हो रही थी, यह नजारा वड़े अचम्भे से देख रहा था।

तभी वारवारा अपने छात्रों को पहचानते हुए वोलीं "यह क्या कर रहे हो तुम लोग। सीधे खड़े हो। सुनते नहीं ज़ेन्या ?"

"यह होताभ तुम्हें मेंढ़की में वदल देगा, इसलिए हम लोग इसे पकड़े हैं !" वोल्का चीखा।

उसी के साथ-साथ ज़ेन्या भी चीखा, "आप भाग जाइए···यह छूट गया तो गज़व हो जायेगा ! आप भाग जाइए।"

वारवारा लड़कों पर विगड़ पड़ीं। इसी वीच होताभ ने अपने को छुड़ाकर फिर वाल तोड़े। लड़कों ने भय से अपनी आँखें वन्द कर लीं।

तभी वारवारा की आवाज़ सुनायी दी। वे किसी को धन्यवाद दे रही थीं। वोल्का और ज़ेन्या ने आंखें खोलीं तो देखा—वारवारा के हाथों में फूलों के गुच्छे और कुछ केले थे।

सव-कुछ वदल गया था। केविन में पहुँचकर वोल्का ने पूछा, "मैं तो समझता था तुम वारवारा को मेंढ़की वना दोगे ?"

"नही, अब ऐसी बात नही। मैंने तुम्हारी किताब छिपाकर पढ़ी तो मेरी आँखें खुल गयी। अब मैं तुम्हारी अध्यापिका की बहुत कद्र करता हूँ।"

"लगता है अब ठीक हो गया।" वोल्का और जेन्या ने कहा।

जहाज दुर्घटना

मौसम बहुत अच्छा था। तीन दिन और तीन रात जहाज खुले समुद्र पर तैरता रहा। तीसरे दिन उनका जहाज ऐसी जगह पहुँचा जहाँ इधर-उधर कुछ बर्फ जमा हुआ था।

वोल्का और जेन्या खेल मे मशगूल थे कि होताभ एकदम दौडा हुआ आया और बोला, "जरा चलकर देखो! जहाँ तक नज़र जाती है चीनी-ही-चीनी दिखायी पडती है, उसमे हीरे चमक रहे हैं।" कहकर वह हँसा। होताभ की इस नादानी को हम माफ कर सकते हैं क्योंकि अपनी चार हजार वर्ष की उम्र मे उस बेचारे ने इतनी और ऐसी बर्फ देखी ही नही थी।

जहाज और घर के आरामों मे फ़र्क तो होता ही है। क्रीमिया मे जो भूचाल आया था, तभी ऐसा हुआ था कि लोग सोते-सोते उछल-उछलकर इधर-उधर जा गिरे थे। लेकिन घर मे सोते हुए यह कभी हुआ हो, ऐसा किसी को याद नही था। भूचाल की बात दूसरी थी, वह भी बहुतो को याद नही थी।

तभी एक बहुत जोर से झटका लगा और जहाज के लोग सोते हुए बिस्तरो से उछलकर गिर पडे।

इजन की आवाज भी बन्द हो गयी। लोगो के भागते हुए कदमों और दरवाजो के खुलने की आवाजें सुनायी दी। सब भाग रहे थे, पता नही जहाज को क्या हुआ? ऊपर डेक से कप्तान हुक्म दे रहा था।

वोल्का हालांकि ऊपरवाली बर्थ से गिरा था पर चोट नही आयी थी। वह अभी नींद मे ही था, इसलिए उसे लगा कि वह शायद खुद ही लुढक पडा है। अपनी चोट लगी जगह को सहलाते हुए वह फिर सोने के लिए ऊपर चढ़नेवाला था कि लोगो की परेशान आवाजें सुनायी दी। बाहर आकर उसने देखा तो पता चला कि कोई भयकर दुर्घटना हो गयी है।

वोल्का की विचार-सरिता मे दखल देते हुए होताभ परेशानी से जागता हुआ बोला, "नींद कैसे खुल गयी तुम्हारी?"

"कोई खास बात नही।" वोल्का ने कहा।

हम लोग दक्षिणी-अफ्रीका के बारे में कुछ बहस कर रहे थे।" यह कहकर उसने उस आदमी का परिचय भी दे दिया।

वोल्का को लगा कि अगर होताभ ने फिर अपने भूगोल के ज्ञान का परिचय देना शुरू किया तो लोग हँसी उड़ायेंगे।

"क्यों वोल्का, मैं इनसे कह रहा हूँ कि दक्षिणी अफ्रीका की राजधानी प्रीटोरिया ही है। क्यों, सही है न?"

"हाँ प्रीटोरिया ही है!" वोल्का ने खुशी से कहा। वोल्का और ज़ेन्या दोनों ही अचम्भे में थे कि उसने सही कैसे बता दिया!

"दीखता है तुमने मेरी भूगोल की किताब उड़ा ली है?" वोल्का ने पूछा।

यह कहते-कहते उसका रंग उड़ने लगा क्योंकि पीछे कोई चला आ रहा था। होताभ ने मुड़कर पीछे देखना चाहा तो वोल्का ने कहा, "पीछे देखने की जरूरत नहीं है।"

एक और महिला के साथ बारबारा चली आ रही थीं। वोल्का की अध्यापिका!

होताभ ने उन्हें देख लिया। वह बहुत आहिस्ते-से उनके पास पहुँचा और दाढ़ी से दो बाल तोड़े। तभी वोल्का डर से चीखा, "नहीं होताभ! इनकी कोई गलती नहीं है।"

ज़ेन्या और वोल्का होताभ से लिपट गये और उसे पकड़ लिया। वोल्का भी लिपट पड़ा। होताभ का वह अजनबी दोस्त, जिससे बहस हो रही थी, यह नज़ारा बड़े अचम्भे से देख रहा था।

तभी बारबारा अपने छात्रों को पहचानते हुए बोलीं "यह क्या कर रहे हो तुम लोग। सीधे खड़े हो। सुनते नहीं ज़ेन्या?"

"यह होताभ तुम्हें मेंढ़की में बदल देगा, इसलिए हम लोग इसे पकड़े हैं!" वोल्का चीखा।

उसी के साथ-साथ ज़ेन्या भी चीखा, "आप भाग जाइए···यह छूट गया तो गज़ब हो जायेगा! आप भाग जाइए।"

बारबारा लड़कों पर बिगड़ पड़ीं। इसी बीच होताभ ने अपने को छुड़ाकर फिर बाल तोड़े। लड़कों ने भय से अपनी आँखें बन्द कर लीं।

तभी बारबारा की आवाज़ सुनायी दी। वे किसी को धन्यवाद दे रही थीं। वोल्का और ज़ेन्या ने आँखें खोलीं तो देखा—बारबारा के हाथों में फूलों के गुच्छे और कुछ केले थे।

सब-कुछ बदल गया था। केबिन में पहुँ[illegible] ने पूछा, "मैं तो समझता था तुम बारबारा को मेंढ़की बना दे[illegible]

"नहीं, अब ऐसी बात नहीं। मैंने तुम्हारी किताब छिपाकर पढ़ी तो मेरी आँखें खुल गयीं। अब मैं तुम्हारी अध्यापिका की बहुत कद्र करता हूँ।"

"लगता है अब ठीक हो गया।" वोल्का और जेन्या ने कहा।

जहाज दुर्घटना

मौसम बहुत अच्छा था। तीन दिन और तीन रात जहाज खुले समुद्र पर तैरता रहा। तीसरे दिन उनका जहाज ऐसी जगह पहुँचा जहाँ इधर-उधर कुछ बर्फ जमा हुआ था।

वोल्का और जेन्या खेल में मशगूल थे कि होताब एकदम दौड़ा हुआ आया और बोला, "जरा चलकर देखो! जहाँ तक नजर जाती है चीनी-ही-चीनी दिखायी पड़ती है, उसमें हीरे चमक रहे हैं।" कहकर वह हँसा। होताब की इस नादानी को हम माफ कर सकते हैं क्योंकि अपनी चार हजार वर्ष की उम्र में उस बेचारे ने इतनी और ऐसी बर्फ देखी ही नहीं थी।

जहाज और घर के आरामों में फ़र्क तो होता ही है। क्रीमिया में जो भूचाल आया था, तभी ऐसा हुआ था कि लोग सोते-सोते उछल-उछलकर इधर-उधर जा गिरे थे। लेकिन घर में सोते हुए यह कभी हुआ हो, ऐसा किसी को याद नहीं था। भूचाल की बात दूसरी थी, वह भी बहुतों को याद नहीं थी।

तभी एक बहुत जोर से झटका लगा और जहाज के लोग सोते हुए बिस्तरों से उछलकर गिर पड़े।

इंजन की आवाज भी बन्द हो गयी। लोगों के भागते हुए कदमों और दरवाजों के खुलने की आवाजें सुनायी दीं। सब भाग रहे थे, पता नहीं जहाज को क्या हुआ? ऊपर डेक से कप्तान हुक्म दे रहा था।

वोल्का हालाँकि ऊपरवाली बर्थ से गिरा था पर चोट नहीं आयी थी। वह अभी नींद में ही था, इसलिए उसे लगा कि वह शायद खुद ही लुढ़क पड़ा है। अपनी चोट लगी जगह को सहलाते हुए वह फिर सोने के लिए ऊपर चढ़नेवाला था कि लोगों की परेशान आवाजें सुनायी दीं। बाहर आकर उसने देखा तो पता चला कि कोई भयंकर दुर्घटना हो गयी है।

वोल्का की विचार-सरिता में दखल देते हुए होताब परेशानी से जागता हुआ बोला, "नींद कैसे खुल गयी तुम्हारी?"

"कोई खास बात नहीं।" वोल्का ने कहा।

"नहीं, कुछ तो है। मैंने तो सोचा था कि इंजन की आवाज़ की वजह से तुम्हें नींद नहीं आ रही है सो…"

वोल्का बात काटकर चीखा, "सो, तुमने क्या कर दिया! फौरन बताओ ?"

तभी होताभ बोला, "कुछ खास तो नहीं हुआ…बस मैंने शोर मचानेवाले इंजनों को खामोश कर दिया था।"

"तो तुमने यह तमाशा किया है…लेकिन होताभ इस खामोशी से इंजन नहीं चल सकते। जल्दी से इन्हें ठीक करो नहीं तो बायलर फट जायेंगे!" वोल्का ने कहा।

"अच्छा!" होताभ ने कहा और इंजन चलने लगे। कप्तान और जहाज का मुख्य इंजीनियर—कोई भी यह पता न कर सका कि आखिर इंजनों को हुआ क्या था।

तभी वोल्का ने उसके पास बैठते हुए कहा, "पहले मैं तुमसे ज़रा साफ़-साफ़ बातें कर लूं! पहले यह बताओ कि तुम मुझसे कितने साल बड़े हो?"

"मैंने कभी जोड़ा नहीं, अभी हिसाब लगाकर बताता हूं!"

"मैंने जोड़ा है। तुम मुझसे तीन हजार सात सौ उन्नीस साल बड़े हो। लेकिन जहाँ तक आधुनिक ज़माने की बातों और यान्त्रिक प्रगति के ज्ञान का सवाल है…तुम छोटे बच्चे से भी कम जानते हो! समझे!"

"हाँ, यह बात तो है।"

"इसलिए जब तुम्हारा मन कोई करिश्मा करने के लिए कुलबुलावे तो पहले मुझसे पूछ लिया करो।"

"मैं तुमसे पूछ लिया करूंगा। अगर तुम खाली न हुए, पढ़ते-लिखते हुए तो मैं ज़ेन्या से पूछ लिया करूंगा, ठीक है!"

"कसम खाओ।"

"मैं कसम खाता हूं!" होताभ ने कहा।

प्यारे भाई उमर, सलाम!

रुडोल्फ टापू पर रुकने के बाद जहाज लौट चला। नये अनुभवों से सभी मुसाफिरों के दिमाग भरे हुए थे…खासतौर से सूरज के कारण, क्योंकि वह यहाँ दिन-रात बराबर दिखायी पड़ता था। वोल्का और ज़ेन्या भूगोल की किताबों में पढ़ चुके थे कि उत्तरी ध्रुव के पास ज्यों-ज्यों हम पहुँचते हैं, दिन बहुत लम्बे होते जाते हैं और सर्दियों की रातें भी लम्बी होती हैं—

इतनी कि वहाँ छः महीने का दिन होता है और छः महीने की रात।

वोल्का और ज़ेन्या बहुत खुश थे क्योंकि यह आखिरी टापू था जिस पर उन्हें घूमने का मौका मिला था···और होताभ भी इस बार साथ नहीं था, वह कप्तान के साथ शतरंज खेल रहा था।

तीन घण्टे बाद खूब घूमघामकर दोनों जैसे ही जहाज पर लौटे तो ज़ेन्या ने कहा, "वोल्का! ज़रा भीतर चलो। तुम्हें एक चीज दिखाऊँ—वह देखो!" कहते हुए उसने केबिन का दरवाजा बन्द कर लिया और कोट के नीचे से एक चीज निकाली, "तुम बता सकते हो, यह क्या है? यह चीज मुझे टापू के पश्चिमी किनारे पानी के पास मिली थी! ज़रा खोलकर तो देखूं क्या है इसमें।"

सुराही के ऊपर का ढंकना हटाकर फेंकते ही ज़ेन्या का उत्सुक चेहरा पीला पड़ गया। उसके नीचे रांगे की एक टोपी थी जिस पर मोहर लगी हुई थी। वह मोहर बड़ी मुश्किल से टूटी।

"अब देखें इसमें क्या है?" कहते हुए उसने सुराही उलटी कर दी। अभी उसकी बात खत्म भी नहीं हुई थी कि सुराही से काले धुएँ के बादल निकलने लगे। पूरा केबिन धुएँ से भर गया। दम घुटने-सा लगा। धीरे-धीरे वह धुआँ ठोस होकर एक बूढ़े इन्सान में बदल गया। उस बूढ़े का चेहरा जैसे गुस्से से भरा हुआ था और आँखें अंगारों की तरह दमक रही थीं। उसने घुटने टेककर इतने जोर से फर्श से सिर टिकाया कि चीजें गिर पड़ीं और लगा कि जैसे जहाज ही डगमगा गया हो।

"ऐ अल्लाह के प्यारे बादशाह! मुझे मारना मत!" वह बूढ़ा बोला।

"सुनो तो!" डरे हुए वोल्का ने किसी तरह पूछा, "तुम बादशाह सुलेमान की बात कर रहे हो न! पर वह तो आज से दो हजार नौ सौ उन्नीस बरस पहले मर चुका।"

"क्या बात करते हो बेवकूफ! तुम्हें इस बात की कीमत चुकानी पड़ जायेगी!" वह बूढ़ा बोला।

"मैं सही कह रहा हूँ," वोल्का ने फिर कहा।

"सुराही किसने खोली थी?" बूढ़े ने कहा।

"मैंने!" ज़ेन्या ने कहा।

"तो मरने के लिए तैयार हो जाओ···इसी एक घण्टे में तुम मर जाओगे···इसलिए जो खुशियाँ मनाना चाहते हो मना लो।" बूढ़े ने कहा।

"मैंने तुम्हें बचाया है, कैद से निकाला है और तुम इस तरह की बातें कर रहे हो!" ज़ेन्या बोला।

"बेकार बकवास मत करो! तुम किस तरह मरना चाहोगे?"

"इतना नाराज होने की क्या बात है ?" जेन्या ने सँभलते हुए कहा, "कायदे से बात करो न !"

"कायदा-बेकायदा मैं कुछ भी नहीं जानता। मैं तुमसे पूछता हूं कि तुम किस तरह मरना चाहते हो।" वह बूढ़ा बोला।

"तो···तो···मैं बूढ़ा होकर मरना चाहता हूं ?" जेन्या बोला।

जिन्न बिगड़ उठा, "बूढ़ा होने में तो अभी देर है तुम्हें !"

"ठीक है, तो मैं इन्तजार कर सकता हूं !" जेन्या बोला।

वोल्का देख रहा था—जेन्या जवान हुआ, फिर अधेड़ हुआ, उसके काली दाढ़ी निकल आयी और फौरन ही उसकी दाढ़ी सफेद हो गयी और वह बूढ़ा हो गया।

तभी उमर चीखा—"काश ! मेरा भाई यहाँ होता तो मेरी ताकत देखकर कितना खुश होता !"

"क्यों, तुम्हारे भाई का नाम अब्दुर्रहमान होताभ है न !" वोल्का ने फौरन पूछा।

"तुम्हें कैसे मालूम हुआ ?" उमर बोला।

"अरे बाबा, मुझे मालूम ही नहीं, मैं तुम्हारे भाई को ला भी सकता हूं—वह जिन्दा है। पर तुम्हें जेन्या को छोड़ना पड़ेगा !" वोल्का ने कहा।

"जरूर···जरूर···यह जिन्दा रहेगा। पर मुझे धोखा मत देना।" उमर ने कहा।

"बस एक मिनट रुको ! मैं अभी आया !" कहकर वोल्का एकदम भागता हुआ होताभ के पास पहुंचा। होताभ शतरंज में डूबा हुआ था। वोल्का पहुंचते ही चीखा, "होताभ, फौरन चलो !"

होताभ उठकर चल दिया, केबिन में घुसते ही उसने पूछा—

"यह बूढ़ा आदमी कौन है ?" जो बूढ़ा जमीन पर पड़ा कराह रहा था वह और कोई नहीं, जेन्या ही था, जो अब बूढ़ा बना हुआ पड़ा था। तभी होताभ ने फिर पूछा, "और यह दूसरा बूढ़ा कौन है ?" फिर उसने गौर से उमर को देखा और पहचानते हुए खुशी से चीख पड़ा—"सलाम ! प्यारे उमर !"

"अरे तो तुम हसन अब्दुर्रहमान हो !" उमर भी खुशी से चीखा। दोनों भाई बांहों में गुंथ गये। वोल्का भी इस खुशी में जेन्या की बात ही भूल गया। तभी एक कराह सुनकर उसे ध्यान आया, वह चीखा, "इसे बचाओ, नहीं तो यह मर जायेगा !"

"बचाओ···जल्दी बचाओ !" बूढ़ा जेन्या कराहा। होताभ ने उसे आश्चर्य से देखा और बोला, "यह बूढ़ा जेन्या के बिस्तर पर क्यों पड़ा है ?"

"यह बूढ़ा और कोई नही जेन्या ही है !" वोल्का ने कहा।

कुछ ही क्षण के बाद बड़ा ही अजीब नजारा सामने आया—एक मरता हुआ बूढ़ा तेरह बरस के लड़के में बदल गया था।

पहले उसके धँसे हुए और झुर्रीदार गाल गुलाबी हो गये। फिर उसका गंजा सफेद सिर बालों से भर गया। उसके शरीर में ताकत आ गयी और वह उछलकर उन लोगों के सामने खड़ा हो गया। और जेन्या का असल रूप निकल आया।

और इस तरह जेन्या दुनिया-भर में यह कह सकनेवाला पहला आदमी हो गया—'बहुत पहले जब मैं बुड्ढा था—' ठीक उसी तरह जैसे बुड्ढे कहते हैं—'जब मैं छोटा था···'

उमर की हार

"एक बात मेरी समझ में नहीं आयी," उमर ने सोचते हुए कहा।

"यही कि तुम उत्तरी ध्रुव प्रदेश में कैसे पहुँच गये? यह मैं बता सकता हूँ," वोल्का बोला।

"यह लड़का बड़ी डींग मारता है !" उमर ने फिर नाराजी से कहा, "जो बात मेरे लिए भेद बनी हुई है वह तुम कहाँ से जान जाओगे? खैर··· बताओ, जरा तुम्हारी सूझ देखें !"

"सूझ नहीं, सही बात बताऊँगा···यह गरम पानी की उस धारा के कारण हुआ है, जिसे हम भूगोल में गल्फ स्ट्रीम के नाम से जानते हैं !"

"बकवास है !" उमर ने होताब की ओर मुँह करके अपनी बात का अनुमोदन चाहा।

"न यह गलत है, न बकवास है !" वोल्का ने कुढ़ते हुए कहा, "मैंने भूगोल में गल्फ स्ट्रीम के बारे में पढ़ा है।"

उबासी लेते हुए उमर ने कहा, "खैर होगा···मैं तो तुम्हारी बातों से थक जाता हूँ। मैं थका हुआ हूँ, अब सोऊँगा। एक पत्ता ले लो और जरा मक्खियाँ उड़ाते रहो।"

"क्या बकवास है ?" वोल्का बोला, "इस तरह के अपमानजनक हुक्म कोई मुझसे पूरे नहीं करा सका है, समझे !"

"खैर··· मैं तो करा लूँगा।"

"उमर सुनो तो···" होताब ने बढ़ते हुए झगड़े को ब[illegible] कोशि[illegible] की। लेकिन उमर ने कुछ न सुना।

"मैं मर सकता हूँ लेकिन तुम्हारी झक्कीपने की बात पूरी नहीं करूँगा !" वोल्का ने चीखकर कहा।

"मैं कहता हूँ, अभी मर जाओगे। सूरज डूबते-डूबते मर जाओगे !"

तभी वोल्का के दिमाग में एक विचार कौंध गया। वह चीखा—"अच्छा यह बात है ! तो फौरन मेरे कदमों पर गिर जा !···अब मेरा सब्र जवाब दे चुका है। मैं सूरज को रोक दूंगा ! नहीं डूबेगा सूरज आज, कल भी नहीं डूबेगा, परसों भी नहीं डूबेगा···और उसके बाद भी नहीं डूबने दूंगा !"

वोल्का ने हिम्मत करके अपना पाँसा फेंक ही दिया था। उसे यही डर था कि कहीं होताभ न बता दे कि यहाँ ध्रुव प्रदेश में इन दिनों चौबीसों घण्टे सूरज चमकता है। अगर बता दिया तो सब चौपट हो जायेगा।

जवाब में उमर चीखा—"मेरे सामने लमतरानियाँ मत हाँक !"

"तुम देख लेना ! मैंने कहा है कि सूरज नहीं डूबेगा। सो आज वह नहीं डूबने पायेगा !"

"ठीक है, अगर तुम्हारी बात पूरी उतरी तो मैं तुम्हारा हर हुक्म मानूंगा···नहीं तो तुम्हारी हड्डियाँ भी चबा जाऊँगा। छोकरा जादूगर बन रहा है !" उमर ने हँसते हुए कहा, "सूरज तो डूबेगा ही। आठ-नौ घण्टे में शाम हो जानी चाहिए !"

"ठीक है, मैं इन्तजार करूँगा।"

"हम भी इन्तजार करेंगे।" ज़ेन्या और होताभ ने कहा।

उमर ज़ेन्या के साथ बड़ी देर तक ताश खेलता रहा। उसे पता भी नहीं था कि वोल्का बोला, "नौ घण्टे बीत गये उमर !"

"यह नामुमकिन है !" उमर ने यह कहते हुए पानी-घड़ी पर नजर डाली तो पीला पड़ गया। दौड़कर उसने बाहर देखा—सूरज वैसा ही चमक रहा था जैसा कि आठ घण्टे पहले था।

"हिसाब में कुछ गलती हो गयी है।" उमर बोला, "दो घण्टे और देख लें !"

"दो नहीं, तीन घण्टे और देख लो ! लेकिन कुछ होगा नहीं। मैंने कह दिया है—सूरज न आज डूबेगा, न कल और न परसों और न उसके अगले दिन।"

और करीब साढ़े चार घण्टे बाद उमर ने बाहर निकलकर बीसवीं बार झाँका। सूरज जहाँ-का-तहाँ था।

"मुझे माफ कर दो !" घिघियाता हुआ उमर बोला, "मैं तुम्हार गुलाम हूँ ! मुझे नहीं मालूम था कि तुम मुझसे ज्यादा ताकतवर हो।"

"होताम, तुम्हारा भाई भी तमाशा ही है···यह बड़ा बेहूदा है।"

उमर घुटने टेककर वोल्का के हाथ चूमने लगा तो वोल्का ने कहा, "सीधे खड़े हो भाई!"

"तुम्हारा क्या हुक्म है··· जो भी हो मुझे बताओ!" उमर बोला।

"हुक्म यह है कि तुम इस केबिन से एक पल के लिए भी बाहर नहीं जाओगे," वोल्का ने कहा।

उमर डर से घबरा चुका था। वह केबिन में ही घुसा रहा। जब 'लडोगा' जहाज वापस बन्दरगाह पर जा लगा तो उमर ताँबेवाली सुराही में घुस गया था। वोल्का के हुक्म के कारण वह उसी में घुसा रहा। जहाज से उतरते वक्त वोल्का ने वह सुराही बगल में दबा ली थी। इस तरह उमर उनके साथ आ गया।

वोल्का ने घर आकर सबको यात्रा का वर्णन सुनाया और सुराही एक ओर रखकर भूल गया। दूसरे दिन दादी ने सुराही देखी, उन्होंने उठा ली। उनके हाथ में वह सुराही देखकर वोल्का के पिताजी ने पूछा, "यह क्या है माँ, कहाँ से लायी हो?"

"यह वोल्का लाया है। यहाँ रखकर भूल गया था। इसे धो-माँजकर काम में ले आऊँगी···" दादी ने कहा। तभी वोल्का की नजर उस पर पड़ी तो हिम्मत छूट गयी। दादी के हाथ से सुराही छीन ली और बात बनाकर बोला, "यह किसी दूसरे की है···मुझे उसके घर पहुँचानी है।"

"जल्दी लौटना!" माँ ने आवाज लगायी लेकिन तब तक वोल्का नजरों से ओझल हो चुका था।

काली नलियोंवाली चीज

झेन्या और होताभ नदी के किनारे वोल्का का काफी देर से इन्तजार कर रहे थे। चारों तरफ खामोशी थी। खुला आसमान ऊपर फैला था। पूर्णमासी का चन्द्रमा चाँदनी छिटका रहा था।

झेन्या दूरबीन से चन्द्रमा को देख रहा था।

तभी वोल्का आया और बोला, "नक्षत्रों का पढ़ना बन्द करो···अब हम उमर को आजाद करने जा रहे हैं!"

झेन्या उमर से नाराज ही था सो वह दूरबीन लगाये आसमान में नक्षत्रों को देखता रहा। वोल्का ने उमर को निकाल दिया और खुद भी दूरबीन से आसमान को देखने लगा। तभी पीछे से उमर ने पूछा, "ये जो

काली नलियाँ तुम लोग आँखों से चिपकाये हुए हो, इनसे क्या होता है ?"

"ये दूरबीनें हैं। इनसे दूर की चीज पास दिखायी देती है, बड़ी भी दिखायी देती है। ज़ेन्या चन्द्रमा को देख रहा है," वोल्का ने समझाकर बताया।

"यह तो अच्छा खेल है।" उमर बोला। उसने ज़ेन्या की दूरबीन से झाँककर देखने की कोशिश की पर ज़ेन्या ने दूरबीन हटा ली। उमर को बुरा लगा, लेकिन वोल्का पास खड़ा था इसलिए वह डर के मारे कुछ कह नहीं पाया। आखिर उसने ज़ेन्या से दूरबीन माँगकर ही चन्द्रमा की ओर देखा।

उमर ने देखा तो बोला, "इस खुदाई चाँद के बारे में मैं कुछ और ही सोचता था···इस पर तो चेचक के दाग जैसे हैं ! और किनारी कटी-फटी है···गरीब आदमी की थाली की तरह। और सितारे छोटे जरूर हैं पर चाँद से ज्यादा अच्छे हैं।"

होताभ ने उसके हाथ से दूरबीन लेकर देखा, "भई, इस बार उमर ठीक बात कह रहा है।"

"अज्ञान की बात करता है उमर !" ज़ेन्या बोला, "सितारे चन्द्रमा से कई हजार गुना बड़े हैं···यह उमर उन्हें छोटा बताता है।"

वोल्का ने उसे नक्षत्र-विद्या के बारे में बहुत-सी नयी बातें बतायीं पर उमर का मन नहीं जम रहा था। बीच में ही बोला, "भई, जब तक मैं देख न लूँ तब तक तुम्हारी बात पर मुझे यकीन नहीं होता।"

"यकीन नहीं होता ?" वोल्का ने आश्चर्य से पूछा, "नहीं होता तो एक ही तरीका है···तुम खुद चन्द्रमा तक उड़कर जाओ और देख आओ···मैं कहता हूँ कि चन्द्रमा एक पिण्ड है, तश्तरी की तरह नहीं। देख आओ तो यकीन आ जायेगा।"

"तो मैं चला जाता हूँ···अगर चाहूँ तो मैं अभी उड़ सकता हूँ," उमर बोला।

"चन्द्रमा यहाँ से लाखों मील दूर है और चन्द्रमा तक का रास्ता बाहरी आकाश से होकर है···वहाँ साँस लेने के लिए हवा तक नहीं है !" वोल्का ने बताया।

"मैं बगैर साँस लिये भी जिन्दा रह सकता हूँ।" उमर बोला।

"इसे जाने ही दो, रोज-रोज की मुसीबत कटेगी। "ज़ेन्या ने वोल्का के कान में फुसफुसाकर कहा। लेकिन वोल्का ने उसे सबकुछ समझा देना उचित समझा। बोला, "वहाँ बेहद सर्दी पड़ती है। और तुम्हें कम-से-कम ग्यारह किलोमीटर प्रति सैकिण्ड की रफ्तार से चलना होगा, तभी पहुँच

पाओगे।" उसने बताया।

और तभी उमर सन्नाटे के साथ ऊपर उड़ गया। कुछ देर में ही वह गायब हो गया।

"हम यहीं इन्तजार करें!" होताब ने सुझाया।

"मैं जो कुछ बता रहा था वह वैज्ञानिक ज्ञान की बातें थीं। उसने सुनी ही नहीं, अब वह कभी धरती पर नहीं लौटेगा। वह ग्यारह किलोमीटर प्रति सैकिण्ड से कम की रफ्तार पर गया है, इसलिए अब पृथ्वी के चारों ओर चक्कर काटता रह जायेगा···वह लौटेगा नहीं, तुम जानना ही चाहते हो तो बताये देता हूँ—वह स्पूतनिक बन गया।" वोल्का ने कहा।

नये साल का सफर

सर्दी की छुट्टियों में ज़ेन्या अपने रिश्तेदारों के यहाँ चला गया। 4 जनवरी को उसे एक खत मिला···वह बहुत ही मजेदार खत था। तीन खास बातें उसमें थीं।

पहली तो यह कि पते पर उसका पूरा नाम लिखा गया था, जैसे बड़े आदमियों का लिखा जाता है। दूसरे यह कि खत होताब ने लिखा था और तीसरी बात, उस खत का मजेदार मजमून था।

लिखा था—

"मेरे प्यारे और कीमती दोस्त! सब स्कूलों और खेलों के सिरताज! कला और विज्ञान की अकेली उम्मीद। माँ-बाप और दोस्तों को खुशियाँ देनेवाले ज़ेन्या! जो कि मशहूर और मारूफ़ खानदान का लड़का है···मेरी दुआ है कि तुम्हारी जिन्दगी का रास्ता गुलाब के फूलों से ढँक जाय···तुम्हें सब खुशियाँ हासिल हों···तुम्हारे शागिर्द हसन-अब्दुर्रहमान होताब की यही ख्वाहिश है!

"आज से छह माह पहले मेरा दिल खुशी और तुम्हारी भलमनसाहत की वजह से छलका पड़ता था, क्योंकि तुमने मेरे बदनसीब भाई उमर आसफ इब्न होताब को जिन्दगी बख्शी थी। जिससे मैं कई सदियों से जुदा था और उसी जुदाई के गम में तड़पता था। उस ताँबे की सुराही से तुम्हीं ने रहम करके उसे आजाद किया था।

"मुझे सख्त अफसोस है कि मेरा भाई उमर तुम लोगों की भलाई के बदले में पूरा न उतरा। कुन्द नजर और छोटे दिलो-दिमाग का आदमी साबित हुआ। वह अपनी उसी जिद में चाँद तक उड़ान भरने चला गया।

क्योंकि उसने तुम्हारी बातों पर यकीन नहीं किया था। प्यारे दोस्त पोल्का ने जो कुछ भी विज्ञान की मदद से उसे बताया था, उसने नहीं माना।

"मुझे अफसोस यही है कि मेरा भाई उमर इल्म की सच्ची तलाश में नहीं बल्कि जिद पूरी करने के लिए निकल पड़ा। यह दुनिया की भेद-भरी बातों की खोज करता, यह भी उसने नहीं किया, वह सिर्फ तुम्हें और पोल्का को शर्मिन्दा करने की नीयत से गया है ताकि वह अपनी ताकत का डंका पीट सके और तुम लोगों को छोटा साबित कर सके। उसने तुम्हारी और पोल्का की सीख पर कान भी नहीं दिया।

"अभी तीन दिन पहले मुझे तुम्हारी एक खबर मिली, उस खबर का वैज्ञानिक नाम है 'तार'! उस तार में तुमने मुझे नये साल के लिए मुबारकबाद भेजा है। यह मुबारकबाद पढ़कर मुझे अपने उस बदकिस्मत भाई की याद आयी···कि वह अब भी चक्कर काट रहा होगा और उसे नये साल का मुबारक देनेवाला कोई नहीं होगा। इसलिए मैं खुद फौरन सफर के लिए तैयार हुआ कि मैं उस बाहरी हिस्से में जाऊँ और अपने भाई को मुबारक दे आऊँ। और मुमकिन हो तो उसे वापस ले आऊँ!

"मेरे जाने की दास्तान भी सुन लो! पहले मैं उसी रफ्तार से उड़ा जिससे उमर उड़ा था। मैं जमीन के एक सैटेलाइट में बदल गया। जब वापसी का वक्त आया तो मैंने पूरी रफ्तार पकड़ी जो कि लौटने के लिए जरूरी थी। हिसाब, ज्योतिष और विज्ञान के सहारे मैंने जो कुछ आँकड़े जमा किये और जो बातें तय की हैं, वे मैं तुम्हें दिखाऊँगा। मैं तुम्हारा और पोल्का—दोनों का बहुत शुक्र गुजार रहा हूँ कि तुम लोगों ने मुझे पढ़ना सिखा दिया।···लेकिन मैं तो अपने भाई से मिलने गया था···"

यहाँ पर खत की स्याही कुछ फैली हुई थी। लगता था कि होताभ यहाँ पर रोया था और आँसुओं से स्याही फैल गयी थी। उसने आगे लिखा था—

"जमीन छोड़ने के बाद मैं एक ऐसे हिस्से में पहुँचा जहाँ गहरा अँधेरा था। सर्दी भी कड़ाके की थी। बर्फीले अँधेरे में सितारे चमक रहे थे और सूरज की पीली थाली से आँखें चौंधियाने लगीं।

"मैं आगे उड़ता चला गया···चारों तरफ खामोशी थी, सर्दी थी और अँधेरा था। मैं हिम्मत छोड़ चुका था तभी मखमली काले आसमान पर एक दुबला-पतला-सा आदमी दीखा जो सूरज की चमक से जगमगा रहा था। वह मेरी तरफ खौफनाक रफ्तार से आ रहा था और उसकी दाढ़ी पुच्छल तारे की तरह लग रही थी···मैंने पहचान लिया कि यही मेरा भाई

उमर है !

"'सलाम उमर !' मैं चीखा, वह मेरे पास आ गया था, मैंने पूछा, 'सेहत कैसी है ?'

"'अच्छी ही है।' उमर ने झिझकते हुए जवाब दिया, फिर वह बोला, 'देख तो रहे हो'''मैं दुनिया के चक्कर काट रहा हूँ।' कहते हुए उसने अपने ओठ काट लिये और पूछने लगा, 'तुम क्या चाहते हो ? जल्दी बताओ, मुझे बहुत काम है !'

"'तुम्हारे लिये यहाँ कौन-सा काम है ?' मैंने पूछा।

"'यहाँ कौन-सा काम है ?' वह बोला, 'तुमने सुना नहीं, मैंने कहा था कि स्पूतनिक बन गया हूँ ! मैं पागलों की तरह एक पल भी रुके दिन-रात घूमता रहता हूँ। यही काम है।'

"'बदकिस्मती है उमर।' मैंने उससे कहा, 'यहाँ इस कभी न खत्म होनेवाली सर्दी और अँधेरे में तुम्हारी जिन्दगी बिलकुल बेकार हो गयी है'''तुम अब एक जिन्दा आदमी की तरह भी नहीं रह गये हो !''''तभी उमर ने कहा—'मेरे लिये अफसोस मत करो'''चारों तरफ आँख पसार-कर देखो''' सूरज और चाँद—दोनों की रोशनी मुझ पर पड़ती है। मैं सूरज और चाँद से भी बड़ा हूँ। करोड़ों सितारे मुझसे बड़े नहीं हो सकते। अगर तुम चाहो तो तुम मेरे स्पूतनिक बन जाओ। हम साथ-साथ घूमा करेंगे। तब तुम सबसे बड़े उपग्रह बन जाओगे।'

"मैं तो उससे पिण्ड छुड़ाकर जमीन पर लौट आया और तुम्हें खत लिखने लगा।

"हाँ, एक बात और'''गोर्की स्ट्रीट पर मैंने एक दूकान में रेडियो भी देखा'''वह नौ वल्वों का है और बहुत ही खूबसूरत है। उसकी खासियतें बयान नहीं की जा सकतीं ?'''

और अन्त में

मास्को में राजिन स्ट्रीट पर एक दफ्तर है—'उत्तरी समुद्र मार्ग का केन्द्रीय दफ्तर'। वहाँ दर्जनों आदमी खड़े रहते हैं जो अपनी अर्जी लेकर आते हैं। वे सब उत्तरी ध्रुव प्रदेशों में काम करने के लिए जाना चाहते हैं। उसी भीड़ में एक साहब नजर आते हैं—वे गुलाबी कामदार जूते पहनते हैं। जूतों पर चाँदी और सोने के तारों की कढ़ाई है। यह और कोई नहीं—होताभ ही है ! उसने बहुत कोशिश की कि उत्तरी ध्रुव प्रदेश के किसी स्टेशन पर

रेडियो-आपरेटर का काम मिल जाये'''पर नहीं मिला।

आप अगर इस सच्ची कहानी को पढ़ चुके हैं तो इस दफ्तर पर जाकर यह सब देख सकते हैं।

होताभ को काम नहीं मिला। उसकी वजह है उनकी दाढ़ी! असल में यही लम्बी सफेद दाढ़ी उनके आड़े आ जाती है। ध्रुव प्रदेश में मौसम वगैरह इतना खराब रहता है कि कोई उन्हें बुढ़ापे की वजह से नहीं चुनता। लेकिन वह बार-बार अर्जी का फार्म भरता है— उसका कुछ नमूना भी देख लीजिए :

नाम : हसन अब्दुर्रहमान-इब्न-होताभ

पेशा : काम-काजी जिन्न

उम्र : 3,732 साल 5 महीने

परिवार : अनाथ, अकेला। सिर्फ एक भाई है, जिसका नाम उमर है। वह जुलाई में ध्रुव प्रदेश के पास एक तांबे की सुराही में रहता था लेकिन अब वह धरती पर स्पूतनिक बना हुआ है और बराबर चक्कर काटने का काम करता है।

शिक्षा : प्राइवेट

स्कूल : नदी का किनारा। वहां पर वोल्का और जेन्या नाम के सातवें दर्जे के दो छात्र पढ़ाया करते थे।

इसी तरह की बातें वह अर्जी में भरता है। उसकी अर्जी पढ़कर व्यवस्थापक को लगता है कि होताभ शायद सनकी है। पर हमारी इस कहानी के पाठक जानते हैं कि होताभ ने जो कुछ भी फार्म पर लिखा है वह एकदम सही है।

बहरहाल, होताभ के लिए यह बायें हाथ का खेल है कि वह नौजवान बन जाये और ठीक-ठीक फार्म भर दे। वह करिश्मा भी दिखा सकता है। ऐसा मन्त्र फूंक सकता है कि व्यवस्थापक उसे फौरन चुन ले, जैसा कि उसने 'लडोगा' जहाज पर जाने के लिए किया था। लेकिन होताभ ने यह तय किया है कि ध्रुव प्रदेश में काम पाने के लिए वह चारसौबीसी नहीं करेगा, बल्कि ईमानदारी से पेश आयेगा।

अब उसने कुछ दिनों से इधर-उधर जाना कम कर दिया है। वह रेडियो यन्त्र कला पढ़ने में मशगूल है। क्योंकि वह अपना रेडियो बनाना चाहता है। अब सच पूछिए तो उसे अच्छे अध्यापकों की जरूरत है। होताभ

चाहता है कि वोल्का और झेन्या ही उसके अध्यापक रहें। वे उसे वही पढ़ा सकते हैं जो कि वे रोज पढ़कर आते हैं। होताब ने सोचा कि यह भी बुरा तो नहीं है। उन्होंने यह तय किया है कि होताब उनके साथ-साथ पढ़ेगा और माध्यमिक परीक्षा पास करेगा। लेकिन यहीं आकर उनके रास्ते अलग होते हैं—शायद आपको याद हो—झेन्या ने बहुत पहले डाक्टर बनने की बात तय की थी। वोल्का और होताब की रुचि एक-सी ही है, वह भी रेडियो इंजीनियर ही बनना चाहता है। हमें उम्मीद है कि वह इस कठिन क्षेत्र में भी अपना रास्ता जरूर बना लेगा।

अच्छा, तो अब इस कहानी के पात्रों को विदा दें! होताब, वोल्का और झेन्या—तीनों दोस्तों के सौभाग्य, स्वास्थ्य और उज्ज्वल भविष्य की हम कामना करते हैं। अगर आपको इनमें से कोई कभी मिले तो इस लेखक का— जिसने उन्हें इतने प्यार और कोमलता से गढ़ा था, नमस्कार जरूर कह दें।